लोकप्रिय उपन्यासकार शेखर

शिकायत

शिकायत

दूर तक फैला श्मशान। अंधेरा, बारिश···
और यह मोमबत्ती जलाए घुटने टेककर इस अंधेरी
रात में कौन है जो प्रार्थना कर रहा है? आश्चर्य!
और इसी आश्चर्य में से उभरती है अचला—
एक ठगी हुई सुकुमार युवती—
सरमा, एक और कोमलांगी
जिसे विरह की नागिन ने डस लिया।
भावनाओं और आदर्शों के अविश्वसनीय
क्षणों में घटनेवाली 'शिकायत' की कहानी
एक ऐसे अछूते रोमांस की कथा है
जो हर पल पाठक के मन-मानस को झकझोर जाती है।
लाखों पाठकों के प्रिय रोमांटिक-सामाजिक उपन्यासकार
शेखर की एक नई प्रणय-कथा जो
आरम्भ से अन्त तक रोचक, मार्मिक
और हर दृष्टि से अभिनव बन पड़ी है।

विश्वास-अविश्वास की पतली डोर पर झूलती
दो प्रणयी युगलों की हृदयस्पर्शी रोमांटिक कथा

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

लोकप्रिय उपन्यासकार शेखर

शिकायत

शिकायत

मकान बहुत अच्छा है। एक तरह का छोटा-सा बंगला। हर मामले में स्वतंत्र अस्तित्व। आगे-पीछे खुली धरती। सामने की तरफ लॉन। बाउंड्री से लगी फूलों की क्यारियां। चारों तरफ खुलापन। कहते हैं, बहुत पहले किसी अंग्रेज़ अफसर ने अपने लिए बनवाया था। अंग्रेज़ गया, बंगला छोड़ गया। तब से अब तक सरकारी अस्पताल के डाक्टर ही इसमें रहते आए हैं। इस बार आए हैं डाक्टर घोष।

डाक्टर घोष के पास सामान बहुत था। तबादले पर सारा फर्नीचर औने-पौने दामों पर बेच आए, फिर भी इतना सामान निकला कि दो ट्रक लगे। सारे दिन सामान उतारा जाता रहा। जमने में कई दिन लगेंगे। यह बात आस-पड़ोस वालों ने ही नहीं सोची, डाक्टर घोष और उनकी पत्नी ने भी सोची थी। बहुत थक गए थे। बिखरे हुए सामान में से सिर्फ बिस्तरे निकालकर खोल लिए। थोड़ा-बहुत रसोई का सामान भी ढूंढ़-ढांढ़कर बाहर निकाला। श्रीमती घोष ने कॉफी बनाई। दोनों ने पी और मकान की तरह-तरह से तारीफ करते रहे।

सब कुछ ठीक था। बस एक दोष। मकान की दाईं ओर श्मशान। यह एक ऐसी अशांति कि घोष-दम्पती की जगह और कोई होता तो इस मकान को कभी पसन्द न करता। पर घोष-दम्पती साइन्स के आदमी हैं। जीना-मरना बहुत करीब से देखते-देखते बरसों गुज़र गए। अब डर नहीं लगता। श्रीमती घोष कई अस्पतालों में डाक्टर घोष के साथ रही हैं। रोज़ मौतें देखती रही हैं। बुरी से बुरी मौतें। मौतों का अजीबोगरीब इतिहास। शुरू-शुरू

में भय लगता था। पर बीत गए वे दिन। दिन बीत गए इसलिए मन मज़बूत हो गया। दोनों ने ही एक-दूसरे को देखा था, फिर श्रीमती घोष बोली थीं, "अब पड़ोस में श्मशान है तो क्या किया जाए! होने दो। यह कोई दोष नहीं है।"

डाक्टर घोष ने भी कह दिया, "ठीक कहती हो। जहां जीवन होगा, वहां मौत भी होगी। इसलिए श्मशान का होना, न होना अर्थहीन।"

बात आई-गई हो गई। दूसरे दिन की योजना बनाने लगे थे। कौन-सा सामान किस कमरे में 'एडजस्ट' हो जाएगा, परदे कहां लगेंगे, चिकें कहां पड़ेंगी आदि।

पर दोनों ही बहुत थके हुए थे। न थकनेवाली उम्र भी नहीं रही। पचास पार किए हुए हैं दोनों। उम्मीद है कि इसी जगह से रिटायर हो लेंगे। पुरानी जगह पर ही अगर सरकार ने दो साल का सब्र कर लिया होता, तो वहीं से रिटायर हो जाते। खैर, यहां से सही। भाग्य में जितना भोगना लिखा होता है और पांव में जितना चक्र होता है, पूरा होकर ही रहता है। इससे परेशान होने की ज़रूरत नहीं।

रिटायर होते-होते बेटा काम लायक हो जाएगा। सरकार में डाक्टर घोष के मंजिल-दर-मंज़िल परिचय हैं। किसी भी जगह कह-सुनकर चिपका देंगे। फिलहाल इंजीनियरिंग का आखिरी साल पार कर रहा है। रुड़की के होस्टल में है। और कोई वज़न घोष-दम्पती पर नहीं है। चिन्ता भी नहीं। अब तो लगता है कि यह भी बहुत वज़न नहीं है और चिन्ता की कोई बात नहीं रही है।

बहुत निश्चिन्त। सोने में देर नहीं होगी। सो भी जाते, पर घोष साहब को याद आया कि नया मकान है। नई जगह। दरवाज़े देख-भालकर बन्द कर लिए जाएं। उठ पड़े। श्रीमती घोष ने कारण पूछा। पति ने बता दिया। फिर हर कमरे में जाकर दरवाज़े-खिड़कियों की सिटकनी देखी-परखीं। ठीक है। ठीक तरह लगी हुई हैं। दुश्चिन्ता का कारण नहीं। ड्राइंग-रूम की एक खिड़की जाम-सी हो गई थी। डाक्टर घोष ने उसे खोला। खोलकर बन्द करेंगे, तब सैट होगी। पर बन्द नहीं कर सके। खिड़की के बाहर श्मशान के दृश्य ने उन्हें रोक लिया। भय या चिन्ता जैसी बात नहीं थी, पर उत्सुकता ज़रूर हुई। देखने लगे।

दूर तक फैला श्मशान। अंधेरे में डूबा हुआ। टीन-शेड भी लगे हैं। बारिश में मुरदों के जलाने की खास व्यवस्था है। पर इस अंधेरे में कुछ भी नहीं दीख रहा है। दीख रहे हैं सिर्फ दो आदमी—धीमे-धीमे उन्हींके बंगले की तरफ आते हुए, पर हैं श्मशान के हिस्से में ही। दीख इसलिए रहे हैं कि उनमें से एक ने टॉर्च जला रखी है। टॉर्च की रोशनी ने उन्हें और उनके आगे के कुछ रास्ते को उजाले से भर दिया है।

कुल मिलाकर डाक्टर घोष को वह दृश्य जासूसी उपन्यास के किसी सफे-सा लगा। ठंड के दिन हैं। दोनों ने ही ओवरकोट पहन रखे हैं। सभ्रांत-से लग रहे हैं। चेहरा और उम्र एकाएक समझ में नहीं आते। टॉर्च की रोशनी ने उन्हें सिर्फ सीने तक उजागर कर रखा है।

श्रीमती घोष ने भीतरवाले कमरे से आवाज़ दी थी, "क्या करने लगे?"

डाक्टर घोष चौंके। ठीक ही तो है। व्यर्थ उस दृश्य में उलझ गए हैं। जाकर सोना चाहिए। होंगे कोई। बेकार सिर खपाने से लाभ? खिड़की बन्द करने के लिए हाथों ने हरकत की, पर फिर से थमे रह गए। दोनों व्यक्तियों में से एक श्मशान की धरती पर घुटनों के बल बैठ गया था। बैठकर उसने जेब से मोमबत्ती निकाली, जलाई और धरती पर चिपकाने की कोशिश करने लगा।

डाक्टर घोष फिर उलझ गए। ऐसा क्यों? दूसरा उनके बंगले की बाउंड्री से सटकर खड़ा हो रहा। उसने एक सिगरेट सुलगा ली थी। ठंड जोर की। सब तरफ खामोशी। अजीब लोग हैं! डाक्टर घोष ने सोचा।

श्रीमती घोष बड़बड़ाने लगी थीं, "अब सोओगे भी या नहीं?"

डाक्टर घोष को लगा कि मूर्खता कर रहे हैं। खिड़की बन्द की। लौट आए बिस्तरे पर। पर दृश्य से नहीं लौट सके। अंधेरा कर लेने और पलकें मूंद लेने के बावजूद नींद गायब। नींद की जगह एक मोमबत्ती—श्मशान की धरती पर जलती हुई। उसीके करीब झुका बैठा एक आदमी। चुप। उसका सिर सन की तरह सफेद बालों से भरा हुआ। मोमबत्ती जलाते समय डाक्टर घोष ने थोड़ी-सी रोशनी में उसके हाथ भी देख लिए थे। चमड़ी सिकुड़ी हुई थी। वृद्ध है। पूरी तरह नहीं तो लगभग वृद्ध।

और दूसरा ?

उसके बारे में कुछ मालूम नहीं। बस, इतना मालूम है कि उनके मकान की बाउंड्री से टिका खड़ा सिगरेट धौंक रहा है।

श्रीमती घोष के नथुनों से चक्की दरदराने जैसी आवाज़ निकलने लगी है। शायद सो गईं। डाक्टर घोष को भी सो जाना था। पर सो नहीं पाएंगे। अपने-आपसे बेकाबू जो हो उठे हैं। देखना चाहिए। वे गए या नहीं ? शायद जा चुके होंगे। बिस्तरे पर करवटें लेते-बदलते एक घण्टा से अधिक बीत चुका है। वे दोनों किसीकी स्मृति में आए होंगे। अब तक रुके रहने का कोई कारण नहीं।

पर बिना देखे कैसे मालूम हो कि गए या नहीं ? डाक्टर घोष उठ पड़े। लिहाफ इस सफाई से सरकाकर बाहर आए थे कि श्रीमती घोष जाग न पड़ें। जाग गईं तो फौरन कुड़कुड़ाने लगेंगी। कुड़-कुड़ाना उनका स्वभाव है। बरसों से डाक्टर घोष सह रहे हैं। दस-बीस साल और सही।

दबे कदमों सामान से बचते-खुचते हुए ड्राइंग-रूम में आए। वहीं खिड़की खोलकर देखेंगे। हौले से ही खिड़की खोली और स्तब्ध रह गए। दोनों बिलकुल उसी तरह मौजूद हैं, जैसे थोड़ी देर पहले डाक्टर घोष छोड़ गए थे। नई बात है तो सिर्फ यह कि मोमबत्ती खत्म होने पर आ गई है।

अजीब पागल हैं ! डाक्टर घोष ने झल्लाहट के साथ सोचा। क्या सारी रात इसी पोज़ में बिता देंगे ? डाक्टर को लगा कि दिमागी गड़बड़ी के शिकार हैं दोनों। पर दोनों एकसाथ, एक मिली-जुली और अजीब-सी हरकत करें--यह अस्वाभाविक लगा उन्हें। अन-चाहे ही बोल गए थे, "ऐ, भाई साहब !"

मोमबत्तीवाले ने सुना ही नहीं, पर घोष साहब दूसरी आवाज़ कसें, इसके पहले ही बाउंड्री से टिका दूसरा आदमी उनके पास आ पहुंचा। मुंह पर अंगुली रखकर चुप रहने का संकेत करते हुए कहने लगा, "शि···श्शि···ई···"

डाक्टर चकित। कमाल के पागल ! पर डाक्टर घोष जल्दबाज़ी में कोई गलती नहीं करेंगे। देख रहे हैं कि आया हुआ आदमी भी बुज़ुर्ग-सा है। खिचड़ी बाल, पर प्रभावशाला व्यक्तित्व। साधारण आदमी नहीं है।

तभी वह बोल उठा था, फुसफुसाता हुआ, "कृपा करके कुछ

कहिएगा नहीं। वह बेकाबू हो उठेंगे।" उसके स्वर में अनुनय थी।

"जी ?" डाक्टर घोष ने उसी तरह दबी आवाज़ में विस्मय प्रकट किया।

"जी हां।"

"पर···" डाक्टर घोष पूछते-पूछते रुक गए। उस व्यक्ति ने फिर से मंह पर अंगुली टिका ली थी। उन दोनों ने देखा कि झुका हुआ आदमी दूसरी मोमबत्ती निकालकर जलाने लगा है।

"बहुत ठंड है।" ओवरकोट वाला आदमी बोला।

"हां, बहुत ठंड है।" डाक्टर घोष ने कहा, फिर लगा जैसे कुछ घबरा उठे हैं वह। पर उन्हें क्यों घबराना चाहिए? अपने-आपको संयत करने की कोशिश करने लगे। श्मशान का सन्नाटा ज़्यादा ही गहरा हो गया था। ठंड भी गहरी। दूसरी मोमबत्ती कभी-कभी हवा के हल्के झोंके से लड़खड़ा उठती। झुका हुआ आदमी उस लौ को बचाने के लिए अपनी हथेली की ओट देता। डाक्टर घोष परेशान होने लगे थे। पूछ बैठे, "क्या आप लोग सारी रात···"

"शायद !" उनके पास पर खिड़की के बाहर खड़े आदमी ने उत्तर दे दिया।

"ऐसा क्यों ?" डाक्टर घोष ने अनधिकार ही पूछा।

उसने जवाब में सिर्फ निःश्वास लिया।

"कहां रहते हैं आप ?" डाक्टर पूछने लगे थे।

"यहीं। इसी शहर में।" शायद इस प्रश्न को उसने उत्तर देने योग्य जानकर उत्तर दिया।

"तब आइए, आप लोग इस कमरे में बैठिए।" डाक्टर घोष अनजाने ही कह गए। फिर लगा कि मूर्खता की है। अपरिचितों को इतनी रात गए घर में घुसा लेना समझदारी तो नहीं। और वे हैं इस शहर में नये आदमी। इन दोनों को जानते नहीं कि कौन हैं, कहां के हैं, किसलिए यहां आए हैं। मालूम नहीं क्या इरादा हो ?

पर उस व्यक्ति ने स्वयं ही इनकार कर दिया, "आपकी कृपा है। इतना कष्ट न करें। मैं यहीं ठीक हूं।"

डाक्टर घोष को लगा कि गलत आदमी नहीं हैं वे लोग। ठंड से भीगे झोंके ने उनके बदन के रोम दहला दिए। उन्हें अनुभव हुआ जैसे मानवीय कर्तव्य से विमुख हो रहे हैं। यह आदमी साफ-साफ कह चुका है कि सारी रात इसी तरह बीतेगी। क्यों बीतेगी—

डाक्टर नहीं जानते, फिर भी यह अच्छी तरह समझ सकते हैं कि सरदी की रात में उन्हें इस तरह खुले में छोड़ देना गलत है। दया आ गई थी उन्हें। शिष्टता के साथ दोबारा प्रार्थना की, "आ जाइए। बैठिए। इसी कमरे में बैठिए। चाहें तो यहां से आप बाहर भी देख सकते हैं। खिड़की खुली रहने दीजिएगा। कुछ तो ठंड बचेगी !"

वह व्यक्ति कुछ नहीं बोला।

"आइए ना !" डाक्टर ने कहा। जाने कैसे उनके प्रति वह इतने दयालु हो उठे हैं, स्वयं वही नहीं जानते।

उस व्यक्ति ने कहा, "मैं आ सकता हूं, पर वह नहीं आएंगे।"

"क्यों ?"

"यह न पूछिए।"

तब ठीक है। आप ही आ जाइए।" डॉक्टर घोष ने कहा और दरवाज़ा खोल आए। वह व्यक्ति सिगरेट फेंककर चक्कर लेता हुआ कमरे में आ गया। डाक्टर घोष ने लाइट ऑन की। कमरे में सामान बिखरा हुआ था। आगंतुक ने देखा, फिर डाक्टर घोष की ओर दृष्टि उठाई। वह उसे ही देख रहे थे। समझ गए थे कि ऐरा-गैरा नहीं है। उसे अपनी ओर देखते पाकर फौरन कहा, "मेरा नाम घोष है। यहां नया सिविल सर्जन होकर आया हूं।"

अजनबी मुसकराया। डाक्टर घोष की ओर हाथ बढ़ाकर कहा, "माई सैल्फ मेजर वर्मा।"

"खुशी हुई आपसे मिलकर।" डाक्टर घोष ने कुर्सी दी। अच्छा हुआ कि अस्पताल से दोपहर को ही चार कुर्सियां मंगवा ली थीं। यह सोचकर कि नया फर्नीचर खरीदने तक किसीके आने-जाने पर बैठने के काम आएंगी। आज ही आ गई हैं काम। न मंगवाई होतीं तो मेजर को कहां बिठालते ?

मेजर ने निश्चिन्तता से बैठकर सिगरेट-केस निकाला। डाक्टर की ओर बढ़ा दिया। डाक्टर घोष ने शिष्टता के साथ कहा, "नो, थैंक्यू। मैं सिगरेट नहीं पीता।"

"ओह !" मेजर ने सिगरेट सुलगा ली। वह खिड़की के बाहर देखने लगा था। उसका साथी पूर्ववत् बैठा हुआ है। मेजर की आंखें दयार्द्र हो उठीं। डाक्टर से यह स्थिति छिपी न रही। उनके

बीच बातें नहीं थीं। हालांकि पूछने के लिए बहुत कुछ था। डाक्टर ने कहा, "क्लाइमेट शाम के साथ ही एकदम चेंज हो गया।"

"जी हां। मेरा खयाल है, बारिश होगी।"

"बारिश ?" डाक्टर ने शायद इतना ज्यादा नहीं सोचा था।

"हां।" मेजर बोला, "जब हम लोग घर से चले, उस वक्त बादल काफी थे। आपने ध्यान नहीं किया, इस बीच एक-दो बार बिजली सी कौंधी थी।"

"नहीं तो !" डाक्टर ने कहा। फिर वह चिन्तित हो गया, "अगर बारिश होनेवाली है तो···" उसने संकोच के साथ बात पूरी की, "आपके साथी को यहीं बुला लिया जाए ?"

"इम्पॉसिबल !" मेजर ने सिगरेट का कश छोड़ा। एक गहरी सांस ली। बोला, "वह नहीं आएंगे।"

"जी ?" डाक्टर ने पूछा, "तब क्या वह बारिश में भीगते रहेंगे ?"

"हां।"

"कब तक ?"

"जब तक उनकी इच्छा होगी।" मेजर ने जवाब दिया।

"अजीब बात है !" डाक्टर घोष बड़बड़ाए।

मेजर ने थूक का घूंट निगला, "कई बार ज़िन्दगी में इतना कुछ अजीब होता है डाक्टर कि आदमी को समझ ही नहीं आता कि वह अजीब है।"

"मैं समझा नहीं।"

"कोई नहीं समझेगा, पर यह सच है डाक्टर ! कई बार अजीब भी उतना ही नेचुरल होता है, जितना अजीब न होना।··· कोई विश्वास भी नहीं करेगा, पर मैं विश्वास करता हूं।"

डाक्टर घोष चुप हो रहे, पर उनका कौतूहल उफनने लगा था। ये दोनों ही व्यक्ति बेशक अजीबोगरीब थे। उनकी नजरें फिर से उस आदमी पर जा ठहरी थीं। उसी मुद्रा में बैठा हुआ था वह। डाक्टर को आशंका हुई। कहीं वह आदमी मरकर अकड़ तो नहीं गया। कितना स्थिर, कितना चुप, कितना शान्त ! जैसे एक बुत हो। विशिष्ट मुद्रा में तैयार किया गया। सहसा पूछ लिया था उन्होंने, "क्या बजा होगा इस समय ?"

मेजर ने घड़ी देखी। महंगी, इम्पोर्टेड घड़ी, "बारह !"

"काफी रात हो गई है।" डाक्टर ने कहा, "क्या आप कॉफी पीना पसन्द करेंगे ?"

"तकलीफ न करें।" मेजर बोला, पर डाक्टर को लगा कि यह औपचारिकता-भर है। उठ पड़े, "नहीं-नहीं, तकलीफ कैसी !" फिर वह तेज़ी से किचिन में चले गए।

मिसेज़ घोष ने थोड़ा-बहुत सामान निकाल रखा है। कॉफी का भी है। स्टोव जलाकर जल्दी-जल्दी दो प्याले बनाए। इस बीच डर भी लगा रहा। कहीं वह ड्राइंग-रूम में पड़ा सामान उठाकर चम्पत न हो जाए। वक्त खराब है। किसके भीतर क्या है, कभी-कभी यह ऐक्सरे तक नहीं समझ पाता, फिर यह तो सब बाहरी बातें हैं। ड्राइंग-रूम में प्याले लेकर लौटे, तब जान में जान आई। मेजर उसी तरह बैठा हुआ था। पछतावा हुआ घोष को। क्या-क्या अनर्गल सोच जाते हैं ! प्याला मेजर की ओर बढ़ाया, "लीजिए।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद !" मेजर ने प्याला थाम लिया।

डाक्टर अपनी जगह बैठे। दो चुस्कियां लीं।

मेजर बोला, "बहुत बढ़िया कॉफी बनाई है आपने।"

"धन्यवाद !" डाक्टर ने कहा तभी उनकी दृष्टिबाहरजा पड़ी। लगा जैसे बारिश होने लगी है। बूंदों की फुहार। घबराए हुए से बोले, "आपके साथी भीग जाएंगे।"

"हां।" मेजर ने अविचलित स्वर में उत्तर दिया।

'डाक्टर हैरान। इसका मतलब है कि वह आदमी भीगता रहेगा और डाक्टर देखते रहेंगे ? सरासर देख रहे हैं कि वह आदमी मौत के दरवाज़े बैठा हुआ है। न्युमोनिया नहीं तो ब्रौंकाइटिस ज़रूर हो जाएगा उसे। बोले, "उनकी तबीयत खराब हो जाएगी। देख रहे हैं ना, मौसम कितना खराब हो गया है !"

"हां," मेजर ने उसी तरह स्थिर आवाज़ में जवाब दिया, "वह खुद भी डाक्टर हैं—एम० बी० बी० एस०। सब जानते हैं।"

"फिर भी ?"

"हां। वह नहीं उठेंगे। तभी उठेंगे, जब उनकी इच्छा होगी। मैं सिर्फ उनकी प्रतीक्षा कर रहा हूं।"

"यानी आप उन्हें उठा नहीं सकते ?" आश्चर्य से डाक्टर ने

पूछा।

"नहीं।"

बूंदाबांदी तेज़ हो गई है। डाक्टर फिर से बड़बड़ाए, "यह तो बिलकुल ही अजीब बात है।"

"मैं कह चुका हूं कि कई बार सारी ज़िन्दगी सिर्फ अजीब ही होती है। सिर्फ इत्तिफाक।" मेजर घूंट भरता रहा।

"सब कुछ समझते हुए भी···"

"हां। सब समझते हुए भी ज़िन्दगी सिर्फ नासमझी हो जाया करती है।" मेजर ने अधूरी बात झेल ली।

"मोमबत्ती बुझ गई है।" एकाएक डाक्टर ने कहा।

मेजर ने उत्तर नहीं दिया।

"क्या अब भी वह वहां बैठे रहेंगे?"

"हां।"

डाक्टर कुछ झल्लाने लगे, पर कहा नहीं। लगता है कि दोनों ही पागल हैं और डाक्टर उनके फेर में पड़कर अपनी रात खराब कर रहे हैं। कॉफी के प्याले खाली हो गए थे। चुप्पी गहरी। मेजर शान्त बैठा हुआ था। डाक्टर ऊबने लगे, पर अब बड़ी उलझन में फंस चुके थे। मेजर से यह तो कहा नहीं जा सकता कि वह बाहर चला जाए। और इसे अकेला छोड़कर डाक्टर सोने भी नहीं जा सकते। कुछ बात होनी चाहिए; पर बात क्या हो सकती है, यह नहीं सूझता। क्यों नहीं उसी रहस्यमय आदमी के बारे में पूछा जाए? वक्त कटेगा। थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, "धृष्टता न समझें तो एक बात पूछूं?"

"कहिए?"

"आपके साथी···उनके साथ यह क्या ट्रेजेडी है?" डाक्टर हकलाने लगे। सवाल डरते-डरते पूछ रहे हैं। क्या मालूम मेजर बिगड़ उठे और कहे कि यह सब पूछनेवाला वह कौन होता है।

"आप मेरे साथी के बारे में जानना चाहते हैं?" मेजर ने पूछा।

डाक्टर ने स्वीकारात्मक ढंग से सिर हिलाया।

"सुनाऊंगा, पर एक शर्त है।"

"कहिए।"

"आप दोबारा नहीं कहेंगे कि अजीब बात है!" मेजर ने

गंभीरता से कहा।

डाक्टर को यह शर्त अजीब लगी, पर इसे स्वीकार लेने में क्या हर्ज है। कहा—"ठीक है।"

"तो सुनिए।" मेजर वर्मा ने सिगरेट जला ली। बूंदें पहले से ज्यादा तेज़ हो गई थीं। वातावरण में सरदी की लहरें बिखरी हुई थीं।

मेजर सुनाने लगा था, "कई वर्ष बीत चुके हैं। कभी-कभी तो लगता है जैसे एक सदी ही बीत गई है···वक्त के कम-ज्यादा होनें से फर्क नहीं पड़ता। फर्क होता है एहसास से। थोड़ा-सा वक्त भी कभी-कभी सदियों का एहसास देता लगता है। मेरी कहानी को शायद बीस या पच्चीस वर्ष हुए होंगे। इसी शहर की कहानी है···"

डाक्टर घोष ने ओवरकोट के कालर ऊंचे कर लिए हैं। थके हुए हैं, सो जाना चाहते हैं, पर क्या सो सकेंगे?

"यह कहानी सरमा की है। अचला की भी है।" मेजर कहता है, "दोनों यहीं पढ़ती थीं—कालिज में। गहरी सखियां। एक-दूसरे से बहुत प्यार करतीं। सगी बहनों जैसा। और दूसरे शहर में दो दोस्त—आलोक और अनुराग। उतने ही प्रगाढ़ मित्र। सगे भाइयों जैसे। एक रमेश भी था, पर वह कहानी का तीसरा हिस्सा। पर सबके साथ एक ही कहानी घटी। अलग-अलग तरह। सबसे पहले सरमा की कहानी कहता हूं। अचला की कहानी उसके साथ ही है। अचला की शादी तय हुई अनुराग के साथ। हुई भी। बारात आई और अचला ने हार-फूलों से सजे डोले में एक नई ज़िन्दगी और नये घर की तरफ रवानगी ली। कोई नहीं जानता था कि ज़िन्दगी के दरवाज़े के साथ-साथ अचला ने उसी क्षण से ग्रहों की भूलभुलैयां में पदार्पण कर दिया है···और अचला भी क्या जानती? उस समय तक भी नहीं जानी थी, जब उसे अनुराग के घर में सुहागरात के सजे पलंग पर पहुंचा दिया गया था···नई-नवेली अचला, जिसके पैरों में मेहंदी-महावर रचे थे, जिसकी कलाइयों में खूबसूरत बंगलौरी चूड़ियां पड़ी हुई थीं और जिसकी शर्मीली आंखों में अगला जीवन एक नीले विस्तृत आसमान की तरह अनंत फैला हुआ था···सोचता हूं, कि बहुत सजा रहा होगा कमरा। द्वार पर बन्दनवार रहे होंगे, पलंग पर फूलों की लड़ियां बरसती

रही होंगी और उनके बीच होगी लाज-संकोच से घिरी सौन्दर्य-मयी अचला···पर मालूम नहीं, वह रात कैसी अभागिन थी। भुलावा देनेवाली रात। नकली रोशनी से भरने पर भी क्या मावस मिट पाती है ?···कोई नहीं जानता। अचला भी क्या जानती ?···

दो

"अचला जानती कैसे ? भविष्य के अगले पल को भी कोई जान सका है कभी ?

उस समय सिर्फ इतना ही जाना था कि धीरे से दरवाज़ा खुलेगा। अचला बिना उस ओर देखे ही समझ लेगी कि कौन आया है। अनुराग भीतर आकर उतने ही हौले से दरवाज़ा फिर बन्द कर देगा। अचला धीमी-सी आहट सुनेगी। यह आहट उसके जिस्म में रोमांच, गुदगुदी और जाने कितनी-कितनी प्रतिक्रियाएं एकसाथ करती हुई बिखर जाएगी। वह दबे कदमों पलंग की ओर बढ़ेगा, यानी उसकी ओर। अचला गरदन झुकाए रहेगी। अनजाने ही उसकी गरदन इतनी झुक जाएगी जैसे बिलकुल घुटनों में जुड़ जाना चाहती हो।

अचला उस क्षण की तरह-तरह की कल्पनाओं से भरी हुई है। अनुराग···? ठीक तरह पहली बार ही देखेगी उसका चेहरा। यों वेदी पर दो-एक बार दबी-दबी पलकों के बीच देखा था, किन्तु ठीक तरह नहीं देख सकी। कैसे देख सकती थी ? हज़ार-हज़ार आंखें सिर्फ उनकी ही ओर टिकी हुई थीं। आंखें, जिन्होंने लज्जा और संकोच का एक झिलमिला परदा उनके बीच खींच रखा था। अचला देखना चाहती रही थी। बहुत चाहती रही थी, पर नहीं देख सकी।

धीरज धर लिया था—देखना ही है। सारी ज़िन्दगी को यह चेहरा उसके अपने चेहरे से जुड़ जानेवाला है। जुड़ चुका है। एक तरह आत्मसात् कर लिया है उन दोनों ने। पवित्र मंत्रों के बीच दो चेहरे एक-दूसरे में विलीन कर देने का कैसा अनोखा पर्व होता है विवाह !

अचला अपने-आपको तैयार करने में व्यस्त है। अनुराग के आगमन का सामना करने की रोमांचक स्थिति। क्या कहेगा वह?

हो सकता है कि वह आए, पीछे से अचला की आंखें मूंद ले। उसकी हथेलियां अचला के कपोलों पर होंगी और अंगुलियों में अचला की आंखें मुंदी रहेंगी। कैसा लगेगा उस क्षण?

जरूरी नहीं है कि ऐसा ही हो। यह भी तो हो सकता है कि वह रोमांस की पुरानी टेकनीक न अपनाए। आए और अचला के ठीक सामने आ खड़ा हो। मीठे स्वर में कहे—'अचला!...'

अचला सिरह जाए।

वह फिर कहे—'इधर देखो, मेरी तरफ।'

अचला कांप उठे।

पर यह सिहरना और कांपना बहुत सुखद होगा। दो स्थितियां, पर दोनों ही अलग-अलग समय और अलग-अलग मौकों पर कितनी अलग अनुभूतियों से भरी हुई!

अनुराग उसके सामने बैठ जाए। अचला गरदन झुकाए रोमांचित होती रहे! वह धीमे से अपनी अंगुलियों में उसकी ठोढ़ी ऊपर उठा ले—आंखों से सामना करना चाहे और अचला की पलकों पर जैसे मनों वज़न रखा हो। उठाए न उठे। वह फिर शब्दों को उसके कानों में घोल दे, 'अचला...'

और अचला जैसे बरसात की नम हवा का झोंका खाकर सिहरती हुई!

पर क्या-क्या सोचे जा रही है अचला! ज़रूरी नहीं है कि सब कुछ उस जैसा ही हो जाए, जैसा-जैसा अचला सोचती रही है। कुछ अप्रत्याशित भी हो सकता है। ऐसा कि अनुराग आए और दन् से उसे बांहों में ले ले। चूम ले। अचला को संभलने, शरमाने का भी अवसर न दे...

कमरे में दूधिया रोशनी बिखरी हुई है। इस रोशनी में चमचमाता फर्नीचर, खूबसूरत पेंटिंग्स, रैक पर एक फ्रेम में जड़ा चित्र। अनुराग का चित्र। अचला ने कलाई-घड़ी देखी। ग्यारह बज रहे हैं। दोस्तों की हंसी-ठिठोली में घिरा होगा अनुराग। अचला का मन करवटों में बातें सोच रहा है। इस करवट यह कि वह आ जाए, और उस करवट यह कि आ जाएगा तब अचला कैसे गड़बड़ा उठेगी?

वह उठी। खिड़की के पास जा खड़ी हुई। खिड़की से बाहर रोशनी में बल खाई हुई सड़क एक टेढ़ी-मेढ़ी लाइन की तरह खिंची हुई है। इस लाइन पर गाहे-बगाहे पैदल या सवारी दीखती है। अचला निरुद्देश्य ही सड़क और बाहरी इमारतों की ओर देखती रही।

और तभी वह अकल्पित क्षण आ गया। दरवाज़ा एकदम खुला। अचला ने चौंककर उस ओर देखा—

वही है। अनुराग।

वह अचला की कल्पनाओं को रौंदता हुआ जल्दी-जल्दी उसके पास आया। अचला बदन में कम्पन अनुभव करती हुई नज़र झुकाए खड़ी रही। लगा कि वह अभी अचला को कन्धों से थाम लेगा··· पर बिलकुल लापरवाह है। दरवाज़ा उसी तरह खुला छोड़ आया। अचला को सहसा ध्यान आया।

पर वह उसके सामने आ खड़ा हुआ। गंभीर। 'अचला!'

अचला को विश्वास नहीं हुआ। क्या सचमुच इस क्षण आवाज़ में इतनी ही गंभीरता और तेज होना चाहिए?

'मैं एक ज़रूरी काम से दो-तीन घण्टे के लिए जा रहा हूं।' अनुराग ने कहा, 'बुरा न मानना। बात कुछ इसी तरह की है कि बिना जाए नहीं बनेगा। कहने आया हूं।'

अचला निरुत्तर! क्या कहती? उसकी जगह कोई भी लड़की होती, क्या कह सकती थी?

पर यह अच्छा नहीं है। क्या सिर्फ इसी दिन के लिए कोई बात थाम रखी थी? अचला के मन में जैसे रात उतर गई। सन्नाटे से भरी हुई रात।

उसने अचला के उत्तर की प्रतीक्षा ही नहीं की। लौट पड़ा। फिर उसी तेज़ी से चला भी गया।

अचला खड़ी रह गई। स्थिर। पथरीली चट्टान-सी। भावशून्य। अभी, कुछ ही पलों में कुछ घट गया, सहसा विश्वास ही नहीं हुआ था अचला को।

पर घट गया है, इसका गवाह था वह खुला हुआ दरवाज़ा। वह, जिससे अचला को सिहराता हुआ अनुराग आया था और लगभग थप्पड़ मारकर लौट गया।

किन्तु अचला को इतनी भावुकता से काम नहीं लेना चाहिए।

उसे अनुराग के स्वर-शब्द याद हैं। बहुत गंभीर था। जरूर कोई ऐसी बात रही होगी, जिसे टालना कठिन। इतना बेसबरा और मूर्ख तो वह नहीं हो सकता। निश्चय ही किसी स्थिति-विशेष ने उसे बाध्य कर डाला होगा...

पर कभी-कभी ऐसी स्थितियों को भी आदमी टाल जाता है। क्या उसे जीवन के थोड़े, बहुत थोड़े रोमांचक और अविस्मरणीय पलों को इस तरह उलीच फेंकना चाहिए? जीवन में ऐसा कब-कब होता है?

जीवन में कब, क्या हो जाता है—कौन जाने? कई बार ऐसी स्थितियां भी तो पेश आती हैं कि आदमी को वह करना पड़ता है, जिसे वह कभी, किसी कीमत पर पसन्द नहीं करता!

अचला अपने-आपसे तर्क करने लगी...पर तर्कों से ढाढ़स नहीं बंधता। उलटे ये तर्क-वितर्क अक्सर आदमी को बेचैन कर डालते हैं। अचला के भीतर ऐसी ही बेचैनी घिर आई है। अनुराग की हरकत ने कुछ ऐसा ही किया है जैसे दूधिया रोशनी में काजल उंडेल गया हो! एक धब्बे की तरह अचला के मन में उसका आना लगा है और चले जाना जमकर रह गया है। अचला इस धब्बे को मिटा नहीं पा रही है।

पर मिटाए, न मिटाए, सच वह है जो अचला के सामने है। अचला के गिर्द, अचला का सच! यह कि अनुराग सुहागरात की अवहेलना-सी कर गया।

अचला अपने ही अनुमान कर रही है। क्या मालूम अनुराग को सचमुच कोई ऐसा काम रहा हो, जिसके कारण उसका जाना जरूरी था!

पर अनुराग वह काम भी बता सकता था। अचला आश्वस्त हो जाती। समझ लेती कि निश्चय ही अनुराग सही है। वह निश्चिन्त नींद में खो जाती। पवित्र नींद। अचला के सपनों में अनुराग उसके पास रहा होता।

पर अनुराग ने वैसा कुछ नहीं किया। चौंकाकर चला गया। लगता है जैसे बहाना कर गया है।

देर तक खिड़की के बाहर खड़ी-खड़ी सड़क से अपने-आपको तौलती रही थी अचला। स्थिति वैसी ही है। एक सड़क लाचार। हिल-डुल नहीं सकती। उसे वहीं लेटे रहना है। और अचला भी

लाचार है—उसे वही स्थिति झेलनी है, जो इस घर में झिलाई जाए।

कलाई-घड़ी फिर देखी। बारह बजने को हो आए हैं। लगता है कि कांटे नहीं सरक रहे हैं, अचला की जिन्दगी से बेहतरीन और कोमल क्षण गुम गए हैं।

और अचला इन गायब क्षणों को मूर्खों की तरह ढूंढ़ती हुई। यह भी नहीं जानती कि उम्र के जो पल बीत जाते हैं, लौटा नहीं करते।

क्या अनुराग नहीं जानता था इसे ?

जानता था। जानते हुए भी उसने यह बेहूदगी की। अचला झल्लाहट से भर आई थी। उसके आते ही जवाबतलबी करेगी। मधुर शब्दों में ही सही, यह जरूर पूछेगी कि क्या बात थी ?

वह बता देगा। अचला शान्त हो जाएगी। हो सकता है कि जल्दी में होने के कारण अनुराग बता न सका हो, या बताना उसने ठीक न समझा हो। यह भी हो सकता है कि आते ही स्वयं बता दे कि किस कारण ने उसे इस रात के कुछ घण्टे खो देने पर मजबूर कर दिया !

अचला अपने-आपको धीरज देती रही। बहुत हद तक धीरज पा भी गई। सोचा, एक नींद लें ले। अनुराग आएगा तो आप ही जगा लेगा उसे। पर नहीं, नींद नहीं आ सकेगी। कैसे आ सकती है ?

वह अनुराग की तसवीर के पास जा खड़ी हुई। चमकती, सुनहरी फ्रेम में जड़ी एक मुसकराहट। मुग्ध नेत्रों से तसवीर को देखती रही। तसवीर, जिसके साथ अचला सारी ज़िन्दगी के लिए फ्रेम हो चुकी है।

अभी-अभी आया था अनुराग—पर अचला दोबारा चूक गई। ठीक तरह देख नहीं सकी उसे।

पर अब देख रही है। माथा, बाल बनाने का एक खास तरीका, नाक-नक्श, कुल अनुराग। एक फूल जिसकी गंध दीखती है। अनोखा, अविश्वसनीय फूल। अचला के अतिरिक्त उसकी विशिष्टताओं और गहराइयों को कौन छू सकेगा ?

जरूर कोई जरूरी काम आ गया होगा। चेहरा बताता है। सरलता की इस मुद्रा पर व्यर्थ ही कुढ़ती रही थी अचला। अपने-

आपपर झल्लाती हुई सोचने लगी थी वह। वही अचला, जो कभी अपनी सहेली सरमा से कहा करती थी—'तू तो बहुत भावुक है। इंच-भर के शब्द पर गज़-भर सोचती है।'

और सरमा से ही कितनी अलग है अचला? सरमा के साथ तर्क हुआ करते थे। कहती थी—'बहुत दिनों से उसका पत्र ही नहीं आया। 'उस' यानी 'ए'।' अचला, कृष्णा और भी जाने कितनी सखियों ने कितनी ही बार पूछा था सरमा से—'बता भी, यह 'ए' कौन है?'

सरमा लजा जाती—'तुम लोग जानती तो हो।'

'यही तो जानती हैं कि 'ए' है। पूरा नाम बता ना!' अचला बहस करती।

पर सरमा नहीं बताती। कह देती कि उसे खुद भी कहां मालूम है उसका पूरा नाम।

सखियां हंस पड़तीं—'तू बहुत भावुक है री। कविता से प्रेम करती है, यही क्या कम भावुकता है? फिर जिसे प्यार करती है उसका नाम 'ए' मानकर ही सब्र कर लिया?'

सचमुच बहुत भावक है सरमा। अनायास ही उसके बारे में सोचने लगी थी। कालिज में कोई कवि आता तो ऑटोग्राफ बटोरने और उससे चार बातें कर लेने के लिए ही इतनी उतावली हो उठती थी कि दिल-दिमाग ठिकाने नहीं। दसियों कवियों की दसियों कविताएं कंठस्थ थीं उसे। इस तरह खोकर सुनाती कि सखियां हंस पड़तीं। एक बार अचला ही बोली थी कि अगर यह कंठ और यह तन्मयता लेकर मीराबाई भी इस 'एज' में पैदा हो जाती, तो सरमा के आगे पानी भरना पड़ता उसे!

और सहेलियों में खिलखिलाहटें बिखर गई थीं। खुले आसमान में गूंजती किसी बांसुरी की धुन जैसी।

और जाने कहां से यह 'ए' एक दिन सरमा को जीत ले गया। सरमा ठीक तरह बताती नहीं थी। शायद इस भय से कि सहेलियां हंसी उड़ाएंगी, पर इतना स्वीकार गई थी कि वह 'ए' को चाहती है और 'ए' उसे चाहता है।

''ए' के माने क्या?'

''ए' माने एपल!' एक बोली।

और हंसीं।

सरमा चिढ़ गई—'मैं इस तरह की बदतमीज़ी पसन्द नहीं करूंगी।'

मज़ाक करनेवाली सहेलियां सहम गईं। चुप। सरमा उनके बीच से उठकर चली गई थी। कितनी भावुक! अचला सोचती रही थी। सरमा कविता भले ही न लिखती रही हो, पर किसी भी कवि से कम भावुक नहीं थी।

'ए' पत्र डाला करता था उसे। सरमा दिन में कई-कई बार पढ़ती। पढ़ती और कविताएं गुनगुनाया करती। रोमांस और रस से सराबोर कड़ियां। सरमा सहसा किसीके सामने खुलती नहीं थी। खुलने की जगहें थीं सिर्फ दो। एक अचला और दूसरी कृष्णा। इन्हींको सरमा ने बताया था कि उसका 'ए' कहां रहता है, क्या करता है, कैसा है, आदि। सबसे बड़ी बात थी 'ए' और सरमा की मुलाकात। सचमुच बड़ी मज़ेदार मुलाकात थी वह। पहले झगड़ा, फिर प्यार और फिर वायदे। वायदों के बाद पत्र। पत्र और पत्र...

ये पत्र अचला ने भी पढ़े थे। कई बार सरमा ही पढ़वा देती थी। अचला और कृष्णा भी उसके 'ए' को मान जातीं। सचमुच कमाल की भाषा में लच्छे बना-बनाकर उलझाता था भावनाएं। बीच-बीच में गीता की पंक्तियां। ये गीत 'ए' के अपने होते थे। सरमा ही बताती थी—'उसके अपने हैं। दूसरों के लिखने की उसे क्या ज़रूरत!'

कृष्णा और अचला एक-दूसरे को देखतीं। सोचने लगतीं कि क्या ठीक कर रही है सरमा?

कभी-कभी लगता जैसे सरमा गलती कर रही है।

पर सरमा से कहे कौन? कहा जाएगा और सरमा रो-रोकर आंगन भर देगी। एक बार अचला ने कोशिश भी की थी—'एक बात कहूं?'

'हूं।'

'बुरा तो न मानेगी?' अचला ने डरते-डरते कहा था।

'नहीं-नहीं।' सरमा बोली। वह उस समय पलंग पर औंधी पड़ी थी। सामने 'ए' का ताज़ा पत्र। इस पत्र के साथ एक रोमेंटिक कविता भी लिख भेजी थी 'ए' ने। कविता का भाव था कि 'ए' की ज़िन्दगी सरमा के बिना उस पायल जैसी है, जिससे आवाज़ नहीं आती। आदि।

और अचला सोच रही थी कि किस तरह कह डाले। कहने के लिए बहुत कुछ सोच-समझ आई थी घर से। कृष्णा ने अचला से सलाह भी कर ली थी। दोनों ने एक ही निष्कर्ष निकाला था कि सरमा को समझाना चाहिए। यह फिल्मी रोमांस ठीक नहीं।

पर सरमा के सामने आते ही अचला सब कुछ भूल गई थी। डर लग रहा था कि कहीं दोस्ती में दरार न पड़ जाए। सरमा को बरसों से जनाती है अचला। शीशे जैसी है। ज़रा धमक पड़ी और चटाक् से चटक जाएगी।

'बोल ना!' सरमा पूछने लगी थी। उत्सुक होकर। क्या कहनेवाली है अचला, जिसके लिए बुरे-भले का वायदा पहले ले लिया है।

अचला ने बात शुरू की, 'यह तो अच्छी बात है सरमा कि तेरा 'ए' तुझे बहुत प्यार करता है। पर···'

'पर क्या?'

'पर बहुत सोच-समझकर कदम रखना चाहिए, सरमा।' अचला कहती है, 'इस तरह विश्वास सौंपने से पहले दस तरह सोचना ज़रूरी होता है।'

सरमा को अच्छा नहीं लगता, पर अचला ने ऐसा कुछ नहीं कह दिया है, जिसपर सरमा उखड़ पड़े। इसीलिए चुप रहती है।

'सच कह! क्या सचमुच ही तू 'ए' का पूरा नाम नहीं जानती?' अचला पूछने लगी है।

सरमा इनकार में सिर हिला देती है। पर लगता है जानती है। कहती है—'अनुमान कर सकती हूं।'

अचला उसके भोलेपन पर झल्लाए या चुप रह जाए—तय नहीं कर पाती। जैसे-तैसे कहती है, 'इस बार उसका पूरा नाम ज़रूर पूछ लेना।'

सरमा चुप है। अचला गलत नहीं कह रही है, पर इस तरह पूरा नाम पूछने के फेर में कहीं वह 'ए' के मन में यह पौधा तो नहीं जमा देगी कि सरमा ने उसपर अविश्वास किया?

अचला ने फिर समझाने की कोशिश की, 'सरमा, मैं तेरे प्यार का अनादर नहीं करती, पर सावधान करती हूं।' हम जिस ज़माने में जी रहे हैं और जिस उम्र से गुज़र रहे हैं, वह केले के छिलकों जैसी है। जितना बच सकें, वही ठीक।'

सरमा ने कुछ रुष्ट होकर उसे देखा था। अपरोक्ष रूप से ही सही, अचला ने उसके प्रेमी का अपमान किया है। एक तरह से सरमा का ही। पर कड़वा न बोलकर बात टाल दी थी, 'अचला, मैं भी जानती हूं। पर अच्छा रहे कि हम लोग इस जिक्र को छोड़ दें।'

अचला समझ गई थी कि सरमा को भावुकता ने उसे दबोच लिया है। निश्चय किया था, आगे कुछ नहीं कहेगी। पर यह सच था कि सरमा बहुत भावुक है।

और आज सोचने लगी है—क्या अचला ही कम भावुक है?

नहीं। दोनों अपनी-अपनी जगह पर बहुत भावुक हैं। किसी कलाकार के मन जैसी।

सरमा की ही तरह अचला भी भावुक हो उठी है। बिलकुल उसी तरह। उसी सन्दर्भ में।

'ए' का उत्तर लेट हो जाता और सरमा अस्तव्यस्त हो उठती। सहेलियों में बुझी-बुझी लगती। एकांत में कृष्णा या अचला कुरेदतीं, 'क्यों, ऐसी मरी-मरी क्यों हो गई है तू?'

एक-दो बार की टालमटोल के बाद सरमा बता दिया करती कि उसके 'ए' ने उत्तर नहीं दिया। पूरा सप्ताह निकला जा रहा है।

वह अपनी आशंकाएं भी गिनाने लगती, 'डरती हूं, अचला! 'ए' किसी और मोहिनी में न उलझ जाए। ऐसे कवियों को जीतने में वक्त ही क्या लगता है?'

और अचला उसे ढाढ़स देती। कहती, 'तू तो बिलकुल ही मोमजामा है। अरी पगली, डाक लेट हो गई होगी। यह भी हो सकता है कि 'ए' को वक्त न मिला हो। डाक्टरी पढ़ता है। यूं ही तो नहीं पढ़ता होगा। प्रेमपत्र ही लिखता रहा तो फाइनल करते-करते उम्र बीत जाएगी। इसीलिए वक्त कम मिल पाता होगा।'

पर सरमा का डबता दिल नहीं थम पाता…

कृष्णा और अचला हंसतीं—एकदम भावुक है सरमा! कैसे-कैसे वहम घेर लेते हैं उसे!

और आज अपने बारे में सोच रही है अचला। वही कितनी अलग है? अनुराग किसी काम से गया है। सौ-सौ वहमोंमें जी रही है। भावुक है!

एक बज चुका है। दीवारघड़ी ने हौले से आवाज़ करके समय-घोषणा की। कह गया था कि घण्टे, दो घण्टे लग जाएंगे। ग्यारह, सवा ग्यारह बजे थे उस समय और अब एक बज चुका है। अनुराग का दिया वक्त तो बीत गया। उसे आ जाना चाहिए।

वह बेचैन हो उठी थी। क्या करे ? अब सिर्फ सोचों से वक्त नहीं कट पा रहा है। कुछ करे। खिड़की से बाहर देखना भी व्यर्थ। अंधेरे को कब तक देखा जाएगा ? फिर ?

कुछ पढ़े।

अचला रैक के पास चली आई। पंक्तिबद्ध किताबें रखी हैं। कई विषय। रैक में सजी किताबों की पुश्तें विषय-सूचना दे रहीं हैं। विविध विषय। इसका मतलब है, अनुराग पढ़ने का शौकीन है। अचला ने किसी रोचक पुस्तक की तलाश शुरू की। कोई उपन्यास मिल सके तो अच्छा।

मेडीकल किताबों की एक बड़ी 'रो' के बाद इतिहास, संस्कृति और दर्शन पर हिन्दी-अंग्रेज़ी किताबों का एक सिलसिला। फिर कुछ उपन्यास। अचला ने एक उपन्यास बाहर निकाल लिया...।

उपन्यास से लगे कुछ कागज गिर पड़े। अचला ने उन्हें बटोरा। बटोरने के लिए बढ़े हाथ थमकर रह गए। चौंक गई।

यह लिखावट ?

यह लिखावट उसकी अपरिचित नहीं है। हर शब्द के मोड़, उसका उपयोग, उसका तौर-तरीका...सब कुछ अचला का चिर-परिचित है। यही लिखावट तो थी, जो सरमा को मिला करती थी और सरमा के ऐसे पत्र कृष्णा और अचला संयुक्त होकर पढ़तीं। सरमा को ही सुनाया करतीं...

पर यह लिखावट...यहां ? अचला जल्दी-जल्दी सभी कागज़ात लौटने-पलटने लगी। विश्वास दृढ़ हो गया था। यह वही लेखन है। वही भाषा। वही शब्द। वही वाक्य-विन्यास। वही शैली।

इसका मतलब है कि...

ए !

अनुराग के अंग्रेज़ी स्पेलिंग में भी 'ए' है !

वह मेडीकल का छात्र था...

और अनुराग भी...

ओह ! अचला ने माथे पर किसी वज़नी पत्थर की चोट महसूस

की। हड़बड़ा गई। अंगुलियां कांप उठीं। सरमा को मिले पत्र एक-एक कर आंखों के आगे से गुज़रने लगे। वही हैं। बिलकुल वही। प्यारभरा वह सम्बोधन, जो इसी लिखावट में सरमा को मिला करता था, अचला को खूब याद है—मेरी सरमा···

'म' बिलकुल वैसा ही। मात्रा लगाने का भी वही ढंग। 'स'। स, र और मा। यही लिखावट है। यही। अचला को याद है और समझ चुकी है कि वह 'ए' अनुराग ही था और कोई नहीं।

कागज़ उसी तरह बिखरे हुए थे। अचला उन बिखरे हुए कागज़ों की ओर भय-विस्फारित नेत्रों से इस तरह देखती रही जैसे कब्रिस्तान में खड़ी हो। अंधेरी रात। चारों तरफ कब्रें। भुतहा सन्नाटा। और अचला अकेली! भयाक्रांत!

और तभी अचला ने देखीं कुछ पंक्तियां। एक कागज़ पर बिखरी हुई। ये पंक्तियां भी उसे याद हैं। वही कविता, जो सरमा को पत्र के साथ मिली थी। भावार्थ—'ए' की ज़िन्दगी···

जो तुम नहीं हो प्रिये,
मैं निःशब्द हूं।
उस पायल की तरह,
जिसमें आवाज़ न हो।

दिमाग पर कितनी बार पत्थर बरसे। कितनी बार अचला घायल हुई। उसने अपने ज़ख्म देखे। उससे बहता लहू देखा और अपना ही लहू पीती रही—अचला को कुछ भी याद नहीं रहा। वह देर तक वहीं बैठी रही थी। भूल गई थी उस रात को। रात की मादक कल्पनाओं को। कल्पनाओं के सुख को।

कितना वक्त गुज़रा—मालूम ही नहीं हुआ था। सिर्फ अपने प्रति धिक्कारों के स्वर अचला ने सुने और सहे। क्या मुंह दिखाएगी सरमा को? क्या जवाब देगी? अचला ने उसकी आशंका सत्य कर डाली। उस अचला ने, जिसे सरमा सगी बहिन-सा प्यार देती रही थी।

और यह नीच अनुराग उसका पति है! अचला का वह सपना, जिसे एक रहस्य की तरह वह अपने मन में दुलराती रही थी! और यह रहस्य एक भूत बनकर अचला की सहेली के सपने रौंदता-चबाता रहा। अचला को इस भूत के साथ ज़िन्दगी बितानी है। वह आनेवाला होगा···

पर अब तक नहीं आया है। दो बज चुके हैं। आधी रात खत्म हुई। रात के ढलान की उम्र।

अचला ने जबड़े भींच लिए। कागज़ातों को बटोरकर उसी उपन्यास के साथ फिर से रैक में रख दिया। इस तरह कि अनुराग को मालूम न हो कि किसीने उसकी पुस्तकें छुई थीं।

पर क्या अचला अपने-आपको घोंटती रहेगी? चाहिए तो यह कि अनुराग के आते ही उसके चेहरे पर थूके! उसे गालियां दे! उससे कहे कि तू नीच है! एक कीड़े की तरह, जो खूबसूरत फूलों की जड़ें खाता है! उनकी उम्र तबाह करता है!

नहीं। अचला नहीं कहेगी। पहले तह तक उतरेगी। मन ही मन उससे घृणा करती रहेगी। यही अचला का कर्तव्य है। एक तरह से पश्चात्ताप भी। अचला उसी आग में जलेगी, जिसमें उसकी सहेली जलती रही है। उसीकी तरह। बल्कि उससे भी कहीं ज्यादा।

पर अचला का इसमें क्या अपराध? वह किसलिए प्रायश्चित्त करे? अपराधी है अनुराग! अचला नहीं जानती थी कि सरमा का प्रेमी वही है। जो हुआ, अचला के अनजाने में हुआ। अचला दोषी नहीं है।

यह सब तर्क हैं। किसी तरह अपने-आपको अपनी ग्लानि से बचाने के चालाक तर्क। सच यह है कि अचला भी सरमा की तबाही की दोषी है। कम-ज्यादा जो भी है, दोषी है।

काश! अचला ने यह सम्बन्ध सरमा की उपस्थिति में किया होता। सरमा अपने मामा के बीमार होने से कुछ दिनों के लिए बाहर गई थी। उसी बीच विवाह हुआ। अचला के अनुराग के साथ फेरे पड़े। विदा हुई। यदि ठीक फेरों के समय भी किसी तरह अचला को मालूम हो सका होता, तो सरमा के साथ यह न घटता!

पर यह एक दुःखद संयोग है!

इस संयोग की शिकार हैं अचला और सरमा!

क्या अनुराग भी नहीं?

नहीं! वह अपराधी है। सब कुछ जानते-बूझते उसने यह किया है। अचला उससे घृणा करती है। सदा करती रहेगी।

इसीलिए कुछ दिनों पहले से अनुराग ने सरमा को पत्र लिखना

बन्द कर दिया था। इसीलिए उसने सरमा को कभी अपना पूरा नाम नहीं बताया। इसीलिए वह हमेशा 'ए' बना रहा। और शायद इसीलिए अचला को भी कभी मालूम नहीं हो सका कि अनुराग कविताएं लिखता है!

सब योजनाबद्ध! एकदम आयोजित!

यदि कुछ अनायोजित था तो वह सरमा का जीवन। अचला का विवाह।

पर अब सब कुछ आयोजित होगा। अचला का अनुराग के साथ व्यवहार, उससे घृणा, कटूक्तियां, व्यंग्य...सभी कुछ अचला करेगी। इस तरह जैसे इसीके लिए वह लाई गई है। और अनुराग को यही मिलना चाहिए उससे! उसने न केवल सरमा के साथ छल किया है, अचला के साथ भी किया है। पर छलों से ज़िन्दगी नहीं चला करती। अचला सिद्ध कर देगी।

वह बिस्तरे पर औंधा मुंह किए पड़ी रही थी। रोना नहीं आया था। इसके विपरीत वह झुलसती रही थी। विद्रोह और विनाश की चिनगारियां उसकी आत्मा से दिमाग तक बिखरी हुई थीं। वह इन चिनगारियों को और-और तेज़ करती गई थी...

वह करवटें बदलने लगी थी। काश! वह आ जाए। इसी समय आ जाए और अचला उसे ऐसा व्यवहार दे, जो उसके जीवन का पहला रोमांचक क्षण ही झुलसा डाले!

अचला उसे कुछ नहीं बताएगी। उसे तिल-तिल जलाएगी। उसी तरह, जिस तरह सरमा को अनुराग ने जलाया है। अचला को अनुराग ने जलाया है। समझता कि कोई कुछ नहीं जानता...

मूर्ख!

अचला का चेहरा एक कांटेदार बबूल की तरह तनाव और चुभन से भर गया था। हां, अब अचला के पास ही सिर्फ कांटे हैं। अचला स्वयं एक कांटा है। जो अनुराग के जिस्म से लेकर उसकी आत्मा तक लहू बहाता उसे चुभता-काटता रहेगा! अनुराग उससे प्रेम-याचना करेगा और अचला उसे ठुकराएगी! अनुराग भावुक और कामुक क्षणों में अचला को स्पर्श करना चाहेगा और अचला उसे धक्का देकर अपने से दूर कर देगी। अनुराग मुसकराएगा और जवाब में अचला उसके चेहरे पर व्यंग्य का कोई शब्द उछालकर थूक दिया करेगी।

वह कारण पूछा करेगा !

और अचला एक रहस्यमयी मुसकान के साथ पहेली बन जाएगी। बूझो तो जानें जैसी !

तीन बज चुके हैं। एक तरह से रात बीत ही गई है। वह नहीं लौटा। अचला जानती है कि क्यों नहीं लौटा। असल में अचला उसके लिए उस आंगन की तुलसी से ज़्यादा कुछ नहीं है, जो अपनी सारी पवित्रता और आत्मीयता लिए घर के आंगन में खड़ी रहती है। हिन्दुस्तानी औरत। दीवारों से घिरी। बाध्य। ईमानदारी और नेकी के पाविश्य से ठगी जानेवाली निरीह औरत !

वह आएगा भी नहीं। इसलिए कि अचला को वह प्यार नहीं करता।

तब क्या वह सरमा को प्यार करता है ?

अगर सरमा से प्यार करता होता तो उसे ठगकर अचला से विवाह ही क्यों करता ?

पर अचला को घर में चली चर्चा याद है। वह चर्चा जब अनुराग से सम्बन्ध की बात उठी थी। पिता और मामा खबर लाए थे—'लड़का अभी विवाह नहीं करना चाहता।'

मां ने पूछा था, 'क्यों ?'

'कहता है कि अभी पढ़ूंगा।'

'फाइनल तो कर चुका है। डाक्टर हो गया। अब क्या चाहता है ?' मां तर्क करने लगी थीं।

'विदेश जाना चाहता है। हायर स्टडीज़ के लिए।'

'विवाह करके चला जाए !' अचला की मां कह रही थीं···

'पर उसे समझाए कौन ?' अचला के पिता ने उत्तर दिया था।

'तुम्हीं जाकर बात करो ना !'

और अचला के पिता अनुराग से मिले थे। दो-तीन बार भेंट करनी पड़ी थी उन्हें। तब कहीं वह माना। माना था या जबर-दस्ती तैयार किया गया था ?

सब कहते थे कि एक तरह से जबरदस्ती ही तैयार करना पड़ा है। पहली-पहली बार तो साफ इनकार कर गया था, 'नहीं, यह नहीं होगा।'

पर अचला के पिता, मामा, अनुराग के अपने पिता ने बहुत दबाव डाला। अचला को याद हैं उसके मामा के शब्द—'बड़ी कठिनाई से मना पाया हूं। अब जो करना है, जल्दी ही कर डालना चाहिए!'

फिर सब कुछ जल्दी हुआ। मुहूर्त से लेकर फेरे और विदा तक। सब कुछ बहुत जल्दी।

निश्चय ही इस जल्दी के पीछे अनुराग को फंसा लेने का अभिप्राय था। पूरा हो गया। अचला के माता-पिता, सगे-सम्बन्धी सभी बहुत खुश हैं।

अचला को गद्दे में सिर गड़ाए हुए हंसी आ गई। अपने-आप-पर व्यंग्य-भरी हंसी—'अच्छा लड़का फंसाते-फंसाते अपनी बेटी को फंसा दिया। ऐसे जाल में, जो सारे जीवन नहीं कटेगा!'

पर क्या जानें वे?

और अचला ही क्या जानती थी?

पर अब जानती है। जानती है कि अनुराग नहीं आएगा। उसे अचला से लगाव भी नहीं है। अचला एक थोपी गई लड़की से ज्यादा उसके मन में कोई जगह नहीं रखती!

लगता है जैसे अनुराग अपराधी नहीं है। उसे इस विवाह के लिए बाध्य किया गया था। दबाव डाले गए थे। अचला को उसने नहीं ठगा। अचला को ठगा उसके अपने माता-पिता ने जो बार-बार अचला को 'जवान लड़की बोझ है' कहकर किसी न किसी तरह मुक्ति पाने के लिए छटपटा रहे थे। वे मुक्त हो गए और अचला कैद!

पर अनुराग ने दवाब माना ही क्यों? दूध-पीता बच्चा तो था नहीं कि डरा-धमकाकर चुप कर दिया जाता। वह चाहता तो सरमा के लिए लड़ सकता था। दो टूक कहता कि वह अचला को सुखी नहीं रख सकेगा। अचला उसके जीवन में एक थोपी हुई चीज से ज्यादा महत्त्वपूर्ण कभी नहीं हो सकेगी।

कुल मिलाकर सब कुछ इतना उलझा हुआ और गड़बड़ है, जिसे सुलझाने की शक्ति अचला में नहीं। किसीमें नहीं। दोषी कौन है, कौन कहे? कौन इसका निर्णायक बने?

पर अचला के साथ भी सरमा से कम ज्यादती नहीं कर रहा है अनुराग। क्या वह यह नहीं समझ सकता कि अचला उसकी

पत्नी है ? पराये घर से लाज-संकोच में लपेटकर उसके घर तक पहुंचा दी गई अनजान लड़की ! उसके अंधेरे और उजाले अनुराग के सुपुर्द हैं। वह अन्याय कर रहा है। इसलिए कि अचला उसके वश में है। भारतीय स्त्री की सनातन गति।

अचला कब रो पड़ी, कैसे रो पड़ी, नहीं जानती। गद्दे की मुलायम पीठ को भेदते हुए आंसू गहरे उतरने लगे थे।

चार बज गए थे। सुबह की भूरी, मुलायम रोशनी धरती की छाती पर अपनी नन्ही-नन्ही अंगुलियां फिराने लगी थी।

तीन

" अनुराग नहीं चाहता था कि वैसा हो, पर क्या वही हो पाता है जो आदमी चाहे ? जीवन तो यही है कि वह सब हो जो आदमी चाहता नहीं, पसन्द नहीं करता, पर करता है।

उस समय ज्यादा जरूरी यही था कि अनुराग इतनी कठोरता बरते। अपनी नई-नवेली पत्नी से ही नहीं, एक तरह अपने-आपसे भी।

अस्पताल से डाक्टर मदान ने फोन किया था, 'आइए। आपके मित्र याद कर रहे हैं।'

'कैसी है उसकी तबीयत ?'

मदान बोले, 'उन्हींसे बात कर लो।' फिर उन्होंने फोन आलोक के हाथ में दिया था और आलोक की कमजोर आवाज आई थी, 'कौन, अनुराग ?'

'हां, मैं ही हूं। कैसे हो तुम ?' बेसबर होकर अनुराग पूछने लगा था।

'ठीक हूं।' आलोक ने जवाब दिया था, 'पहले तुम मेरी बधाइयां लो।' बोलते-बोलते उसकी आवाज कमज़ोर हो गई थी, "मैं भी कैसा अभागा हूं ! तुम्हारी शादी में नहीं चल पाया। अभी-अभी खबर मिली कि तुम आ गए हो, इसीलिए तुम्हें फोन किया। कितना जी था कि···खैर !'

अनुराग के भीतर जैसे एक हिलोर आ गई थी। आलोक की यह आवाज़, बिखराव पर वह अवश था। एकाएक कुछ कह नहीं सका।

उधर से आलोक बोला था, 'अच्छा ···गुडनाइट ! तुम्हारी रात शानदार रहे !'

एक मद्धिम-सी हंसी की आवाज़ आई थी रिसीवर में। शायद शादी की शानदार रात की बधाई देते-देते आलोक हंसा होगा, पर कैसी तकलीफदेह हंसी थी—अनुराग ने ज्यों-त्यों जवाब दिया था, 'गुडनाइट !'

फोन कट गया था। अनुराग को नवविवाहिता के कमरे में पहुंचना था। पर उत्साह जैसे मर-सा गया। आलोक का घायल शरीर उसकी आंखों के सामने आ ठहरा था। उस दिन पट्टियां बंधते छोड़ गया था आलोक को। छोड़ जाना पड़ा था। अब पता नहीं, क्या हालत होगी। इच्छा हुई थी कि पहले अस्पताल जाकर उसकी हालत देख आए, पर···

भाभी चिल्लाई थीं, 'यहीं खड़े हो देवरजी ! ऊपर जाओ ना।' इस चिल्लाहट में एक तरह का प्यार भी था, नाराजी भी, ठिठोली भी। अनुराग की बड़ी भाभी साथ आई हैं। सारे दिन कमरा सजाती रही थीं। फिर अचला को भी वही बिठला आई थीं वहां। अब अनुराग को धकेलकर ऊपर पहुंचा देना भी उन्हींका दायित्व है।

अनुराग ने उनकी ओर मुड़कर देखा था—उनकी आंखों में शरारत थी। अर्थभरी शरारत। पर अनुराग को कुछ अच्छा नहीं लगा। आलोक का घायल शरीर अब भी उसी दिन की तरह उसकी आंखों के सामने था। बेहोश आलोक ! उसका घनिष्ठ मित्र !

भाभी पास आईं। बांह पकड़ी। बोलीं, 'चलो, जल्दी पहुंचो ऊपर ! वह बेचारी···' आगे कुछ नहीं कहा था उन्होंने। अनुराग को समझना चाहिए कि अगले शब्द क्या होंगे।

अनुराग अनमना-सा चलने लगा, तभी फिर से फोन आ गया।

वह मुड़ा, पर भाभी ने रोक लिया, 'बधाइयां मैं लिए लेती हूं। तुम जाओ।' अनुराग थम गया था। जाने क्यों उसे लगा था जैसे फोन बधाई का नहीं है, कुछ और ही है। आलोकवाली दुर्घटना

के बाद से फोन की घंटी अनुराग को डराने लगी है। इसीपर तो उस दिन खबर मिली थी कि···

'हैलो!' भाभी ने रिसीवर उठा लिया था।

उधर से न जाने क्या कहा गया। सुनकर भाभी ने रिसीवर अनुराग की ओर बढ़ा दिया, 'लो। कहते हैं कि ज़रूरी बात है।'

अनुराग ने रिसीवर लिया, 'जी हां। अनुराग बोल रहा हूं।'

डाक्टर मदान थे। घबराए स्वर में कह रहे थे, 'उस समय मैंने आलोक के सामने कहना ठीक नहीं समझा, पर अब कहता हूं। आलोक बहुत अच्छी हालत में नहीं है। शायद उसकी आंखें···'

'क्या ?'

'हां।' डाक्टर मदान ने कहा था, 'हो सके तो चले आओ। मैं तो दो दिनों से तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था···'

'अभी आया, सर!' अनुराग बोला था। रिसीवर रखा और भाभी की ओर मुड़ा। वह नहीं थीं। शायद किसी काम में उलझ गईं। अब क्या करे अनुराग ? कहकर जाना होगा। यह भी अच्छा ही हुआ कि भाभी नहीं हैं। वह कभी न जाने देतीं। अनुराग चाहकर भी उन्हें नहीं समझा सकता था कि उसका जाना कितना ज़रूरी है। अचला को समझा देगा!

पर इस वक्त ? इस मूड में, अचला को यह समाचार देना कुछ अच्छा लगेगा क्या ? उसने सोचा था। फिर निर्णय लिया कि ज़िक्र नहीं करेगा—क्या कारण है। सिर्फ यह कहकर मुक्ति पा लेगा कि ज़रूरी काम है। यही किया था। अचला ने कुछ कहा नहीं।

कहती भी क्या ? अब तक उनके बीच नयेपन के झिलमिल परदे पड़े हैं। इन्हीं परदों को हटाने का यह दिन होता है, पर अनुराग इससे वंचित हो रहा है। न चाहते हुए भी वैसा करना पड़ रहा है उसे। न करे, यह हो नहीं सकता। आलोक उसका सहपाठी ही नहीं, बुरे-भले का साथी रहा। कभी अनुराग को यह महसूस ही नहीं होने दिया कि वह घरवालों से अलग है। अनुराग के सिर में दर्द हो तो आलोक का मुंह ऐसे हो जाया करता है जैसे उसे बुखार चढ़ आया हो। और आज अनुराग का दायित्व उसके सामने है।

आलोक भी अकेला रहता है इस शहर में। माता-पिता बचपन में ही गुज़र गए थे। सौतेले बड़े भाई ने मेडीकल में दाखिला दिलवाकर कह दिया कि पढ़ाई के लिए खर्च नहीं है। आलोक ने ट्यूशन कर-करके डाक्टरी पास की। एक तरह से परिवार के नाम पर अनुराग ही सब कुछ। एक बार कहा भी था, 'मेरे कौन हैं? तुम हो! पर ज़िन्दगी बिता देने के लिए किसी एक का साथ ही काफी होता है।'

और आज वही आलोक अस्पताल में है। डाक्टर मदान कहते हैं कि हालत खराब है और अनुराग रंगीन रात में भटका रहे! ना। यह नहीं होगा।

वह चल पड़ा था अस्पताल। अंतर्द्वन्द्व से घिरा। अचला ने क्या सोचा होगा? वह इस तरह उड़ती-उड़ती बात कह आया, जैसे अचला से औपचारिक-सी भेंट है। 'आज नहीं मिल पाऊंगा' के भाव में किसी मिलनेवाले से क्षमा मांग ली जाए—कुछ इसी तरह तो कहा था अनुराग ने!

होना यह चाहिए था कि वह उसे बताता कि कैसी विचित्र स्थिति आ पड़ी है। आलोक बीमार है।

पर नहीं बताना था। ऐसा कहने का अर्थ होता मूर्खता। वह क्या सोचती? आलोक और अनुराग के बीच कितने प्रगाढ़ संबंध हैं, अभी अचला क्या जाने? फिर इस सलोनी रात में दुःखद दुर्घटना की कहानी सुनाना भी कितना भद्दा लगता! ऐसे जैसे शहनाई में मातमपुरसी की धुन। अच्छा ही किया, जो अचला को नहीं बताया। अस्पताल से जल्दी छुट्टी पाकर अचला को मना लेगा!

पर अस्पताल से जल्द मुक्त हो सका तभी ना! डाक्टर मदान ने जिस स्वर में कहा है, वह स्वर कह रहा है कि जल्दी मुक्ति कठिन। फिर अनुराग स्वयं डाक्टर है। जानता है कि आलोक को गंभीर चोटें आई हैं। एकदम माथे से लेकर सिर के ऊपरी हिस्से तक चोट लगी थी।

चोट की पूरी कहानी सुनने को नहीं मिली। वह मौका भी तो कैसा बेढब और जल्दबाज़ी से भरा रहा! उसकी इच्छा तो हुई थी, विवाह कैंसिल कर दे! अनायास ही अनुराग उस दिन की घटना के स्मरण में डूब गया था...

वह दिन! सुखद और दुःखद का विचित्र संयोग! सुबह सवेरे

अनुराग को घर से टेलीग्राम मिला था—'कम सून ! मैरिज फिक्स्ड ट्वंटीयथ दिसम्बर।'

उस दिन १८ दिसम्बर थी। तार पाकर कुछ झल्ला उठा था अनुराग। अजीब झक्की लोग हैं। शादी अनुराग की हो रही है और इस तरह खबर दी है, जैसे सेहरा लेकर सिर पर बांधे और फेरों में जा खड़ा हो। बस, इतना संक्षिप्त-सा वक्त। यह विवाह हुआ या नाश्ता करना हुआ।

पर झल्लाकर भी क्या होता ! जल्दी ही प्रोग्राम बनाने पड़े। जल्दी-जल्दी कपड़े बदले। कीर्तन की तरह प्रोग्राम बनाया। किस-किसको खबर देनी है। किस-किसको आमंत्रित करना है। क्या-क्या खरीदना है, आदि⋯

सबसे पहले आलोक को खबर देनी थी। उसके पड़ोस में फोन है। फोन कर दिया था। वह इस तरह मदद करेगा, जैसे उसके अपने घर में शादी होनेवाली हो। फोन पर जैसे ही आया, अनुराग ने आदेश छोड़ दिए थे, 'जल्दी आ जाओ। मेरी मैरिज २० को है और कल ही रवाना होना पड़ेगा।'

'ओ० के० !' वह बोला था, 'बस, पांच मिनट में तुम्हारे पास पहुंचता हूं !'

अनुराग ने सोचते-सोचते एक गहरी सांस ली। पछतावे से घिर गया। काश ! उतनी अफ़रा-तफरी में आलोक से न कहा होता⋯और वह होनी टल जाती !

वह बुरा क्षण !⋯

फोन आया। अनुराग कुछ झल्लाते हुए उठा। एक-एक मिनट कीमती है और जाने किसने पांच-दस मिनट खराब करना तय कर लिया।

'हैलो।'

'हां। मैं डाक्टर मदान बोल रहा हूं। अनुराग⋯'

'जी, मैं अनुराग ही हूं।'

'ओह ! एक बुरी खबर दे रहा हूं। आलोक को अभी-अभी यहां लाया गया है। ऐमरजेंसी वार्ड में है।'

क्या हुआ उसे ?' चीख पड़ा था अनुराग।

'ऐक्सीडेंट ! किसी ट्रक से…'

पर डाक्टर मदान की पूरी बात नहीं सुनी थी अनुराग ने। फोन काटा और उन्हीं कपड़ों में अस्पताल चल पड़ा था।

ऐमरजेंसी वार्ड में था आलोक। ऑपरेशन टेबल पर। लोहे का एक बड़ा टुकड़ा पेट में समा गया था और ट्रक के बम्पर से सिर खुल गया था। आंखों में भी चोट पहुंची थी। अनुराग के पहुंचते-पहुंचते उसके मरहम-पट्टी हो चुकी थी। बेहोश था। अनुराग ने देखा था कि उसका पूरा चेहरा पट्टियों से भरा हुआ था। सीना और पेट पट्टियों से कसे हुए थे।

उसे खून दिया गया था। डाक्टर मदान ने कहा था, 'अभी खतरे में ही है।'

डाक्टर होते हुए भी अनुराग बच्चों की तरह बिलख पड़ा। उसने डाक्टर मदान के दोनों बाजू भावावेश में पकड़ लिए थे, 'इसे बचा लीजिए सर !…किसी भी तरह इसे…'

'बचपना नहीं करते, अनुराग ! तुम समझदार हो। डाक्टर हो। अच्छी तरह जानते हो कि डाक्टरों की ताकत कहां तक होती है।'

अनुराग को रुकना पड़ा था। जानता है कि डाक्टरों की ताकत कहां तक होती है। फिर डाक्टर मदान ने मेडीकल कालिज में दोनों को पढ़ाया है। बहुत मोह है दोनों से। अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

डाक्टर मदान उसे अपने कमरे में ले गए थे। बड़बड़ाते हुए, 'कहते हैं कि सड़क पर बहुत फास्ट साइकिलिंग कर रहा था। मेरी समझ में नहीं आता कि यह पागल किसलिए इतना तेज दौड़ा जा रहा था ?'

अनुराग ने अपराधी-भाव से गरदन झुका ली थी। जी हुआ था कि चीखकर कह डाले—उसीके लिए !

पर नहीं कहा। कह नहीं सका। कायर !

डाक्टर मदान कहते रहे थे, 'बिलकुल ही पागल है। पर फिलहाल इसकी जान बचाना ही कठिन हो गया है।'

सारे दिन अस्पताल में ही बैठा रहा था वह। हर घंटे खबर लेता। पूछता। प्रार्थना करता।

पूरे छः घंटे होश नहीं आया था आलोक को। इन छः घंटों में पल-पल अनुराग अपराध-भाव से ग्रस्त होता गया। आलोक की

यह स्थिति सिर्फ अनुराग के कारण हुई। वह जानता है कि आलोक सिर्फ उसीसे समाचार पाकर दौड़ा चला आ रहा होगा और···

लानत है इस शादी पर ! आत्मग्लानि से भरा हुआ अनुराग सोचता रहा था।

शाम को आलोक को होश आया। डाक्टर मदान बोले थे, 'अब उम्मीद की जा सकती है।'

'इसका मतलब है कि मैं उससे मिल सकता हूं, सर ?'

'नहीं। कुछ घंटों बाद।' डाक्टर मदान ने कहा था, 'बट नाउ ही इज़ आउट आफ डेंजर !'

मन मसोसकर बैठ गया था अनुराग। ज़्यादा कह नहीं सकता। डाक्टर मदान डांट देंगे—डाक्टर होकर भी यह नहीं समझ सकता कि पेशेंट से कब बात की जानी चाहिए, कब नहीं ?

रात ग्यारह बजे डाक्टर मदान ने स्वीकृति दी थी। 'हां, अब तुम चाहो तो मिल सकते हो।'

आलोक के कमरे में पहुंचा था वह। देर तक देखता रहा था उसे। उसकी आंखों पर पट्टियां थीं। आंखों पर ही क्यों, पूरे चेहरे पर। सिर्फ होंठों और नाक की जगह खाली।

वह बुदबुदाया था, 'सिस्टर !···'

नर्स पास आ गई थी, 'यस डाक्टर !'

'अनुराग आया था क्या ?' उसने कराहते हुए पूछा था।

और नर्स डाक्टर अनुराग की ओर देखने लगी थी। इस तरह जैसे पूछ रही हो कि क्या उसे बता दिया जाए कि वह उसके पास ही खड़ा हुआ है।

पर अनुराग ने पहल की, 'हां, मैं तुम्हारे पास ही हूं, आलोक !' वह उसके करीब झुक गया था। उसने देखा कि आलोक के होंठों पर फीकी-सी हंसी की किरण उभरी···अनुराग ने गहराई तक देखने की कोशिश की। क्या वह हंसी ही है ? चेहरा इस तरह ढंका हुआ है कि वह हंस रहा है या रो रहा है, एकाएक समझा नहीं जा सकता।

'तुम कब आए ?' वह पूछ रहा था।

'खबर मिलते ही आ गया था।' अनुराग ने उत्तर दिया।

'मुझे दुःख है यार···' उसने कहा, 'मैं इस मौके पर तुम्हारी मदद करने लायक ही नहीं रहा हूं।'

'फारगेट दैट !' अनुराग ने कहा, आगे क्या कहे, सोच नहीं पाया।

आलोक चुप हो गया था। थोड़ी देर बाद डाक्टर मदान आ पहुंचे। कहा था, 'अब उसे रेस्ट करने दो।'

अनुराग बाहर चला आया। वक्त ज्यों-त्यों कटता रहा था। अनुराग हट नहीं सका था वहां से। दूसरे दिन की सुबह तक आलोक कुछ स्वस्थ हुआ, पर पट्टियां चढ़ी रहेंगी। डाक्टर मदान ने कहा कि कई पट्टियों को उतरते-उतरते कई दिन लग जाएंगे। सुबह आलोक ने फिर याद किया था उसे। अनुराग सामने, 'मैं यहीं हूं।'

डाक्टर मदान पास ही खड़े थे। बोले, 'अनुराग रात को भी यहां से नहीं गया था।'

आलोक ने सुना। कुछ चिन्तित होकर बोला था, 'क्यों? गए क्यों नहीं? आज तो तुम्हें सारी तैयारी करके चले जाना है?'

'सोचता हूं, कैंसिल कर दूं। तुम अच्छे हो तो...।' अनुराग बोला था।

'न-न, यह क्या बचपना है? तुम जाओ।' आलोक ने कहा था, 'इस तरह काम बिगाड़े जाते हैं भला! मैं ठीक हूं। अब डर नहीं।' उसने डाक्टर मदान को सम्बोधित किया था, 'सर! आप समझाइए ना इसे। अब मैं बिलकुल ठीक हूं। आज इसे घर चले जाना चाहिए। इसकी मैरिज है कल!'

डाक्टर मदान ने आश्चर्य व्यक्त किया, 'ओह!...' फिर वह अनुराग से बोले थे, 'ठीक ही तो है। तुम्हें जाना चाहिए। अब आलोक बिलकुल ठीक है। चिन्ता की बात नहीं।'

और अनुराग कुछ कह नहीं सका था। आलोक उसे शब्दों से धकेलने लगा। एक तरह धकेल ही दिया था। विवाह हुआ। अनुराग खुशियों के बावजूद खुशियों में नहा नहीं सका। सारा समारोह ऐसे ही उसके मन से ऊपर-ऊपर निकल गया, जैसे आदमी जल में डूबे और बिन भीगा बाहर निकल आए।

पत्नी को लेकर यहां चला आया था। माता-पिता चाहते थे कि दो-एक दिन बहू-बेटे वहीं रुकें, किन्तु अनुराग नहीं माना। जिद पकड़ गया कि उसे जाना ही होगा। उसने काम बता दिए थे।

सोचते-सोचते उसने कदम तेज कर दिए थे ।

सोचा था सीधा आलोक के कमरे में जा पहुंचे, किन्तु पहले डाक्टर मदान से मिलना ठीक समझा। अक्सर मरीज़ को नहीं बताया जाता कि उसके मामले में गंभीरता कहां ठहरी हुई है।

डाक्टर उसीकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उसे देखते ही बोले थे, 'आओ।' यह शब्द इस गंभीरता और चिन्ता के साथ कहा गया था कि अनुराग के हृदय में हलचल होने लगी। डर लगा कि कौन-सा दुःखद संदेश सुनानेवाले हैं डाक्टर मदान !

वह नमस्कार करके एक ओर खड़ा हो गया था। डाक्टर मदान एक क्षण चुप रहे, फिर बोले थे, 'आलोक को नहीं बताया है, पर सच तो सामने आएगा ही। हमने बहुत कोशिश की, मगर··· शायद ईश्वर को यही मंजूर था।'

अनुराग उतावला हो उठा। मन हुआ कि मदान साहब से एकदम पूछ ले—क्या बात है ? आप मुझे क्या सुनानेवाले हैं ?··· पर शब्द गले में जमकर रह गए थे। उनके चेहरे की ओर देखता रहा। आतंकित।

डाक्टर मदान ने कहा, 'तुम्हारा मित्र शायद आंखें खो बैठा है।'

अनुराग को लगा कि उसकी आंखों के सामने अंधेरा फैल गया है। एक तरह वही अंधा हो गया है···शब्द अब भी होंठों से बाहर नहीं आए। विश्वास और भय से देखता रहा।

'गहरी चोट थी।' डाक्टर मदान ने कहा, 'मुझे उसी समय लगा था, जिस दिन ऐमरजेन्सी में उसे लाया गया, पर उस समय कुछ कहना ठीक नहीं समझा। दूसरे दिन कह देता, पर मालूम हुआ कि तुम मैरिज के लिए जा रहे हो। सुनकर तुम्हारा भी मूड खराब होता, इसीलिए नहीं बताया। पर आज अपने को रोक नहीं पाया हूं। इसलिए भी कि कल या परसों उसकी पट्टियां खुलेंगी। आशंका छुपाए रखने जैसी तो है नहीं।'

अनुराग क्या कहे—यही नहीं समझ पा रहा था। शिला की तरह स्थिर भाव से बैठा रहा। एक तरह पड़ा रहा।

डाक्टर सान्त्वना देने लगे थे, 'दुःख की बात है, पर निराश

होने जैसी बात नहीं है। ऑपरेशन होगा और मुझे विश्वास है ···ही विल बी ऑलराइट !'

अनुराग देर बाद बोला था, 'यह सब मेरे कारण हुआ, डाक्टर ! सिर्फ मेरे कारण हुआ। मैं किस मुंह से उसका सामना करूंगा ?'

'तुम्हारे कारण ? सो कैसे ?' डाक्टर मदान हैरान हो उठे थे।

अनुराग ने बताया था कि वह केवल उसीके यहां आने के लिए सड़क पर साइकिलिंग कर रहा था। कहते-कहते अनुराग का चेहरा पिट-सा गया था। डाक्टर मदान को लगा था कि यह अपराध-भावना अनुराग को भी अस्वस्थ कर देगी। इसीलिए समझाने लगे थे, 'बेहूदा बात है। इस तरह का कोई न कोई बहाना हर दुर्घटना के साथ जुड़ जाता है। पर इसका अर्थ यह तो नहीं कि तुम अपराधी हो ? ये सब घटनाएं हैं। संयोग। संयोगों का उत्तरदायित्व किसीपर नहीं होता। इन्हीं बातों के लिए बूढ़े-पुराने कहते हैं—होनी थी। होनी ही थी। इसमें अपने-आपको दोषी मानने की कोई तुक नहीं।'

पर अनुराग को यह सान्त्वना बहुत पटी नहीं। अपराध-भावना घर कर गई थी मन में। इस तरह नहीं निकलेगी। उस दिन तक नहीं निकलेगी, जब तक कि आलोक को फिर से रोशनी नहीं मिल जाती। पर दोबारा रोशनी मिलने की कल्पना, उस समय तक केवल कल्पना है, जब तक घट न जाए। इस समय है सिर्फ एक क्रूर और भयावना सच ! और इस सच के लिए अपराधी है अनुराग। कहने लगा था, 'मैं उसका सामना नहीं कर सकता, सर !···जो भी हो, मैं उसे नहीं देख सकूंगा।'

'यह क्या पागलपन है ?' डाक्टर मदान ने बुजुर्गाना ढंग से उसे डांट दिया था, 'एक जिम्मेदार आदमी होकर यह चाइल्डिश हरकत करोगे तो क्या ठीक लगेगा ? समझदारी से काम लो। तुम्हारे अतिरिक्त उसका यहां है ही कौन ! दिन में कम से कम दस बार तुम्हें पूछता है। अगर तुम ही उससे किनारा कर जाओगे, तो वह सचमुच टूट जाएगा।'

'मगर सर···'

'अगर-मगर कुछ नहीं।' मदान साहब कठोर स्वर में आदेश

देने लगे थे, 'मैंने तुम्हें इन ऑड अवर्स में बुलाया ही इसलिए है कि सारी हालत बता दूं। तुम कालिज में भी इस तरह रहे हो, जैसे सगे भाई रहते हैं। फिर यह कतराना तो पराये आदमी से भी नहीं होता, अनुराग ! तुम तो मित्र हो। इस समय तो तुम्हारा कर्तव्य कुछ और ही है।'

अनुराग निरुत्तर हो गया।

डाक्टर मदान ने कहा, 'मैंने तुम्हें इस विश्वास के साथ बुलाया है कि तुम उसे सान्त्वना दोगे। तुम्हारा प्यार और सहारा पाकर वह उस आशा पर विश्वास कर सकेगा, जो मैं दिलानेवाला हूं। दूसरी बार रोशनी मिलने का विश्वास ! एक डाक्टर के नाते भी तुम्हें मरीज़ की दवा से ज्यादा इस बात का ध्यान रखना कहीं ज़रूरी है कि उसकी साइकलोजी क्या है।'

अनुराग सुनता गया था। डाक्टर मदान सिर्फ डाक्टर ही नहीं, कालिज के अध्यापक और उससे भी ज्यादा एक स्नेहिल बुज़ुर्ग हैं। उनके आदेश की अवहेलना करने का साहस किसी छात्र में नहीं। अनुराग कैसे कर सकता है !

मदान साहब कह रहे थे, 'कल सुबह मैं तुम्हें फोन करूंगा। वह समय बता दूंगा, जब उसकी पट्टियां खुलेंगी। पर मुझे विश्वास है कि तुम उस समय मौजूद रहोगे। उसकी आंखों के सामने अंधेरा फैल जाएगा, तुम उसे अपने प्यार और दोस्ती के विश्वास से रोशनी दोगे। तुम उसे ज़िन्दा रहने की कीमत बताओगे। तुम उसे टूटने नहीं दोगे !...'

अनुराग चुप है।

डाक्टर कहते हैं, 'यह सब तुम्हें तब तक करना होगा, जब तक कि हम उसका दूसरा ऑपरेशन सक्सेसफुली नहीं कर देते। इस बीच तुम्हें हिम्मत से काम लेना होगा। वह एक तरह से तुम्हारे लिए एक भोला और मासूम बच्चा रह गया है। इससे ज्यादा कुछ नहीं। तुम्हें उसे उसी तरह ट्रीट करना होगा।'

अनुराग ने सारी बातें गले उतार लीं। सब कुछ इस तरह हुआ था जैसे घोटकर पिलाया गया हो। फिर डाक्टर ने कहा था कि वह चाहे तो आलोक से मिल सकता है। नर्स से पुछवाया गया था, 'क्या वह जाग रहा है?'

नर्स ने आकर खबर दी, 'यस डाक्टर !'

'अनुराग को वहां ले जाओ।' डाक्टर मदान बोले, साथ ही अनुराग को हिदायत दे दी थी, बी केअरफुल ! तुम्हारी ओर से ऐसी कोई कमज़ोरी नहीं होनी चाहिए, जो पेशेंट को शॉक दे। अब तुम जा सकते हो।'

अनुराग उठा। नर्स के साथ हो लिया। थोड़ी देर बाद वह उस विशेष कमरे में था, जिसमें आलोक पड़ा हुआ है। उसी तरह पट्टियों से लिपटा हुआ। अन्तर सिर्फ एक ही है। चेहरे पर उतना पीलापन नहीं है, जितना छोड़ गया था। वह चुप खड़ा हुआ उसे देखता रहा था। डाक्टर मदान ने जो कुछ कहा है, उसके अनुसार आलोक की आंखों से पट्टियां उतर जाने का भी क्या अर्थ है ! वह इसी तरह लाचार पड़ा रहेगा। आहट होगी और वह चेहरा मोड़ा करेगा। इससे अधिक कुछ नहीं !

और दूसरे ही क्षण अनुराग को लगा था कि आलोक उठ खड़ा हुआ है। आलोक नहीं, एक अंधा लाचार। उसके हाथ में सफेद छड़ी है। वह आहट पर चौंककर छड़ी इधर-उधर घुमाता है, फिर पूछता है—कौन ?

इस समय भी पूछ रहा है, 'कौन ?'

'मैं हूं। अनुराग।'

'तुम इस वक्त ?' आलोक ने अविश्वास से पूछा, 'इस वक्त यहां क्या कर रहे हो ?' इससे पहले कि अनुराग कुछ कह पाए, वह बड़बड़ाने लगा था, 'सिस्टर ! सिस्टर !'

सिस्टर उसके करीब झुकी, 'यस !'

'क्या बजा होगा इस समय ?' उसने कुछ बेचैनी के साथ पूछा था।

सिस्टर ने कलाई-घड़ी पर नज़र डाली, पर अनुराग ने दबे कदम आगे बढ़कर उसे रोक दिया—संकेत से सिर हिलाकर फिर स्वयं बोला था, 'ग्यारह बजे हैं।'

'ग्यारह ! इम्पासिबल। इस समय मेरा खयाल है कम से कम एक बजा होगा।' आलोक ने कहा।

सिस्टर ने अनुराग की ओर देखा—आलोक का अनुमान गलत नहीं है। एक बजने को ही है। तब झूठ क्यों बोला है अनुराग ?

और अनुराग झूठ क्यों बोला है, जानता है। वह नहीं चाहता कि आलोक कहे—तुम बीवी को छोड़कर यहां चले आए हो !

बेवकूफ कहीं के !

आलोक के होंठों के पास असमंजस घिर आया था। 'आंखें भी खूब चीज़ हैं।' वह बोला, 'आदमी का रहना न रहना एक-सा हो जाता है। मुझे ही लो, ग्यारह पर एक देख रहा हूं। है ना मूर्खता !' धीमे स्वर में वह हंसा था।

अनुराग कांप गया। क्या होगा इसे, जब मालूम होगा कि वह अपनी आंखें खो चुका है ! उत्तर देते न बना।

आलोक कहने लगा था, 'अनुराग ! तू अजीब झक्की है यार ! नई शादी हुई है और भाभी को छोड़कर यहां चला आया ? अब जा, मैं बिलकुल ठीक हूं। हम सुबह मिलेंगे।'

अनुराग नहीं गया। जा नहीं सकता। वह उसके सिरहाने बैठ गया था।

'अरे-रे, तू तो बैठ रहा है !' आलोक फिर बोला था, 'तुझे जाना चाहिए।'

'चला जाऊंगा।' अनुराग ने लापरवाही से कहा, 'अभी तो ग्यारह ही बजे हैं।'

आलोक चुप हो गया।

अनुराग भी चुप रहा।

थोड़ी देर बाद आलोक ने कहा था, 'डाक्टर मदान कहते हैं कि कल या परसों पट्टी उतर जाएगी।' उसकी आवाज़ में खुशी थी, 'सोचता हूं, सबसे पहले भाभी को देखूं !'

अनुराग ने फिर से लड़खड़ाहट सही। डाक्टर मदान ने कहा कि अपने-आपको सम्हाले रहना है। कैसे सम्हाला जा सकेगा ? अनुराग का जी हुआ कि ज़ोर-ज़ोर से रो पड़े। कहे—झूठ है ! सब झूठ है ! सच हैं सिर्फ आंखें !

आलोक कह रहा था, 'मैंने तो उस दिन तुम्हारा फोन पाकर जाने क्या-क्या प्लान किया था, पर सब मिट गया। सोचता था, तेरे साथ-साथ रहूंगा। अपने हाथों तेरे माथे पर सेहरा बांधूंगा। अपनी हथेली बिछाकर तुझे घोड़े पर चढ़ाऊंगा। पर...'

अनुराग कुछ कह नहीं सका।

'तू चुप क्यों है यार ? कुछ बोल ना !' आलोक ने कहा, 'छः-सात दिनों से पड़ा हूं। लगता है कि सारा जिस्म जाम हो गया है। यारों की सूरत देखने को तरस गया हूं।'

अनुराग ने पूछा, 'क्या बोलूं ?'

'क्या नहीं बोल सकता ?' आलोक ने कहा, 'यही बोल कि शादी कैसी रही ? भाभी कैसी है ?···खैर, भाभी को छोड़। उसे तो मैं कल देख ही लूंगा। तू तो यार कवि है। कुछ सोच। बोल कुछ !'

'शादी बहुत अच्छी रही।' वह बोला था।

आलोक हंसा। वही कमज़ोर हंसी, 'वह तो जानता हूं। कुछ और बता यार। कुछ सालियों-वालियों के बारे में। अपने लिए तो वही इण्टरटेनिंग बातें हैं।'

अनुराग फिर से जाम हो गया। पुराने ताले की तरह। ज़ंग-लगा ताला। सोचने लगा कि आलोक की यही कमज़ोर हंसी कितनी अविश्वसनीय लगती है ? आलोक जब हंसता तो क्लास दहल जाया करती थी। लड़कियां कहा करती थीं—यह कम्बख्त हंसता है तो लगता है भूकम्प आ गया है। और यह हंसी···अभी-अभी अनुराग को लगा था जैसे चूहा मिनमिनाया हो।

'अनुराग ?' वह बोला।

'हां।'

'यार, कल तुझे कुछ वक्त निकालना होगा।'

'मैं तो तुम्हारे ही पास हूं।' अनुराग ने कहा, 'क्या बात है ?'

'कल उसे चिट्ठी लिखनी होगी ना ! बहुत दिनों से चुप हो गया हूं। न जाने क्या सोचती होगी ?' आलोक सहसा भावुक हो उठा।

'मैंने तो तुमसे उसी दिन कहा था, लिखे देता हूं, पर तुम माने ही नहीं।' अनुराग ने उत्तर दिया।

'उस दिन ठीक न होता। फर्ज़ करो, वह सुनकर चली ही आती ?' आलोक ने कहा, 'मेरी यह हालत देखकर कितनी परेशान होती ?'

अनुराग ने कुछ नहीं कहा। सोचता रहा, कल पट्टियां खुलने के बाद इस तरह सहज होकर बोल सकेगा अनुराग ? असंभव ! अनुराग के बदन में एक कौंध बिखर गई। कौंधता हुआ विचार। कल क्या होगा ?···

आलोक कह रहा था, 'कल तो लिखा जा सकता है।'

'पर लिखा तो पहले भी जा सकता था।' अनुराग बोला, 'यही क्या ज़रूरी था कि उसे खबर दी जाए कि तुम इस हाल में हो!'

'नहीं। ठीक नहीं था।' आलोक ने गंभीरता से उत्तर दिया, 'ऐक्सीडेंट के दो दिनों तक मैं खुद ही अपनी लाइफ के बारे में श्योर नहीं था। इसीलिए सोचता था कि बेकार बात क्यों बढ़ाई जाए! तोड़ दो। पर अब जी गया हूं और लगता है कि अब फिर से बात बढ़ाई जा सकती है।'

अनुराग चुप रहा।

'क्या सोचने लगे?'

'कुछ नहीं।'

'डाक्टर मदान ने कुछ बताया, कल किस समय पट्टियां खोलेंगे?' आलोक ने पूछा।

'नहीं।' अनुराग ने कहा, 'कह रहे थे कि मुझे फोन कर देंगे।'

आलोक थोड़ी देर चुप रहा। अनुराग कल की आशंका में डरता-डरता न जाने क्या कुछ सोचता रहा। आलोक ने कहा, 'यार, कभी-कभी लगता है कि हम बेकार ही जी रहे हैं। अपने सोचों के अनुसार जी ही नहीं सकते। उस दिन सोचा कुछ था, और हुआ कुछ! क्या मतलब है इस जीने का?'

अनुराग खामोश।

आलोक कहता गया, 'सब कुछ दूसरे की इच्छा पर चलता है। बच्चे थे, माता-पिता के कहे पर चलते रहे, बड़े हुए कालिज का वक्त और प्रोफेसरों के इन्स्ट्रक्शन्स चलाते रहे; अब जब समझा कि इण्डिपेण्डेण्ट हो गए हैं तो पाया कि वहम है। सच तो यह है कि हमें हर हाल में कोई न कोई चलाता है। हम पुरज़े हैं। दैट्स आल!"

'हां, शायद।' अनुराग बोला था।

'शायद नहीं। एकदम निश्चित। बिलकुल पुरज़े।' आलोक बड़बड़ाता रहा···जाने कहां-कहां का दर्शन झाड़ता रहा था। अनुराग हूं-हां करके सुनता गया। पर क्या सचमुच कुछ सुन पाया था। शायद नहीं। वह सिर्फ कल की आशंका में डूबा हुआ था। अनिश्चित घटनाओं को जन्म देनेवाला कल कैसा होगा? उस

समय अनुराग स्वयं को कैसे थामेगा ? आलोक की हालत क्या हो जाएगी ?···

रात बीतती रही थी। भूल गया था अनुराग कि घर पर एक सेज लगी हुई है। जीवन का सबसे कीमती दिन उसका इन्तजार करता-करता चुक रहा है···

फिर चुक गया था वह कीमती दिन···

नर्स आई थी, 'दवा लीजिए।'

आलोक चौंका, 'दवा तो सुबह चार बजे···'

'और इस समय क्या बजा है ? नर्स ने तर्क किया, 'मालूम भी है आपको ? चार बज चुके हैं !"

दोनों एकसाथ बड़बड़ाए थे—'चार ?'

'हां, चार !'

अनुराग के सामने अचला उभर आई थी। ओह ! क्या सोचती होगी ?

और दवा का घूंट निगलने के फौरन बाद आलोक बड़बड़ाया था, 'तू अजीब आदमी है ! इतनी रात हो गई और यहां जमा हुआ है। जा, यहां से ! जा !'

'जाता हूं।' अनुराग उठ पड़ा था। जाते-जाते बोला था, 'मैं कल···'

'अरे, हो गया कल !" आलोक को अपने पर ही झल्लाहट आने लगी थी। आंखों पर पट्टी क्या बंध गई है, दिमाग पर भी पट्टी बंध गई है। इतनी देर व्यर्थ की बक-बक करके उसे रोक रखा था।

कमरे में शान्ति फैल गई।

आलोक ने थोड़ी देर बाद पूछा था, 'सिस्टर !'

सिस्टर एक ओर पड़ी आरामकुरसी में उनींदी-सी लेटी थी। बोली, 'यस !'

'वह गया ना ?'

'हां !'

'मैं भी बहुत बूद्धू हूं, सिस्टर ! आज उसकी सुहागरात थी और मैंने···' आलोक का स्वर विषाद से भर आया।

सिस्टर लगभग नींद में। लगा कि शहद की एक बूंद मुंह में गिरी है, पर नींद निगल गई उसकी मिठास।

आलोक सोच रहा था—अब सवा चार बजे होंगे। सुबह। वह दिन शुरू हो चुका है, जब उसकी पट्टियां खुल जाएंगी। काश, आज के दिन को डाक्टर मदान न टालें!

पर शायद नहीं टालेंगे। कह रहे थे कि पचहत्तर प्रतिशत आज का ही दिन तय है। पट्टियां ज़रूर खुलेंगी। अनुराग होगा। पट्टियां खुलने के फौरन बाद ही आलोक चिट्ठी लिखवाएगा।

क्या लिखवाएगा? इतने दिनों जो मौन रखा है, उसका जवाब क्या देगा? लिख देगा कि बुखार था। अब ठीक हूं। इसीलिए पत्रोत्तर में देर हुई। इस बीच उसकी दो चिट्ठियां आ चुकी हैं। लिखवा तो पहले ही देता, पर अनुराग गया हुआ था। और तो और चिट्ठियां खुलवाई भी नहीं हैं। खुलवाता कैसे? अनुराग के अलावा किसीसे वह न इस तरह के पत्र खुलवाता है, न उत्तर दिलवाता है। किसीसे ज़िक्र करना भी ठीक नहीं समझता।

आंखों पर पट्टियां चढ़ी होने के बावजूद आदमी की कल्पना कितनी ताकतवर होती है? सब कुछ देख सकता है। सारे चेहरे याद होते हैं।

सरमा भी खूब याद है। उसके शब्द, उससे भेंट, उससे बातें···

आलोक जागता रहा था। ऐक्सीडेंट के बाद अपने से ही टूट गया था आलोक। सोचा था कि सरमा को भी तोड़ देगा। ज्यादा याद करना ठीक नहीं। पत्र तो अनुत्तरित ही रहने चाहिए। वह नहीं चाहता कि मामला आगे बढ़े और सरमा को उसकी मौत झेलनी पड़े! सरमा के मन में जो कुछ रोप चुका था, या अनायास ही रुप गया था, उसे वहीं दबाकर मसल देना ज़रूरी था···वह मर रहा है, पर नहीं सोच सकता कि सरमा मरे!

पर अब जब सांसें डूबते-डूबते उबर आई हैं, तब सरमा को लेकर फिर से प्यार का कुचला हुआ अंकुर हरिया गया है। एकदम उस याद से, जब अंकुर जनमा था···

अंकुर।

कालिज-टूर पर गया था दल। बेंगलौर। स्थानाभाव के कारण बेंगलौर यूनिवर्सिटी ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के छात्रों के लिए कई होस्टलों में जगह निकाली थी। लड़के-लड़कियां बिखर गए थे।

इसी बिखराव में छः छात्रों का दल, जिसमें आलोक और अनुराग भी थे, एकदम छात्रावास के सामने मैदान में ठहराया गया था। मैदान में कुछ टेण्ट लगाकर।

लड़के-लड़कियां कुछ दलबद्ध होकर इस तरह बिखरे कि ठहरने की सारी अवधि के लिए ही बिखर गए। जितने ग्रुप थे, वही यहां-वहां अलग-अलग घूमने लगे। आलोक का ग्रुप भी इसी तरह घूम रहा था।

बेंगलोर खूबसूरत और सस्ता शहर। दक्षिण भारतीय खाने। किसी छोर में अत्याधुनिक रहन-सहन और किसीमें प्राचीनतम भारतीय रीति-रिवाज। हर पुराने और बदलते हुए हिन्दुस्तानी नगर की तरह बेंगलौर का भी अपना रंग।

इसी रंग में घुले-मिले घूम रहे थे वे लोग। वृन्दावन गार्डन की उस शाम को आलोक कभी नहीं भूलेगा। वहीं तो मिली थी सरमा। तब सोचा था कि सिर्फ मुकाबलेबाज़ी हो रही है; पर ज़िन्दगी इस तरह अटककर रह जाएगी, कौन जानता था?

उस शाम वे जब टोली बनाए हुए गार्डन में घुसे, तभी आलोक के सामने सरमा सबसे पहले आ पड़ी थी। वह भी रोचक किस्सा है। न आलोक भूल पाएगा कभी, और न सरमा...

शायद साथियों में से कोई भी नहीं।

हुआ यह कि लॉन पर बढ़ते हुए झाड़ियों के बीच निकले पैर को नहीं देख पाया था आलोक। टकरा गया था। और जो उछलकर गुलांट खाई तो सम्हल ही नहीं पाया। चारों खाने चित!

साथी चौंके। अनुराग ने उठाने के लिए हाथ बढ़ाया और तभी उठी एक झिलमिलाती हुई हंसी। ऐसे जैसे रेशमी परदे के कोनों पर लगे घुंघरू हंसे हों...

कपड़े झाड़कर उठते हुए बड़ी शर्मिन्दगी के साथ आलोक ने हंसी की दिशा में देखा था। वे चार थीं। हंसे ही जा रही थीं। एकाएक अनुराग गरमा गया था, 'मेहरबानी करके दांत मत निकालिए, मैले हो जाएंगे।'

एक लड़की आगे बढ़ी थी, 'हम कुल्ला कर लेंगी।' फिर हंसी।

और आलोक देख रहा था उस लड़की की ओर, जिसके पैर से टकराया होगा। वह अब भी धरती पर बैठी हुई थी। पैर सह-

लाती हुई। यही थी सरमा। पर उस समय अपरिचिता। आलोक पर नहीं रहा गया। उसके करीब पहुंचा। झुका और पूछा, 'क्षमा कीजिएगा…'

'थैंक यू।' लड़की कुछ रुष्ट होकर बोली।

इस बीच उसकी साथिनें करीब आ पहुचीं। 'दोबारा गिरेंगे क्या ?' एक ने फिर शरारत की।

'धक्का मारकर गिरा दीजिए।' आलोक ने कहा।

'यही चाहते हैं ?' एक लड़की, जो शायद ज्यादा ही शरारती थी, लगता था सचमुच धक्का मारने के मूड में आ गई है।

'जी हां।' अनुराग भी पास जा पहुंचा। उसके पीछे-पीछे अन्य। उसने कहा, 'पर एक शर्त है। धक्का ऐसा मारिएगा कि सब रंग एक हो जाएं !'

'क्या मतलब ?' एक लड़की कुछ झल्लाई।

'मतलब तो इनसे पूछिए, जो कहती हैं कि धक्का मारा जाए।' अनुराग बोला।

'ऐ मिस्टर ! होश के साथ बातें करो।' वह लड़की सहसा गंभीर हो गई।

'होश तो उड़ चुके हैं साहब !' अनुराग ने कहा, 'एक धूल झाड़ रहा है, दूसरा पैर सहला रहा है।'

चारों लड़कियां तनकर खड़ी हो गईं। इधर पांचों लड़के उनके सामने तन गए। आलोक उसी लड़की के पास खड़ा था, जिसके पैर में चोट लगी होगी। वह इस समय भी चोट सहला रही थी।

लड़कियों में से एक बोली, 'आप जानते हैं कि आप क्या बक रहे हैं ?' यह सवाल अनुराग से किया जा रहा था।

'आप भी नहीं जानतीं शायद कि आप क्या कह रही हैं !' अनुराग बौखलाया।

एक लड़की ने कहा, 'अभी आप सबके-सब इसी हाल में नजर आएंगे।'

'भगवान आपका भला करे !' एक लड़का बोला।

'आप लोग बदतमीज़ हैं। एक तो सरमा के पैर में चोट पहुंचा दी और ऊपर से छेड़खानी कर रहे हैं !' एक और लड़की गुर्राई।

'आप भी कम बदतमीज़ नहीं हैं, मिस साब। एक तो आपने

उसे गिरा दिया, ऊपर से दांत निकालती हैं।' एक और लड़के ने कहा।

'आप चले जाइए यहां से!'

'आप कहनेवाली कौन होती हैं? यह पब्लिक प्लेस है।'

'आपको बताया जाए कि पब्लिक प्लेस क्या होता है?'

'बताइए!...'

'ईडियट!'

'आप भी।'

चख-चख ज़ोर पकड़ गई। पर आलोक और सरमा ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। आलोक कह रहा था, 'सच मानिए, मुझे बिलकुल नहीं दिखा...आई एम वैरी सौरी!'

'कोई बात नहीं। मैं जानती हूं कि आप ठीक कह रहे हैं।'

पिंडली पर एक नील उभर आया था। गोरे रंग पर एक नीला गोदने के निशान जैसा। सरमा इसे सहला रही थी।

आलोक भावावेश में बिलकुल बचकानापन कर बैठा था। झुका, बैठ गया। एकदम सरमा की पिंडली पर हाथ ले गया। सहलाने लगा। सरमा ने सकपकाकर पैर खींच लिया। आलोक को भूल मालूम हुई। डरकर सरमा की ओर देखा फिर कहा, 'ओह! मैं बिलकुल बेवकूफ हूं।'

वह मुसकराई।

वह ज़्यादा ही शरमा गया।

वह उठने की कोशिश करने लगी। आलोक ने देखा, वह उठ नहीं पा रही थी। सकुचाते हुए पूछा, 'बुरा न मानें तो मैं...' उसने हाथ बढ़ा दिए और इससे पहले कि सरमा कुछ कहे, उसने उसके बाज़ू पकड़ उसे सहारा दिया। पर पैर में सचमुच काफी चोट लगी थी। सरमा को काफी सहारा लेना पड़ा। इतना कि चलती चख-चख एकाएक थम गई। लड़के-लड़कियों ने आश्चर्य से उन्हें देखा। वे भी सकपका गए थे। सरमा कह रही थी, 'थैंक यू! बस।...छोड़ दीजिए।'

लड़कियां मुसकराईं।

लड़कों में से एक ने कहा, 'सम्हाल के छोड़ना भाई!'

आलोक को यह फूहड़ मज़ाक अच्छा नहीं लगा। बिगड़ा, 'डाण्ट बी सिली, मनमोहन!'

सरमा ने सहेलियों का सहारा ले लिया था। लड़के चल पड़े। आलोक मुड़-मुड़कर पीछे देखता गया था।

उस भेंट को लेकर आलोक के भीतर रह-रहकर बिजली की तरंगें प्रवाहित होती रही थीं। सरमा को सहारा देते समय उसने उसके गुदगुदे बाज़ू थामे थे, फिर चोट से लाचार होकर सरमा ने अपना पूरा शरीर ही उसपर छोड़ दिया था। उसकी बगलों से लेकर तरेट तक का सारा हिस्सा आलोक से सट गया था और आलोक ने महसूस किया था जैसे वह बादलों को बांहों में भरे हुए आकाश की ऊंचाइयों पर उड़ा जा रहा है···

वह स्पर्श!···वह आवाज़ और वह मुसकान···आलोक कैसे भूल सकेगा?

भूला भी नहीं था। रात देर तक जागता हुआ वह उसी क्षण को बार-बार याद करता रहा था। जी होता था कि फिर से सरमा मिले। पर इस तरह संयोग से मिले चेहरे कैसे मिल सकते हैं? उनके लिए कोई दूसरा संयोग चाहिए।

पर दूसरा संयोग भी आ गया। पहले-पहले आलोक को विश्वास ही नहीं हुआ था कि सरमा ही है। पर सरमा थी। निश्चित। दूसरे ही दिन की बात है।

वह बस के 'क्यू' में खड़ी थी और आलोक वहां से निकला था। ठिठक गया। वह उसकी ओर नहीं देख रही थी।

आलोक एकदम उसकी ओर बढ़ जाना चाहता था, किन्तु थमा रह गया। पहले निश्चित करना होगा कि वही है। किसी और लड़की से जाकर बोल दिया तो लोग क्या कहेंगे? और वह लड़की स्वयं ही क्या सोचेगी उसके बारे में?

नाक-नक्श, बांह और पंजा···हर तरफ गौर किया था। सौ प्रतिशत सरमा। आलोक ने साहस जुटाया। करीब ही जा खड़ा हुआ। दबे स्वर में कहा, 'नमस्ते!'

सरमा ने देखा। चाहा था कि पहचानने से इनकार कर दे, किन्तु वैसा कर नहीं सकी। उस दिन इस युवक ने सहारा ही नहीं दिया था, बल्कि अपने किसी साथी के फूहड़ रिमार्क पर उसे 'सिली' भी कह डाला था। इस तरह किसी भले लड़के को दुतकारेगी नहीं सरमा। उत्तर दिया था, 'नमस्ते।'

आलोक चुप हो गया। अब किस तरह क्या कहा जाए? थोड़ी

देर वे दोनों ही यहां-वहां देखते रहे, फिर आलोक ने पूछा था, 'आपका पैर···'

'अब ठीक है। थोड़ी-सी मोच थी। ठीक हो गई।'

'कल सचमुच मुझसे बड़ी भूल हुई।'

'भूल जाइए उसे।' सरमा ने उसी सौजन्य के साथ उत्तर दिया था।

कैसे भूल जाए आलोक? वही दिन तो है, सरमा की मोच उसके दिल की मोच बन गई है। सरमा को क्या मालूम कि उसने उसे किस तरह बार-बार याद किया है! पर यह सब कहा नहीं जा सकता। कहना कुछ और होगा। वही कहा। बोला, 'आप यहीं की हैं?'

'जी?' सरमा ने समझ लिया था—बात बढ़ नहीं रही है, बढ़ाई जा रही है। पर इस आदमी से बात बढ़ाना भी बुरा नहीं है। सरल भी है, साफ भी।

'मेरा मतलब है कि आप साउथ इण्डियन तो लगती नहीं हैं?' आलोक ने अपना प्रश्न आसान किया था।

'सही समझा है आपने। मैं यूपियन हूं। यहां मेरे मामा-मामी हैं। उन्हींके साथ रहती हूं।'

'मैं भी यू० पी० का हूं।'' आलोक खुश हुआ।

वह भी शायद खुश ही हुई होगी।

इस बार सरमा ने पूछा था, 'आप लोग तो यहां के स्टूडेंट्स हैं नहीं? शायद बाहर से आए हुए हैं?'

'जी हां।' आलोक ने बताया, 'हम दिल्ली यूनिवर्सिटी से हैं।''

सरमा चुप हो गई थी। आलोक फौरन बोला था, 'दिल्ली में अकेला ही रहता हूं मैं। कुछ ट्यूशन्स करता हूं। उन्हींसे पढ़ता हूं।' वह आगे भी कुछ कहता, किन्तु कहते-कहते रुक गया था। लगा था कि मूर्खतापूर्ण ढंग से वह बात करने लगा है, जिसका कोई सन्दर्भ नहीं है।

पर चौंक गई थी सरमा, 'आप अकेले रहते हैं? ऐसा क्यों?'

'मेरे माता-पिता नहीं हैं। बड़े भाई हैं मुरादाबाद में, पर मुझे पढ़ाने लायक आर्थिक स्थिति नहीं है। इसीलिए···'

'ओह!' सरमा ने उसकी ओर सहानुभूति से देखा। ऐसा

लगा जैसे उसमें और आलोक में बहुत साम्य है। माता-पिता के स्नेह से वंचित वह भी है, सरमा भी है। सरमा अपने मामा-मामी की कृपा पर निर्भर है, आलोक अपने पैरों भविष्य की बुनियाद बना रहा है। वही क्षण था शायद, जिसने उन्हें एक-दूसरे के बारे में सहानुभूति से सोचने का मौका दिया। सरमा ने थोड़ी देर बाद बताया था कि उसके मां-बाप भी नहीं हैं।

तभी बस आ गई थी। वे बस में सवार हो गए। सरमा ने पूछा था, 'आप कहां जाएंगे ?'

'कैम्पस तक। वहीं हम लोगों ने अपना तम्बू लगा रखा है।' आलोक ने बतलाया।

'यानी गर्ल्स कालिज के सामने जो दो-तीन तम्बू लगे हुए हैं, उनमें आप ही हैं ?'

'हां।'

सरमा चुप हो गई। तम्बू उसने देखे हैं। कालिज से कुछ आगे चलकर ही सरमा का घर है। रास्ते से आते-जाते इन तम्बुओं को देखा है। तम्बुओं के आसपास घूमते दो-तीन युवकों को भी देखा है। अब मालूम हुआ कि दिल्ली के छात्रों ने वहां अपना घर बना रखा है।

'आप भी वहीं कहीं रहती हैं क्या ?' आलोक पूछ रहा था। वे एक ही सीट पर थे और उनके जिस्म बस के हिचकोले से कभी-कभार टकरा जाते थे। एक मीठी दुलारभरी कसमसाहट उनके भीतर फैल जाती। वे एक-दूसरे को देखते, दृष्टियां झुकाकर किसी नई बात को ढूंढ़ने लगते। सहसा सरमा ने कह दिया था, 'जी हां। आपके तम्बुओं के बहुत करीब ही है मेरा घर।···कभी आइए ना !'

'जी ?' वह चौंक गया। बस का एक झटका लगा। वे एक-दूसरे से मिल गए। सरमा ने अपने-आपको सिकोड़ लिया। शरीर में ही नहीं, शब्दों में भी। कैसी पगली है सरमा! साधारण-से परिचय पर उसे घर आने के लिए कह दिया ! क्यों ?

और आलोक सोचने लगा था—उसे घर आने के लिए कह दिया है। कितनी मीठी लड़की है !

'किस कालिज में हैं आप ?' एकाएक सरमा ने पूछा था।

'मेडीकल कालिज में।' आलोक ने बताया, 'फाइनल है इस साल।'

सरमा ने उसे एक बार फिर से देखा। होनेवाला डाक्टर उसके सामने बैठा है। और वह भी पूछ रहा था, 'आप ?'

'गवर्नमेंट गर्ल्स कालिज में। एम० ए० फाइनल।' सरमा का उत्तर।

'कभी दिल्ली आइए ना ?' वह बोला था।

सरमा को अच्छा लगा। कुछ कहा नहीं।

वे एक ही बस-स्टाप पर उतरे थे। सरमा ने टिकट लिए थे। बोली थी, 'हमें एक ही जगह उतरना है। मैं आपको तम्बुओं तक छोड़ दूंगी।'

'आप क्यों चक्कर खाती हैं ! मैं चला जाऊंगा।'

'चक्कर कहां !' सरमा ने भोलेपन से कहा, "मेरे घर से पांच मिनट का तो रास्ता है। आपको अपना घर भी बता दूंगी।'

वे चलने लगे थे। रास्ते में सरमा ने अपना घर बतला दिया था, 'वह जो सी–फिफ्टी नाइन है ना। वह···जहां बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ है। वही है हमारा फ्लैट।'

वह बोला नहीं। नम्बर याद करने लगा था। याद ही करना होगा। अपरोक्ष रूप से सरमा ने उसे अपना पता ही दे दिया है। पर···आलोक अपना पता उसे किस तरह देगा? इच्छा हुई थी कह दे—मेरा पता भी नोट कर लीजिए।—पर नहीं कहा। यह कहना कितनी बड़ी बदतमीजी होती !

'वह रहे आपके तम्बू।' सरमा ने एक मोड़ पर संकेत कर दिया था।

'धन्यवाद !' आलोक ने कहा। फिर चल पड़ा। मुड़कर देखा। वह वहीं खड़ी थी। दोबारा मुड़ा, सरमा वहीं···

इस दूसरे संयोग ने तो उसे झुरझुरी से भर दिया था। सरमा, सरमा, सरमा ! अब नहीं भूल पाएगा। मित्रों ने सुबह एक जरूरी कार्यक्रम बना लिया था। किसी ऐतिहासिक स्थान को देखने का। आलोक से पूछा था, 'तुम नहीं चलोगे ?'

'नहीं।'

'क्यों ?

'यों ही। मन नहीं है।'

अजीब लगा था उन्हें।' एक-दो बार दबाव डाला, पर जब हर बार आलोक ने इनकार ही किया, तब चुप हो गए थे वे। चलते-

चलते अनुराग ने उसे एक ज़िम्मेदारी सौंप दी थी, 'मेरा एक काम करेगा ?'

'कहो ?'

'यार, मेरी ये दो-तीन कविताएं हैं।' उसने कुछ पुरज़े जेब से निकालकर आलोक को थमा दिए थे, 'इन्हें टेप कर देना। तेरा कंठ तो गजब का है। और इन कविताओं की धुनें भी तूने ही बनाई हैं। शाम को सुनेंगे।'

आलोक कुछ कहे, इसके पहले ही सब बोले थे, 'हां-हां, कर क्यों नहीं देगा ? पड़ा-पड़ा यहां करेगा भी क्या ?'

आलोक ने पुरज़े थाम लिए थे। टेप-रेकार्डर एक ओर रखा था। इसीपर टेप करने होंगे।

वे चले गए थे। पर आलोक का जी नहीं लगा। पुरज़े वहीं रखकर बाहर निकल आया था। तम्बू खाली छोड़कर भी नहीं जाया जासकता था। किसी एक का रहना ज़रूरी। हर बार चपरासी को छोड़ जाया करते थे, जिसे साथ लाए थे; पर आज वह भी आलोक का न जाना सुनकर चला गया है।

आलोक पर बड़ी ज़िम्मेदारी। जगह नहीं छोड़ सकता। कितना मन था कि मोड़ के पार सी–फिफ्टी नाइन तक घूम आए। हो सकता है कि सरमा दीख ही जाए ! कितनी प्यारी मुसकान होती है उसके होंठों पर !

मन मारकर तम्बू में आ लेटा। पहले किसी पुस्तक में अपने-आपको डुबो लेना चाहा, पर उखड़ाव बना रहा। अन्त में तय किया था कि अनुराग का काम ही निबटा दे। वही किया। एक पुरज़े को खोलकर गीत रिकार्ड करने लगा था—

सुबह तेरी, शाम तेरी, मेरा कुछ भी न रहा।
क्या हुआ, मुझको बता, सपना अपना न रहा।

कितनी ही बार गुनगुनाने के बाद उसने बड़े मधुर स्वर में गीत शुरू कर दिया था···

मालूम ही नहीं हुआ था कि वह कहां है, सिर्फ इतना मालूम था कि इन पंक्तियों में गुम गया है वह। सचमुच सरमा के लिए उसकी मनोदशा कुछ इसी तरह की तो हो गई थी। कोई वक्त जैसे उसका अपना नहीं था, कोई खयाल जैसे उसका अपना नहीं था···

गाते-गाते वह तन्मय हो गया था। हर बोल के साथ जैसे

उसका अपनापन समाया हुआ हो। उतार-चढ़ाव के साथ गीत की पंक्तियां पूरी होते ही एक मधुर आवाज़ उसने सुनी थी, 'नमस्ते !'

वह चौंका। सरमा सामने थी। तम्बू के एक कोने में मुग्ध खड़ी हुई।

'आप !' हड़बड़ी में टेप बन्द करना ही भूल गया था आलोक।

'हां, आवाज़ सुनी और चली आई। सचमुच बहुत अच्छा गाते हैं आप ! अपना ही गीत गा रहे थे ना ?'

'जी ?···जी हां।' वह बोल गया। फिर कहा, 'आप खड़ी क्यों हैं ? बैठिए ! बैठिए ना !'

टेप की ओर दोनों में से किसीका ध्यान नहीं था। सरमा बैठ गई थी एक तरफ। बोली, 'आप लिखते भी हैं ? बहुत अच्छा लिखते हैं। सुबह तेरी, शाम तेरी, मेरा कुछ भी न रहा···सचमुच आप बहुत अच्छा लिखते हैं।'

आलोक संयत हो गया था। मन हुआ था कि कह दे, उसने नहीं उसके मित्र ने लिखा है, पर नहीं कहा। लगा कि कहने से बात टूट जाएगी। इसीलिए बोला था, 'आपको पसन्द आया ?'

'बहुत ! मैं कविताएं बहुत पढ़ती हूं। मुझे बच्चन की मधुशाला' याद है। नेपाली के कई गीत याद हैं। नीरज, वीरेन्द्र मिश्र ···कितने ही गीतकारों के गीत मुझे याद हैं। मैंने उन्हें सुना भी है। पर आप भी कितना अच्छा लिखते हैं ! और आप गाते भी तो कितना अच्छा हैं !'

आलोक पर कुछ कहते नहीं बन रहा था। गीत अनुराग का है। श्रेय उसने ले लिया। छिः, कितनी बुरी बात ! पर अब कुछ नहीं किया जा सकता। बात हाथ से निकल चुकी है। इसी तरह निबाहनी होगी।

'कुछ और सुनाइए ना !'

'छोड़िए !'

'नहीं-नहीं, सुनाइए !'

वह बगलें झांकने लगा।

'मुझे देखकर नहीं गा सकेंगे ?' वह शरारत से बोली, 'लीजिए, मैं मुंह फिरा लेती हूं। अब सुनाइए। प्लीज़ !'

आलोक हंस पड़ा।

'क्यों, हंसते क्यों हैं आप ?'

'आपको इस तरह बैठे देखकर तो मैं कुछ भी नहीं सुना सकूंगा।' आलोक बोला, 'सच तो यह है कि आप सामने हों तो मैं सारी ज़िन्दगी गाता रहूं।'

'जी···?' वह लजा गई। अंकुर···शायद अंकुर पहली बार वहीं फूटा था। कुछ पलों के लिए उनके बीच निस्तब्धता फैल गई थी।

फिर वह उठ पड़ी थी। जाने लगी।

'आप जा रही हैं?'

वह घबराए स्वर में बोली, 'आपके गीत ने मुझे अपना-आप ही भुला दिया था। आपके साथी···'

'वे सब घूमने गए हुए हैं।'

वह थम गई।

'बैठिए।' वह बोला था, 'मैं दूसरा गीत सुनाता हूं।'

वह बैठ गई थी। आलोक ने पुरज़े से दूसरा गीत सुना दिया था। वह उसकी ओर देखती रही थी—निरंतर! गीत का भावार्थ था कि 'ओ अनजान, जिस रास्ते पर तुम मुझे मिली हो, मैं सारे जीवन उसी रास्ते पर तुम्हें खोजता रहूंगा। मैं तुम्हारे बिना अपने-आपको अधूरा महसूस करने लगा हूं। तुम कभी नहीं जानोगी, पर मैं तुम्हें हमेशा जानता रहूंगा। यह उम्र एक ऐसे पपीहे की तरह कट जाएगी जो स्वाति की आशा में कभी-कभी जीवन-त्याग कर देता है। मुझे समझो, मुझ यात्री को प्यार दो, मैं तुमसे विनती करता हूं।'

गीत खत्म होते ही सरमा बोली, 'एक बात पूछूं?'

'पूछिए।'

'आप प्यार करते हैं किसीको?'

'प्यार?' आलोक हंसा, 'नहीं तो। अब तक इस रोग से बचा हुआ था।'

''अब तक' और 'था' का क्या मतलब?'

'मतलब यह कि आपसे मिलने तक वैसी कोई गुस्ताखी नहीं की थी मैंने।'

सरमा लज्जा से सिकुड़ गई थी। एक तरह से स्पष्ट ही तो कह दिया है उसने कि वह, सरमा को प्यार करने लगा है।

'यह गीत आपने कब लिखा?'

'आपसे भेंट के बाद।' आलोक झूठ बोल गया था, पर यह झूठ भी कितना प्यारा है !

'यह क्या कह रहे हैं आप ?'

'सच कह रहा हूं। उस दिन जब आपसे वृन्दावन गार्डन में पहली दुर्घटनाभरी मुलाकात हुई, उसी रात···आप विश्वास नहीं कर रही हैं ना ?'

'जी···हां, नहीं।' वह सकपकाकर उठ पड़ी।

'सुनिए तो !···'

वह जाने लगी थी।

'सुनिए !···'

वह रुक गई थी। आलोक उसके करीब आ गया था। कब, कैसे और क्यों कह गया, यह उसे स्वयं ही मालूम नहीं हुआ था, 'सच बताइए, मुझसे भूल हुई है क्या ?'

सरमा कांप रही थी। रोमांच उसके बदन की नस-नस में समा गया था, इसके बावजूद वह अपने भीतर गुदगुदी महसूस कर रही थी। एक ऐसे आनंद ने उसे विभोर कर रखा था, जिसका कारण वही नहीं समझ पा रही थी।

आलोक ने उसके बाज़ू थाम लिए थे। उसी दिन की तरह, पर आज का साहस कहीं अधिक भावुकतापूर्ण और आत्मीयता भरा था। उसने सरमा को एक झटके से अपने करीब खींच लिया था, 'सच कहिए, मुझसे भूल हुई है ? क्या ऐसा हो नहीं सकता ?'

'छोड़िए !···छोड़िए मुझे। यह क्या कर रहे हैं ?' सरमा ने कांपते स्वर में कहा था, फिर अपने-आपको छुड़ा लिया और जल्दी-जल्दी तम्बू से बाहर चली गई।

आलोक खड़ा रह गया था। दोपहर उसी तरह बीती। सोचता रहा था कि ठीक हुआ या गलत। कभी-कभी लगता जैसे ज़्यादा ही भावुक हो गया था। शायद अनधिकार चेष्टा भी कर गया। किसी लड़की के थोड़े खुलकर बातचीत करने का यह अर्थ तो हो नहीं सकता कि वह प्यार करने लगी है !

पर आलोक सही है। उसने जो कहा, उसकी आत्मा की आवाज़ थी।

शाम को मित्र लौटे। आलोक अनमना मिला था उन्हें। उन्होंने कारण जानना चाहा था। आलोक टाल गया। फिर वह

निरुद्देश्य ही निकल पड़ा था। अकेला घूमेगा मन बहल जाएगा।

शाम को फिर संयोग हुआ। लौटते समय सरमा मिल गई। वह जल्दी-जल्दी आलोक से कतराकर निकल जाना चाहती थी। आलोक ने रोक लिया था, 'सुनो !'

वह रुक गई। वह स्वयं भी नहीं जानती थी कि कैसे रुक गई।

वह पास आ गया था, 'तुम्हें बुरा लगा होगा। मुझसे भूल हुई।' उसकी आवाज़ भारी थी और वह कैसे उसे 'तुम' सम्बोधित कर बैठा था, उसे पता ही नहीं चला।

सरमा ने उत्तर नहीं दिया।

'मैं क्षमा मांगता हूं। मुझे वह सब नहीं कहना था।' आलोक ने अपराधी-भाव के साथ कहा।

'नहीं-नहीं, आप ऐसा क्यों कर रहे हैं···' सरमा परेशान हो उठी थी।

'इसलिए कि मुझसे भूल हुई।'

'आपने कोई भूल नहीं की।' सरमा ने कहा। पर तुरन्त बाद ही उसे अनुभव हुआ कि एक तरह से वह आलोक के प्रस्ताव को स्वीकृति दे बैठी है।

'सच ?' आलोक आश्चर्यचकित रह गया।

'हां !' सरमा मुसकराई। आगे बढ़ गई।

'सुनो !' उसने फिर से रोक लिया।

वह उसे देख रही थी।

आलोक ने कुछ संकोच के साथ पूछा था, 'कल मिल सकोगी ?'

उसने उत्तर नहीं दिया।

सुबह। उन सबके चले जाने के बाद मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा।' आलोक ने कहा था। सरमा ने कुछ नहीं कहा। जल्दी-जल्दी घबराई-सी चाल में चली गई थी।

आलोक लौटा। सब हंसे। आलोक ने उनकी ओर हैरान होकर देखा, फिर पूछा, 'तुम लोग इस तरह मुंह क्यों फाड़ रहे हो ?'

वे ज़ोर से हंसे। अनुराग मुसकराता हुआ आलोक के पास आ गया, 'उन्हें छोड़ो। बताओ, कहां घूम आए ?'

'यहीं। थोड़ी दूर तक।' आलोक अब भी हैरान था। वे सब उसकी ओर जिस तरह देख रहे थे, निश्चय ही वह काफ़ी चौंकानेवाला था।

अनुराग ने भी उसी मुसकान के साथ पूछा था, 'मेरे गीत रेकार्ड कर दिए हैं ?'

'हां !' आलोक ने बताया 'दो कर दिए हैं। एक फिर कभी कर दूंगा।'

मनमोहन ने व्यंग्य किया, 'ऐसा क्यों नहीं कहते कि अपने साथ-साथ भाई ने अपना दिल भी रेकार्ड कर दिया है ?'

'क्या बेहूदगी है ?' आलोक झल्लाया, 'तुम लोग किस तरह की बातें कर रहे हो ?'

'बातें तो डियर तुम कर रहे हो। यह सवाल हमें तुमसे करना चाहिए।' एक ने कहा।

'मैं क्या कर रहा हूं ?' आलोक चकित हुआ।

'बताओ प्यारेलाल को कि क्या कर रहे हैं !' मनमोहन ने दूसरे साथी को संकेत किया और उसने टेप बजाना शुरू कर दिया। गीत की अन्तिम दो पंक्तियों के बाद आलोक चौंक गया। उसके और सरमा के सारे संवाद रेकार्ड थे !···उसने उनकी ओर पहले हैरानी से और फिर मुसकराकर देखा।

'ख़ैर, बन्द करो इसे।' अनुराग ने कहा, फिर धीमे स्वर में आलोक से पूछा, 'कौन है ?'

आलोक ने उत्तर नहीं दिया।

मनमोहन कह रहा था, भाईजी इसीलिए घूमने नहीं निकल रहे थे। देखा आपने ? हम लोग इतिहास देखने जा रहे हैं और सिरीमानजी इतिहास कायम कर रहे हैं।'

'प्लीज़ मनमोहन !' आलोक ऊब गया था। मित्रों में खुसुर-पुसुर होती रही थी। रात बड़ी देर बाद सो पाया था आलोक। लगता था कि दूसरे दिन दिए वक्त पर सरमा नहीं आएगी। पर सरमा को एतराज़ नहीं है। उसने स्वयं ही कहा है। वह ज़रूर आएगी···ज़रूर !

और सचमुच वह आ गई थी। वे घूमने गए थे। उनमें तरह-

तरह की बातें हुई थीं। वे एक-दूसरे के बहुत नज़दीक आए थे। आलोक ने उसका नाम जान लिया था, पर सरमा नहीं जान सकी। अन्त तक।

जाने से कुछ घंटे पहले उनमें फिर से मुलाकात हुई थी। सरमा ने उस समय भी नहीं पूछा था नाम। सिर्फ 'ए' याद था उसे। यह 'ए' उसने उस गीत के पुरज़े के साथ पा लिया था, जिसे अनजाने में ही उस दिन वह अपने हाथ में पकड़े चली गई थी।

उन्होंने पते लिए-दिए थे। आलोक ने कहा था, 'मुझे इस पते पर लिख दिया करना।' फिर उसने पता लिख दिया था—अनुराग के नाम से। और सरमा समझी थी कि उसका नाम अनुराग है।

आलोक नहीं चाहता था कि उसके प्रेम-पत्र उसके अपने पते पर आएं। जिस जगह रहता था, वहां पत्र बहुत सुरक्षित नहीं हुआ करते थे। क्या मालूम किसीके हाथ ही लग जाएं। और अनुराग के घर का भी उसने पता नहीं दिया था। जानता था कि अनुराग के माता-पिता आते-जाते रहते हैं। नाम अनुराग लिखकर सहसा ही उसे यह याद आया था। उसने लिख दिया था मार्फत मनमोहन...

मनमोहन को समझा दिया जाएगा। अनुराग को भी।

और सरमा ने भी अपना पता नहीं दिया। कृष्णा उसकी सहेली है। बोर्डिंग में है। उसीके पते पर पत्र मंगाया करेगी।

वे विदा हो गए थे। सभीने देखा था कि स्टेशन से जब तक गाड़ी न छूट गई, सरमा खड़ी-खड़ी उनकी ओर देखती रही थी।

यात्रा शुरू हो गई थी। वापसी की यात्रा। मनमोहन बोला था, 'इसको कहते हैं कमाल! भाई तो हमेशा-हमेशा के लिए बेंगलौर में जड़ जमा चला है। अब किसी दिन हम सबको इसके सहारे दोबारा यहां आना पड़ेगा!'

हंसी का एक ठहाका।

यह ठहाका आलोक के सारे जीवन में बिखर गया था। सरमा के प्यार का ठहाका।

दिल्ली आते ही अनुराग से प्रार्थना करनी पड़ी थी, 'एक बात कहूं?'

'बोल!'

'मेरा काम करना पड़ेगा।'

'हां-हां, कह तो सही!'

आलोक ने सब कुछ सुना दिया था। जल्दबाज़ी में उसका नाम लिख बैठा है। इस भय से कि सरमा के पास कविता का पुरज़ा था। पुरज़े पर हो सकता था कि अनुराग ने अपना नाम लिख रखा हो। इसीलिए आलोक ने अपना नाम अनुराग लिखवा दिया। कहने लगा था, 'नाम से क्या फर्क पड़ता है। सूरत तो मेरी रहेगी।' उसने अनुराग के हाथ अपनी हथेलियों में दबा लिए थे, 'बात यह है यार कि तेरी कविता पर वह मुग्ध थी। कविता उसकी 'वीकनेस' है। मैंने कह दिया कि मैंने ही लिखी है। पुरज़े पर तेरा ही हैण्डराइटिंग है। अब तेरे हाथ में मेरी लाज है।'

'मैं समझ ही नहीं पा रहा हूं कि तू कह क्या रहा है ?'

'वही समझा रहा हूं।' आलोक बोला, 'अब मेरे प्रेम-पत्र भी तुझे ही लिखने पड़ेंगे। यह गोरखधन्धा न भी हुआ होता तो भी मैं तुझीसे लिखवाता। तेरी राइटिंग भी बहुत प्यारी है और लिखने का तरीका भी। साहित्यिक आदमी है ना।'

'नहीं-नहीं, आलोक! इस चक्कर में मत डाल यार!' अनराग कतराने लगा था।

'नो! मेरे लिए यह करना ही होगा।' आलोक ज़िद पकड़ गया था, 'अभी ही लिख एक पत्र।'

और आलोक का पत्र अनुराग ने लिखा था। इस तरह डूबकर जैसे खुद ही प्रेम-पत्र लिख रहा हो। छल्लेदार भाषा, रोमांचक बातें, सलोनी कल्पनाएं...

फिर एक नहीं, कितने ही पत्र! पत्रों के साथ अनुराग की लिखी कविताएं!

सरमा तुरंत उत्तर देती। वह भी कम साहित्यिक भाषा नहीं लिखती थी। एक पत्र में लिखा था उसने कि मामा-मामी ने एक रिश्ता तय किया था। सरमा ने साफ इन्कार कर दिया है। फिर निवेदन किया था कि अब जितनी जल्दी हो सके, अनुराग को यहां आकर उसके मामा-मामी से बात करनी चाहिए!...

उसी पत्र का उत्तर लिखवानेवाला था आलोक! पर बीच में ही दुर्घटना ने डस लिया।

दुर्घटनावाले दिन की सुबह जब आलोक बोलने की हालत में

आ चुका था, अनुराग ने प्रस्ताव किया था, 'सरमा को पत्र लिख दूं ?'

'नहीं।'

'क्यों ?'

'इसलिए कि मैं नहीं चाहता, उसे सदमा पहुंचे। फिर अब तक मैं अपनी जिन्दगी के बारे में भी श्योर नहीं हूं।'

पत्र अनुत्तरित रह गया था। दूसरे सप्ताह एकसाथ दो पत्र मिले थे सरमा के। बेचैनी सेभरी रही होगी। पत्र पढ़वाए किससे? मनमोहन लेकर आया था, पर मनमोहन से पत्र पढ़वाना ठीक नहीं समझा। सोचा, अनुराग के लौटने पर उसीसे पढ़वाएगा। अनुराग लौट आया है।

रात-भर आलोक की अनुराग के साथ कटी। सुबह कल्पनाओं से भरा डूब गया। उसकी आंखों से अंधेरा उतर जाएगा। इस अंधेरे के उतरते ही सब कुछ रोशन होगा। अब वह स्वयं ही पत्र पढ़ेगा...

हमेशा की तरह अनुराग को सिर्फ उत्तर देना होगा। उत्तर में कुछ खास नहीं, कुछ पंक्तियां। यह कि आलोक आ रहा है...वह सरमा के मामा-मामी से बात करेगा...

पुलक से भर उठा था वह।

चार

वे नाश्ते पर थे। भाभी सुबह के साथ ही तैयारियों में जुट गई थीं। आज ही लौट जाएंगी। जो करना था, कर चुकीं। अब किसलिए उन दोनों के बीच रहें? अचला ने कहा था, 'न जाइए।'

भाभी बोली थीं, 'क्यों, इस समय मेरा होना, न होना तुम लोगों के लिए क्या अर्थ रखता है?' उनकी आंखों में ठिठोली थी।

अचला के भीतर किसीने अंगारे रख दिए थे, पर वह चीखेगी-रोएगी नहीं। अपने धोखे को अपना भाग्य समझकर वही सहेगी।

किसीको बताएगी भी नहीं। यहां तक कि अनुराग को भी नहीं।

भाभी ने कहा था, 'मुझे जाना ही होगा। अभी तुम्हारे जेठजी भी बहुत बूढ़े नहीं हो गए हैं। उन्हें अकेला नहीं छोड़ना चाहती!' फिर वे हंसती हुई तैयारियों में लग गई थीं।

अचला नाश्ते की टेबल पर आ बैठी। चुप। अनुराग की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे। किस तरह समझाए कल की रात को चोरों की तरह घर में घुसकर एक तरफ सो रहा था। समझा था कि अचला सो गई है। फूलों-घिरे पलंग पर। पर अचला ने करवट बदल ली थी। उसकी ओर पीठ करके सो गई। अनुराग अनचाहे ही सफाई देने लगा था, 'बड़ा गड़बड़ हुआ, अचला। मुझे बहुत देर हो गई। तुम बहुत बोर हुई होगी।'

अचला ने उत्तर नहीं दिया था। उसी तरह करवट बदले रही। मन में कुछ गालियां उमड़ आई थीं—धोखेबाज! छली! अचला को इस तरह सफाई दे रहा है, जैसे अचला कुछ जानती ही नहीं। कितना नीच आदमी है!

अनुराग ने उसकी बांह पकड़कर उसे प्यार से अपनी ओर खींचा था और वह अकल्पित ढंग से इस तरह उछली, जैसे धधकती आग से कोई तिलंगा उछल गया हो!

'क्या हुआ?' अनुराग चौंक गया था।

वह खड़ी हो गई थी। चुप। क्रोधित। बरसने को आतुर। पर बरसेगी नहीं। उसने तय कर लिया है। बरसने से भी क्या लाभ! वह जिस आदमी को समझ चुकी है, उसे बहुत समझना शेष नहीं है!

'अचला!'

वह चुप।

'नाराज़ हो गई हो?' उसने प्रार्थना के स्वर में कहा, 'सच मानो, मुझे कल्पना नहीं थी कि इतना वक्त लग जाएगा।'

अचला खामोश।

अनुराग ने कहा था, 'मुझे क्षमा कर दो!'

अचला का मन हुआ था कि जवाब में धक्का दे। पर नहीं, अचला को असंयत नहीं होना चाहिए। वह इस आदमी को इसी तरह जलाती रहना चाहती है। यही तो निर्णय किया है उसने। अचला ने पलंग से तकिया उठाया और एक ओर पड़े लम्बे सोफा-

चेयर पर जा लेटी।

अनुराग को उसका व्यवहार विचित्र लगा, पर बाद में महसूस हुआ जैसे सहज है। स्वाभाविक भी। भला कोई मूर्ख होगा जो सुहागरात के दिन इस तरह गायब रहे! अनुराग को स्पष्टीकरण देना होगा। वह उठकर उसके पास जा पहुंचा था। वह बैठ गई। गरदन झुकाए हुए।

अनुराग मुसकराकर उसके करीब ही बैठ गया था, 'मैं जानता हूं कि तुम नाराज हो। होना भी चाहिए। मेरी बेवकूफी थी कि मैं इस तरह चला गया। पर तुम्हें नहीं मालूम कि कैसी दिक्कत थी। मेरे एक दोस्त...'

'आप आराम कीजिए। रात काफी हो चुकी है।' अचला ने उसकी बात काट दी थी, वह कुछ कहे इसके पहले ही उसने कहा था, 'मैं भी थकी हुई हूं। सोना चाहती हूं।'

'पर मैं तुम्हें बताना चाहता था कि यह सब क्यों हुआ!'

'मैं आपकी मजबूरी जानती हूं।' अचला ने कहा।

अनुराग स्तब्ध रह गया। पूछा, 'जानती हो?'

'हां?'

'पर कैसे?'

'अनुमान कर सकती हूं कि कोई खास बात ही होगी तभी आपको जाना पड़ा।' अचला ने सपाट शब्द बोले, 'हो सकता है कि किसीकी तबीयत खराब हो, कोई प्रतीक्षा कर रहा हो, या यह भी हो सकता है कि आप जाना चाहते हों।'

'नहीं-नहीं, तुम मुझे समझ नहीं रही हो, अचला। मैं सच कहता हूं।'

'मैं जानती हूं कि आप सच ही कहेंगे। सच के अलावा और आप कह भी क्या सकते हैं?'

व्यंग्य! अनुराग एकदम उखड़ गया। ऐसा तो कोई कारण है नहीं, जिसके लिए उसपर इस तरह चोटें की जाएं। कुछ परेशान होते हुए पूछने लगा था, 'यह तुम कैसी बातें कर रही हो?'

'बात तो आप कर रहे हैं। मैं तो सो जाना चाहती हूं।' अचला ने फिर वही रूखा उत्तर दिया।

अनुराग चुप। थोड़ी देर बाद कहा था, 'ठीक है! तुम थकी हुई हो, सोओ। पर यहां...'

'मुझे किसीके साथ सोने की आदत नहीं है।' अचला ने फिर तमाचा जड़ दिया।

'किसीके···?' आश्चर्य से अनुराग ने पूछा। वहम हुआ, कहीं यह औरत पागल तो नहीं है?

'हां।' अचला कह रही थी, 'आप सोइए। मैं यहां आराम कर लूंगी।'

'पर···'

'आप जाइए।'

यह 'जाइए' कुछ इस तरह कहा गया था जैसे अनुराग को धकेलकर बिस्तरे पर फेंक दिया गया हो। उठ पड़ा। लेटते समय घबराया हुआ था। बेशक, किसी सनकी और पागल औरत को उसके माथे मढ़ दिया गया है। वरना इस तरह उखड़े हुए जवाब? अनुराग को किसी उत्तर में कोई तुक नहीं लग रही थी। वह सवेरे तक तरह-तरह से सोचता रहा था—क्या सचमुच उसकी ओर से कोई ऐसी बात हो गई है, जिसपर इस तरह के उत्तर दिए जाएं, यह व्यवहार हो? हर बार लगता था कि बदले में ज़्यादती ही हुई है।

पर ज़्यादती क्यों होनी चाहिए? ठीक है कि अनुराग को देर हो गई। वह अपने अपराध के लिए क्षमा भी मांग रहा था; कारण बताने के लिए भी तैयार था; फिर भी उससे इस दुराव का प्रदर्शन?···

नहीं। नार्मल दिमाग में यह असंभव है। अनुराग ने नतीजा निकाला था। यह निश्चित ही अचला की विक्षिप्तावस्था का द्योतक है। और तो और, अनुराग को उससे भय लगने लगा था।

यह भय इस समय भी है। नाश्ते की टेबल पर सामने होते हुए भी अनुराग के मुंह से शब्द नहीं फूट रहा है। कैसे फूट सकता है? लगता है कि अभी भड़ककर कोईतीखी बात कह डालेगी। अनुराग को सुबह के साथ ही अपना मूड खराब नहीं करना चाहिए।'

फिर भाभी भी जानेवाली हैं। उन्हें स्टेशन छोड़ने जाना है। अभी से कुछ गड़बड़ हुई तो सारे रास्ते खोपड़ी भन्नाती रहेगी। यों भी अनुराग को संभलकर रहना चाहिए। भाभी को यह तनिक भी आभास न हो कि अचला और अनुराग के बीच कोई तनाव है।

और इस तनाव को उसने बढ़ाया नहीं। चुप बैठा रहा था। पर

नाश्ता करना भारी हो गया। जैसे-तैसे पूरा किया और उठ पड़ा। सामान डिग्गी में डाला था। भाभी अचला से विदा ले रही थीं। उस समय भी बड़े गौर से देखता रहा था अनुराग। पर आश्चर्य हुआ। अचला उस समय तनिक भी उत्तेजित या असहज नहीं लगी।

भाभी ने उसे सीने से लगा लिया था। बोली थीं, 'जा रही हूं।' फिर कनखियों से एक ओर खड़े अनुराग को देखते हुए कहा था, 'इन्हें अकेला जरा मत छोड़ना। मीठी-मीठी कविताएं लिखते हैं, खूबसूरत हैं, हाथ से रेशम की डोर जैसे फिसल जाएंगे।'

अचला ने सुना। ठीक ही तो है। रेशम की डोर ही है, जो अचला के गले में कस दी गई है···

भाभी कह रही थीं, 'वैसे मेरे देवरजी और चने की दाल में कोई फर्क नहीं है। कभी भी मुंह को नहीं काटेंगे। एकदम सीधे हैं। डांटोगी ना, तो जहां कहोगी वहीं बैठे रहेंगे। गौ जैसे!' हंसते हुए चल पड़ी थीं वह, 'चलती हूं। घर संभालो अपना।'

अचला ने पैर छू लिए थे उनके। भाभी ने आशीर्वाद दिया, 'दूधों नहाओ, पूतों फलो!'

अचला ने चुटकी ली थी। भाभी पर नहीं, अनुराग पर, 'फिर घर कैसे सम्हाल पाऊंगा, भाभी! सारा वक्त तुम्हारा आशीर्वाद ही ले लिया करेगा। इसलिए मुझे सिर्फ घर ही सम्हाले रहने दो। बाहर की सम्हाल करने के लिए तो घर में ही बहुत-से लोग हैं।'

भाभी कुछ नहीं समझीं। समझ भी नहीं सकतीं। भूमिका उन्हें मालूम नहीं है। मालूम हो तब भी उनके लिए समझना कठिन। सीधी-सादी औरत। सारे जीवन सादगी और तप की मूर्ति रहीं। अनुराग का मन हुआ था कि अचला से कह दे—उन्हें सिखाने-समझाने नहीं आई हो तुम, सीखने आई हो! कुछ सीखो और तमीज़ पैदा करो!

भाभी कार में बैठ गईं। अनुराग चुपचाप ड्राइव करता हुआ चल पड़ा था। भाभी ने रास्ते में कहा था, 'तेज़ है अचला। तुम्हें बांधकर रखेगी।'

अनुराग ने कुछ कहा नहीं। क्या कहे? जी हुआ कि हंसे और भाभी को बता दे, अचला ने बांधने के लिए किस बढ़िया ढंग से प्यार की डोर फेंकी है। अनुराग का मुंह तक बन्द हो गया है।

'एक ही रात में इस तरह चुप कैसे हो गए देवरजी, ?' भाभी बोलीं, 'डांटती है क्या ?'

अनुराग ने उत्तर नहीं दिया।

भाभी हंसी, 'इसका मतलब तो साफ है कि डांट दिया। है ना ?''

अनुराग फिर भी चुप। उलटे उसे झल्लाहट आने लगी है। कभी-कभी बेवक्त का मजाक भी कितना भोंड़ा लगता है ! पर अनुराग को लगा कि मूर्खता है। भाभी बेवक्त तो मजाक कर नहीं रही हैं। उनका हक है, मजाक का समय है, कर रही हैं। उन बेचारी को क्या मालूम कि अनुराग अपमानित हुआ बैठा है !

'तुमने ज्यादा ही छेड़खानी की होगी !' भाभी बोलीं, फिर जोर से हंसीं, 'देखो, देवरजी ! नया कपड़ा पहनने से पहले समझ लेना चाहिए कि किस तरह पहनना है। अचला समझदार है। शहरी है। बेंगलोर जैसे शहर में पढ़ी है। तुम उसपर अपना रोब ज्यादा पेलोगे तो बिदक जाएगी।'

'भगवान के लिए भाभी, मजाक मत करो !' अनुराग चिढ़ गया था।

'मजाक ?' भाभी ने फिर चुटकी ली, 'मजाक नहीं कर रही हूं, जो सीखा-समझा है, वही बता रही हूं। अचला स्वाभिमानी है। पढ़ी-लिखी भी है। उसके साथ तुम्हें सारी जिन्दगी बितानी है और इस बात का पूरा खयाल रखना है कि उसके अहं को चोट न पहुंचे।'

'तो मैंने क्या चोट पहुंचाई है ?'

'मैं नहीं कह रही कि पहुंचाई है। पर आगे ऐसे मौके आएंगे जब किसी भी छोटा-सी बात को लेकर हो जाया करेगी। तब के लिए कहती हूं। ध्यान रखना होगा इस बात का।'

अनुराग ने कहा, 'तब की तब देख लूंगा।'

भाभी हंसीं, 'तब की तब नहीं देखी जाती। यह जो जबान है, तलवार से गहरा वार करती है। इसका उपयोग जब भी करो, यह जानकर करना कि तुम तलवार से भी ज्यादा खतरनाक चीज हाथ में लिए हुए हो।'

'ठीक है।' अनुराग ने इस जिक्र को टालना चाहा। अगर तलवारवाली बात समझानी है तो अचला को समझाई जानी चाहिए।

भाभी को मालूम नहीं कि उसकी जबान में कसा जहर भरा हुआ है। जख्म करते ही शरीर तोड़ देता है।

भाभी चुप हो गई थीं। मन में कोई कांटा नहीं। हो भी क्यों—अनुराग और अचला के भीतर क्या कुछ चल रहा है, यह कल्पना भी नहीं की जा सकती। अनुराग ने कहा था, 'ये सब बातें तुमने अचला को भी समझा दी होंगी ना ?'

'उस तरह नहीं, जिस तरह तुमसे कह रही हूं।' भाभी ने कहा, 'पर एक तरह से सभी कुछ कह दिया है।'

'वह समझ गई है ?'

भाभी हंसीं, 'समझेगी क्यों नहीं ? तुम नहीं समझे क्या ?'

अनुराग खामोश हो गया।

स्टेशन पर उन्हें ट्रेन में सवार करा दिया था। मुक्ति की एक सांस ली। पर अचला का खयाल आया। घर पहुंचकर उससे सामना करना होगा। उसी तरह खामोशी तो रखी नहीं जा सकती, जिस तरह नाश्ते की टेबल पर रख ली थी। मन थोड़ी देर के लिए बेचैन हो गया।

पर घर बिना जाए तो चलेगा नहीं। जाना होगा। सामना करने से मन चुराने पर भी नहीं चलेगा। वह भी करना होगा। अचला के व्यवहार को ठंडा करने की भी कोशिश करनी पड़ेगी। पर कैसे रख पाएगा उसे ठंडा, यही चिन्ता का विषय है।

रास्ते-भर सोचता आया—किस तरह, क्या करना होगा। गाड़ी रोककर कुछ फल खरीदे थे। अस्पताल में आलोक के लिए ले जाने को। फिर याद आया कि सारे दिन घर ही रहना होगा। इधर-उधर का कोई प्रोग्राम नहीं बनाया जा सकता। डाक्टर मदान ने कहा था कि किसी भी समय फोन कर देंगे। स्पीड तेज कर दी थी। जल्दी से जल्दी घर पहुंच जाना चाहता था।

पहुंचा। अचला बैड-रूम में थी। दरवाज़े पर पहुंचकर देखा—बिस्तरे पर औंधी लेटी किसी पुस्तक में सिर गड़ाए हुए है।

कुछ देर खड़ा रहा था वहीं। क्या अचला ने उसकी पदचाप नहीं सुनी होगी ? सुनी होगी। शायद देखा भी हो। देखकर अन-देखे का बहाना कर रही है।

अचला ने सिर नहीं उठाया। वह है, इसका कोई ध्यान ही नहीं। जान-बूझकर यह अस्वीकारना अनुराग को गड़ने लगा।

भाभी की बात याद हो आई। अपनी ओर से अनुराग को यथासंभव बात सम्हाले रखनी है। सो आवाज़ दे दी थी, 'अचला!'

उसने सिर उठाया। अनुराग को देखते ही बैठ गई। उत्तर नहीं।

अनुराग इस अवहेलना को भी सह गया। करीब पहुंचा। 'बुरा न मानो तो एक बात पूछूं?' उसने स्वर को बहुत ढीला कर लिया था। इस क्लेश को ज्यादा नहीं सह सकेगा। फैसला कर लेना चाहता है। इस पार या उस पार।

'पूछो।'

'तुम नाराज़ हो, पर जानना चाहता हूं किसलिए?' अनुराग ने सवाल किया।

अचला ने कुछ कहने से पहले एक बार उसे घूरकर देखा। अनुराग को अजीब-सा लगा था। अचला बोली थी, 'आप नहीं जानते?'

'नहीं।' अनुराग ने कहा, 'अपनी याद में ऐसी कोई बात नहीं हुई है, जिसके कारण समझूं कि तुम नाराज़ हो जाओगी।'

'तो समझिए कि कुछ नहीं है।' अचला ने कह दिया।

'पर ऐसे कैसे मान लूं? देख रहा हूं कि तुम 'ऑफ' हो।'

अचला ने दोबारा उसे उन्हीं अजनबी निगाहों से देखा। बोली नहीं।

अनुराग ने कहा, 'जरूर कोई कारण है। कोई ऐसी बात, जिसे तुमने पसन्द नहीं किया है। पर जब तक मुझे पता नहीं चलेगा, मैं कर क्या सकूंगा?' उसकी आवाज़ कुछ ऐसी हो गई थी जैसे मिमिया रहा हो। पर उसे मलाल नहीं है। अगर इस शर्त पर भी अचला के अहं को तुष्टि मिल सके, तो बहुत होगा। वही कर रहा है।

अचला ने कहा था, 'आपको लग रहा है कि कोई कारण है?'

'हां।'

'तब तो निश्चित ही कारण होगा।' अचला बोली, 'क्या आपका यह काम्प्लेक्स साबित नहीं करता कि कारण क्या है, यह समझ लें?'

अनुराग चकित। यह कैसी बातें करने लगी है अचला? बोला, 'मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा है। जाने क्या-क्या कह

रहीं हो तुम ?'

अचला हंसी, 'समझकर भी न समझने का यह नाटक खूब है। तालियां बजानी चाहिए !'

वह भौचक्का देखने लगा।

अचला उठ पड़ी थी। जाने लगी। अनुराग ने रोका था उसे, 'सुनो !'

वह रुक गई।

'तुम्हें बताना ही होगा कि क्या बात है।' वह उसके पास पहुंच गया था, 'क्या हम लोग इसी तरह गांठें डालते रहेंगे ?'

'इसका मतलब यह है कि आप जानते हैं कि हमारे बीच गांठ है।' अचला ने वही कुतर्क किया।

'तुम जबरदस्ती मुझपर कोई बात लादना चाहती हो ?'

'तो कोई बात है ना !' वह व्यंग्य से उसकी ओर देखने लगी।

'फिर वही बात !' वह झल्ला उठा।' मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि तुम कैसी बेसिर-पैर की बातें कर रही हो। आखिर पता तो चले, क्या कारण है !'

'मैं भी नहीं समझ पा रही हूं, पर आप जब इस तरह किसी बात को समझाने की कोशिश करने लगे हैं, तब समझने लगी हूं।'

'क्या समझने लगी हो ?'

'यही कि हमारे बीच कहीं कोई टूटी हुई जगह है।' अचला ने कहा, 'कोई ऐसा मुकाम, जहां से हम जुड़ नहीं पाएंगे।'

'यह सब क्या कह रही हो तुम ?'

अचला ने कहा, 'सोचने की कोशिश कीजिए !' फिर वह अनुराग के उत्तर की बिना प्रतीक्षा किए वापस चली गई।

अनुराग खड़ा रह गया था। माथा मसलने लगा था थोड़ी देर बाद। अजीब पागलपन में उलझ गया है ! एकदम उलटी बात करती है ! कुतर्क ! ऐसी औरत के साथ ही अनुराग को सारी जिन्दगी बितानी होगी ! दुश्चिन्ता से उसका मन भारी हो आया था। वह लेट गया था जाकर। सिर दुख आया।

फिर खाने का वक्त। अनुराग टाल जाना चाहता था, किन्तु सोचा, वैसा नहीं करेगा। अपनी ओर से यथासंभव कोशिश करेगा

कि टूटे नहीं। टेबल पर पहुंचा। अचला ने खाना परास दिया था। फिर चुप। लगा था जैसे मुंह में ग्रास नहीं ले रहा है, बल्कि किसी चीज से ठेल-ठेलकर ग्रासों को अन्दर डाल रहा है। यह चुप्पी बदन में चींटियों की तरह काटने लगी थी। अचला की ओर देखा। वह चुपचाप खाए जा रही थी। क्या सचमुच वह नार्मल है?

नहीं। पागल है वह। वह खा रही है। एकदम सहज लग रही है। जबकि अनुराग उखड़ चुका है। वह उठने लगा था। अचला ने पूछा, 'बस?'

'हां।' उसने कहा। वाश-बेसिन की ओर जाने लगा।

अचला बोली थी, 'क्या मेरे साथ खाना भी पसन्द नहीं है?'

'यह तुम क्या कह रही हो?'

'ठीक ही तो कह रही हूं।' अचला बोली, 'तुम्हें मेरी उपस्थिति में कमरे में आना पसन्द नहीं है। तुम्हें मुझसे ठीक तरह बात करना पसन्द नहीं है। तुम्हें एक टेबल पर खाना अच्छा नहीं लगता। इससे क्या समझूं?'

'कुछ भी समझो।' झुंझलाकर अनुराग ने उत्तर दिया, 'तुम अपनी इच्छा से किसी भी स्थिति का कोई भी अर्थ निकालने के लिए स्वतन्त्र हो। पर मैं जहां तक जानता हूं, वैसी कोई बात नहीं है, जैसी तुम समझ रही हो।'

'समझ नहीं रही हूं, देख रही हूं।'

'क्या देख रही हो?'

'यही कि कल आपको जरूरी काम आ गया था, सारी रात व्यस्त रहे।' अचला ने आरोप लगाए, 'आज सुबह के नाश्ते पर आपके पास कोई बात नहीं थी या शायद आपके खयाल से मैं बातों के योग्य नहीं हूं। इस सबमें समझने जैसा क्या है?'

'तुम गलत समझ रही हो।' अनुराग बिना हाथ धोए कुरसी पर आ बैठा, 'यह सच है कि मेरे दोस्त की तबीयत बहुत खराब है। वह अस्पताल में पड़ा हुआ है। मैंने रात को भी तुम्हें बताया था। पर तुम समझने को तैयार नहीं हो।'

'आपके अस्पताल जा पहुंचने से वह ठीक हो गया क्या?' अचला ने अपरोक्ष रूप से आलोक को अपमानित कर डाला, 'आप उसके दोस्त हैं या बीवी हैं?'

'अचला!' झनझना उठा था अनुराग। हथेलियां कांप उठीं।

कुछ कहा नहीं। वह विक्षिप्तों की तरह सिर इधर से उधर झुलाने लगा था। जैसे गरजना चाहता हो, पर इस समय उसे अपने-आपको संयमित करने में काफी कठिनाई हो रही थी।

अचला पर उसकी उत्तेजित मनस्थिति का तनिक भी प्रभाव नहीं हुआ। उसी तरह चुभनेवाली बातें करती रही, 'मतलब यही हुआ कि मैं आपके लिए एक थोपी गई ज़िम्मेदारी से ज़्यादा कुछ नहीं हूं। है ना?'

अनुराग ने कुछ नहीं कहा। समझ गया था कि सिर्फ इसी कारण अचला सुलग उठी है। पर उसे लगा जैसे अचला मूर्ख है। अव्यावहारिक भी। उसने आलोक और अनुराग के सम्बन्ध समझे बिना उतनी कड़वी बात कह डाली है, जिसे अनुराग कभी क्षमा नहीं कर सकेगा। इसी खयाल के साथ वह अचला के पक्ष की ओर झुक गया था। अचला इस घर में नई है। नहीं जानती कि अनुराग और आलोक के सम्बन्ध कैसे हैं। उसे दोषी नहीं मानना चाहिए, बल्कि सहानुभूति से सोचना चाहिए। कम से कम अचला के प्रति भी अनुराग कम अपराधी नहीं है। उसे पहली ही बार अचला की इतनी उपेक्षा नहीं करनी थी।

पर यह उपेक्षा जान-बूझकर तो अनुराग ने की नहीं? उसने अपने-आपसे तर्क किया था।

पर हो गई! अनजाने ही सही, उपेक्षा हुई। इस उपेक्षा ने अचला को रिएक्ट किया। अब अगर वह असन्तुलित हो उठी है, सो सहज है। अनुराग को उसकी स्थिति पर भी सहानुभूति से समझ-सोच लेना चाहिए। वह संयत होने लगा था।

अचला चुप हो गई थी। उसका चेहरा भारी था, जैसे सूज गया हो। अनुराग बोला था, 'मैं जानता हूं कि कल मुझसे भूल हो गई है। मुझे इतनी भावुकता में नहीं पड़ना था। पर भगवान के लिए मुझे समझने की कोशिश करो, अचला! मैंने जान-बूझकर वैसा नहीं किया। मेरे दोस्त की हालत बहुत खराब है। इतनी कि मैं बयान नहीं कर सकता। तुम्हें विश्वास न हो तो…'

'मैं समझ सकती हूं।' अचला बोली, 'पर…' आगे क्या कहे, तय नहीं कर सकी। अनुराग के टूटते स्वर ने उसे भी उलझन में डाल दिया था। व्यंग्य भूल गई। फिर यह भी लगा जैसे वह कुछ ज़्यादती ही कर रही है। उसे इतने बढ़-चढ़कर नहीं बोलना

चाहिए।

'तुम्हें अब भी विश्वास नहीं है ना !' अनुराग कह रहा था।

अचला चुप बैठी थी। खाना बन्द कर दिया है। बन्द नहीं किया है, अपने-आप हो गया है। कितना अप्रिय प्रसंग ! गले से ग्रास उतरना कठिन।

अनुराग उठा। कमज़ोर, बोझिल पैरों से चलकर वाश-बेसिन में हाथ साफ किए। अचला देर तक बैठी सोचती रही थी। क्या अब तक अचला ने जिस तरह रूखा व्यवहार अनुराग को दिया है, ठीक है?

नहीं ! अचला को लगता है कि अपने-आपको ही काटने लगी है वह ! आरी जैसे शब्द उसने अनुराग पर नहीं चलाए हैं, एक तरह से अपने-आपको टूक-टूक कर डाला है !

पर अचला क्या करे ! अपने-आपसे ही कैसे सुलझे ! कितनी बाध्य हो जाती है वह ! अनुराग ने उसकी सहेली के साथ धोखा किया है। अनुराग ने एक तरह से अचला को भी धोखा दिया है। बार-बार लगता है जैसे अचला को चाहिए कि वह भी अनुराग को उसी तरह तिल-तिल जलाए, जिस तरह सरमा जल रही होगी।

पर इस दोहरी जलन से अचला अपना बचाव कर सकेगी? उसका अपने-आपसे प्रश्न !

असंभव। होगा यह कि अचला अनुराग को जलाते-जलाते खुद जलेगी ! बल्कि उससे पहले अचला को ही जलना होगा। जल रही है···सारी कोमल भावनाएं, सपने, इच्छाएं, आकांक्षाएं झुलसकर राख हो गई हैं।

अनुराग हाथ साफ कर कमरे से बाहर चला गया है।

उसका चलना कैसा था—जैसे साठ साल से ज़्यादा उम्र हो गई हो ! लड़खड़ाते कदम, कांपते हाथ, बुझी हुई आंखें···

अचला को लगा कि अच्छा हुआ है !

और अचला को ही लगा कि गलत हो रहा है !

हो सकता है कि अनुराग सही हो। उसका कोई मित्र सचमुच बीमार हो और वह उसीको देखने गया हो।

पर कैसे मान ले अचला ? कैसे विश्वास करे ? वह कविता, हैण्डराइटिंग, अचला भूल नहीं पा रही है। और उसके साथ ही अनुराग के ऊपर से उसका सारा विश्वास एक खोल की तरह उतर

जाता है। उसकी जगह निकलता है—अविश्वास से भरा हुआ अनुराग ! सिर्फ धोखा ! छल !

एक सांप, जिसकी केंचुली उतर गई है। एक सांप, जो केंचुली पहने हुए पहले अचला की सहेली सरमा को डस रहा था ; फिर केंचुल बदलकर अचला के गले लगने की कोशिश करने लगा !

मगर केंचुलियों के बदल जाने से सांप तो नहीं बदल जाया करता !

सांप—अनुराग ! आदमी का चेहरा, पर भीतर विष की पोटली।

अचला उसपर विश्वास नहीं कर सकती। चाहकर भी नहीं कर पाएगी। कभी नहीं !

तभी अनुराग की आवाज़ आई थी, 'अचला !'

उसने सोचा, इस आवाज़ की सत्ता स्वीकारे या नहीं ? पर सोच-विचार का अवसर नहीं मिला। उसके नाम अनुराग की दूसरी पुकार हुई थी। उसने जल्दी-जल्दी हाथ धोए, आवाज़ की दिशा वाले कमरे में जा पहुंची। देखा कि अनुराग कपड़े बदले हुए तैयार खड़ा है।

अचला ने उसकी ओर आंखों में प्रश्न भरकर देखा था, 'क्या ?'

'कपड़े बदल लो।'

'क्यों ?'

'हम लोग चल रहे हैं।' अनुराग का स्वर आदेश-भरा।

अचला ऐसे आदेश को नहीं मानेगी। आदेश जैसी अपनी स्थिति ही नहीं छोड़ी है अनुराग ने। उसने सूखेपन के साथ पूछा था, 'कहां जाना है ?'

'बताऊंगा, पर पहले कपड़े बदल लो !' अनुराग बोला। वही आदेश।

अचला खड़ी रही। एक तरह से अवज्ञा करती हुई। अनुराग झल्ला उठा था, 'सुना नहीं तुमने ? कपड़े बदल लो !'

वह सकपका गई। चुपचाप कपड़े बदल आई थी। अनुराग बोला नहीं था। उसे साथ लेकर कार में सीधा अस्पताल की ओर चल पड़ा। इस अविश्वासी और वहमी औरत की आंखों को आलोक की दशा बतलानी होगी। फिर धिक्कारेगा उसे। कहेगा कि अचला ने सिर्फ अनुराग या आलोक के साथ ही नहीं, सारी मनुष्यता के

साथ पशुवत् व्यवहार किया है !

रास्ते-भर उनके बीच चुप रहा था।

अस्पताल के ग्राउण्ड में कार रुकी। अचला ने पूछना चाहा था कि वे यहां किसलिए आए हैं? पर पूछ नहीं सकी। अनुराग का चेहरा सारी राह आतंकित-सा किए रहा। क्रोध का हर तनाव उसकी मुद्रा में अंकित था।

एक झटके के साथ अनुराग कार का पल्ला खोलकर बाहर आया। तेज़ी से मुड़कर कार के दूसरे पल्ले की ओर पहुंचा और इससे पहले कि अचला दरवाज़ा खोलकर उतरे, उसने पल्ला खोल दिया, कहा, 'आओ।'

फिर इच्छा हुई पूछे—कहां? पर साहस विस्मृत हो गया था। लग रहा था कि कुछ नाटकीय घटने जा रहा है। चुपचाप उतरी और उसके पीछे हो ली।

अनुराग तेज़ी से अस्पताल की ओर बढ़ा। पीछे अचला। उसी तेज़ी से वह एक कमरे की चिक उलटकर भीतर गया था, 'डाक्टर मदान हैं?'

'नहीं हैं। ऑपरेशन थियेटर में होंगे।' नर्स ने उत्तर दिया।

अनुराग बाहर आ गया। फिर वे दोनों गैलरियां पार करते हुए बड़ी जल्दी में चलने लगे थे। अनुराग के पीछे-पीछे अचला को लगभग दौड़ना पड़ रहा था। और तभी अनुराग एक द्वार के सामने रुका। चिक उठाई। भीतर समा गया। एक बार मुड़कर उसने पीछे सहमी खड़ी हुई अचला को देखा था। शायद यह देखने के लिए कि वह कैसा महसूस कर रही है। फिर संयत होकर दबे कदमों आलोक की ओर बढ़ा।

नर्स उठ खड़ी हुई थी। अनुराग के पास आई, 'अभी ही सोए हैं।'

अनुराग थम गया। एक गहरी सांस ली। पूछा, 'कुछ तय हुआ, पट्टियां कितने बजे उतरेंगी?'

'शायद आज नहीं।' नर्स ने बताया, 'डाक्टर मदान नाहीं कर गए हैं। कल सुबह के लिए कह रहे थे।'

अनुराग ने एक गहरी सांस ली। मुड़कर अचला को साथ

लिए बाहर आ गया—गैलरी में।

'यह कौन है ?' कांपते स्वर में अचला ने पूछा था। उसकी आंखों के सामने अब भी वही दृश्य था। पट्टियों से लिपटा हुआ चेहरा। ऊपर एक सफेद चादरा। शान्ति। एक तरह का भयावना सन्नाटा।

'यही हैं वह, जिन्हें मैं देखने आया था।' अनुराग ने उत्तर दिया, 'देख रही हो ना, क्या हालत है ?'

'पर···'

'पर मैं तुम्हें बताना चाहता था कि यह आदमी मौत से लड़ रहा है। तुम्हें विश्वास दिलाना चाहता था कि इसकी सांसों के लिए मैंने कल तुम्हारे साथ चाहे-अनचाहे धोखा किया।'

'मगर···' अचला सकपका गई थी। सचमुच उसने अनुराग को गलत समझ लिया। उसे अनुराग की बात का सच या झूठ जाने बिना उससे रूखा व्यवहार नहीं करना था। पछतावे ने उसकी जबान बन्द कर दी थी।

पर अनुराग नहीं थमेगा। थमा भी नहीं। बोला, 'तुम्हें विश्वास हुआ कि वैसा किसलिए करना पड़ा ? अगर तुम मेरी जगह होतीं और इस आदमी के लिए शहर में एकमात्र दोस्त होतीं, तो महसूस कर सकतीं कि···'

अचला ने सिर झुका लिया। झुकाना होगा। अनुराग सही है। कम से कम इस क्षण सही है।

अनुराग कुछ कहनेवाला था, पर दृष्टि गैलरी में तेजी से उसीकी ओर बढ़ते आते डाक्टर मदान पर जा ठहरी। वह नमस्कार कर उनके सामने जा खड़ा हुआ, 'सर !'

'अच्छा हुआ तुम आ गए।' मदान बोले, 'मैं तुम्हें फोन करने ही वाला था। पट्टियां आज नहीं खुल सकेंगी ; कल सुबह नौ बजे खोलूंगा।'

अनुराग ने कुछ कहा नहीं।

डाक्टर मदान अपने कमरे की ओर चलने लगे थे। अनुराग और अचला उनके पीछे हो लिए। अपनी सीट पर पहुंचकर कुछ कहते-कहते रुक गए थे डाक्टर। आंखों में प्रश्न—अचला की ओर टिका हुआ।

अनुराग समझ गया था। बोला, 'एक्सक्यूज मी सर ! यह हैं

मेरी मिसेज।' और वह अचला से बोला था, 'डाक्टर मदान। मेरे प्रोफेसर। गुरु। इन्हींके आशीर्वाद से···'

'ठीक है, ठीक है।' मदान बोले, 'बैठो तुम लोग।'

अचला ने प्रणाम किया था। डाक्टर ने आशीष दिया, फिर किसी रोगी की टैम्परेचर-शीट देखने लगे। अनुराग और अचला उनके सामने पड़ी कुरसियों में बैठ गए थे।

नर्स को बुलाकर डाक्टर मदान ने कुछ निर्देश दिए। शीट पर नोट लगाया, फिर अनुराग की ओर मुड़े, 'तुम्हारा दोस्त बहुत ज्यादा आशाएं कर रहा है। मुझे तो डर लगता है कि कल उसे बहुत जबरदस्त 'शॉक' लगेगा!'

अनुराग चुप। बेसब्री से हथेलियां मसलता हुआ।

'इट इज़ वेरी सीरियस!' डाक्टर मदान ने कहा, 'दोपहर मुझसे कह रहा था कि उसकी पट्टियां खोल दी जाएं। वह जल्दी से जल्दी रोशनी में पलकें खोलना चाहता है। वह चाहता है कि उस खूबसूरत दुनिया में फिर से लौट आए, जिसे उसने एक बुरे लमहे में खो दिया है। इतना ज्यादा विश्वास मुझे डराने लगा है। आई डाउट कि वह पट्टियां खुलने के बाद वाला 'शॉक' झेल भी सकेगा या नहीं! उसे 'हार्ट अटैक' भी हो सकता है!'

अचला भयातुर सुनती गई। इसका मतलब है कि अनुराग के मित्र की दशा बहुत भयंकर है। डाक्टर मदान की बातों ने उसके रोम कंपा दिए थे। वह देख रही थी कि डाक्टर के हर शब्द के साथ अनुराग के चेहरे पर कई रंग आ रहे हैं, कई जा रहे हैं। पर अब तक यह नहीं समझ पाई थी कि डाक्टर मदान पट्टियां खुलने के बाद वाले किस खतरे की ओर इशारा कर रहे हैं।

अनुराग ने कमज़ोर आवाज़ में पूछा था, 'फिर··फिर क्या हो सकता है सर?'

'उसे नर्वस करो। कोशिश करो कि वह इस बात को समझे कि उसका ऐक्सीडेंट कितना खतरनाक था। जितना मुमकिन हो उसे निराश कर देना चाहिए।'

'यह बहुत मुश्किल होगा, सर! ऐसा कैसे···' अनुराग रोने को हो आया।

'इट्स द ओनली वे!' डाक्टर मदान ने कहा, 'उसे किसी तरह इस हालत के लिए तैयार करो कि पट्टियां खुलने के बाद

कुछ भी हो सकता है। यह भी हो सकता है कि वह इस खूबसूरत दुनिया में लौट आए और यह भी मुमकिन है कि यह दुनिया कुछ अरसे के लिए उससे किनारा कर ले। ही मे बी बलाइण्ड !'

अचला के दिल की धड़कन बढ़ गई। इसका मतलब है कि अनुराग का मित्र अन्धा हो गया है। पट्टियां खुलने के बाद भी वह अन्धा रहेगा और यह सब इस सच को जानते हैं। कोशिश की जा रही है कि उसे सदमा झेलने के लिए तैयार कर लिया जाए।

'पर यह पासिबल किस तरह से है, सर ?' अनुराग ने पूछा।

'मेरे साथ आओ।' डाक्टर उठे। अनुराग और अचला उनके पीछे हो लिए।

थोड़ी देर बाद वे सब आलोक के कमरे में थे। अचला सहमी और डरी हुई सहानुभूति के साथ आलोक को देखती रही थी। वह जो अन्धा है और नहीं जानता कि अन्धा है !

नर्स ने बताया था, 'ही इज़ स्लीपिंग सर !'

डाक्टर मदान ने सुना या नहीं सुना, कौन जाने ? वह आलोक के करीब झुके। 'आलोक !...आलोक !...माई सन !'

वह कुनमुनाया। होंठ खुले। एक कमज़ोर-सी आवाज, 'जी ?'

'मैं, डाक्टर मदान !'

'नमस्कार, सर !' वही कमज़ोर आवाज़।

अचला ने देखा—अनुराग की आंखों में चमक तेज़ हो गई है। पानी पर उतराती रोशनी की चमक। क्या वह रोने लगा है ?

डाक्टर मदान कह रहे हैं, 'तुम्हारा मित्र आया है। अनुराग।'

'कहां है ?'

'तुम्हारे बहुत पास।' डाक्टर ने कहा और अनुराग पास जा पहुंचा, 'यहीं हूं। तुम्हारे बहुत करीब। कैसे हो ?'

'क्या पट्टियां आज खुलेंगी डाक्टर ?' रोगी का प्रश्न।

अनुराग और डाक्टर मदान ने भयातुर एक-दूसरे को देखा। आलोक के स्वर में आशाएं हैं, यह स्पष्ट था। डाक्टर मदान ने कहा, 'कल, सुबह। बट व्हाई यू आर इन ए हरी ?'

'जी...जी...' वह कुछ बोल नहीं सका। किस तरह अपना उत्साह प्रकट करे ?

डाक्टर मदान ने कहा, 'तुम डाक्टर हो। तुम समझ सकते हो

कि आंखों का ऑपरेशन करने के बाद डाक्टर भी नहीं जानते कि रहस्य क्या है ? आई मीन टू से, कोई नहीं जानता कि ईश्वर ने क्या लिख रखा है। बहुत ज्यादा किसी मामले में उम्मीद नहीं करनी चाहिए। यू आर ए साइन्स-मैन ! यू केन नो…'

उसके होंठ बन्द थे। चुप हो गया है। अनुराग ने कल्पना में उसका चेहरा देखा—निराश चेहरा !

डाक्टर ने कहा, 'हम लोगों ने अपनी ओर से बहुत कोशिश की है। तुम्हें रोशनी मिल जानी चाहिए, पर ईश्वर न करे, अगर वैसा बुरा मौका आता है और हमारा सोचा हुआ पूरा नहीं होता, तब हमें दोबारा एफर्ट्स करने होंगे। आदमी के हाथ में इतना ही है।'

'बट''बट व्हाई आर यू टेलिंग दिस बैड न्यूज़ सर ?' आलोक ने कांपते हुए पर झुंझलाए स्वर में कहा। शायद वह निराशा के ये झटके सह नहीं पा रहा था।

'दुनिया में अच्छा या बुरा कुछ नहीं होता। हमें एक समझदार आदमी की तरह हर पहलू पर सोचकर चलना चाहिए। बीइंग ए गुड डाक्टर यू हैव टू नो दिस ! दुर्घटना को दुर्घटना की तरह सहो। तुम्हें बहुत ज्यादा इमोशनल नहीं होना चाहिए।'

बातें बहुत कठोर हैं। अनुराग भी समझता है। आलोक को तोड़ दिया होगा इन बातों ने, पर यह कठोर सत्य है। इस सत्य से बचा नहीं जा सकता। किनारा भी नहीं किया जा सकता।

आलोक चुप है।

डाक्टर ने आगे कहा, 'मैं जानता हूं कि तुम्हें यह सब सुनकर आश्चर्य और दुःख हो रहा होगा, पर इसका मतलब यह नहीं है कि मैं अशुभ सोच रहा हूं। मैं जानता हूं कि शुभ के भी उतने ही चान्सेज हैं, जितने अशुभ के हो सकते हैं। पर मेरा फर्ज है, तुम्हारी भी जिम्मेदारी है कि हर मौके पर अपने-आपको बैलेंस रखना चाहिए।'

फिर कुछ पलों के लिए सन्नाटा फैल गया था। डाक्टर मदान, अनुराग और अचला एक-दूसरे को रह-रहकर देखते रहे थे। अचानक डाक्टर ने विदा ली थी, 'अच्छा, मैं चलता हूं।' फिर वह नर्स की ओर मुड़े थे, 'इन्हें इन्जेक्शन दे दिया था ?'

'यस, डाक्टर !'

'थैंक यू।' डाक्टर मदान तेजी से बाहर चले गए।

अनुराग उसके करीब झुका, 'आलोक !'

'हूं ।'

अनुराग की समझ में नहीं आया कि क्या कहे । एक क्षण बाद बोला, 'मदान साहब ने बहुत कुछ कह डाला । इतना कहना···'

'ठीक ही तो कहा है ।' आलोक ने एक कराह के साथ कहा, 'मैं जरूरत से ज़्यादा आशा करने लगा था । यह भी तो हो सकता है कि ऑपरेशन अनसक्सेसफुल रहे और मैं पट्टियां खुलने न खुलने दोनों ही स्थितियों में बराबर रहूं ?'

'नहीं-नहीं, ऐसा क्यों कहते हो !' अनुराग घबरा उठा । क्या डाक्टर मदान सदमे से पहले सदमा नहीं दे गए हैं ? बोला, 'ईश्वर न करे···'

'चाहते सभी हैं कि ईश्वर ऐसा न करे । पर चाहने से ही सब कुछ हो जाता है क्या ?' आलोक ने पूछा ।

अनुराग निरुत्तर हो गया । अचला पर निगाह गई । सोचा विषय बदल दे । यही किया । कहने लगा, 'खैर छोड़ो, ये सब बेकार बातें हैं । मैं अपने साथ अचला को लाया हूं ।'

'कौन, भाभी को ?' आलोक उत्साहित हुआ । उसकी आवाज़ कुछ ऊंची हो गई थी ।

'हां ।'

'नमस्ते भाभी !' आलोक ने कहा, 'पर मुझ अपंग, लाचार की नमस्ते भी क्या नमस्ते !' आलोक की आवाज़ एकाएक ही धीमी हो गई, 'मेरा पूरा शरीर चोटों से भरा हुआ है । आंखों पर उम्मीद है, पर लगता है वह भी···'

'ऐसा न कहिए ।' अचला अनायास ही बोल गई, 'आप बहुत जल्दी ठीक हो जाएंगे ।'

'सब यही कहते हैं, पर मैं जानता हूं, अभी कई महीने मुझे इसी तरह काटने हैं । शायद आंखों के मामले में तो···'

अनुराग ने उसके मुंह पर हौले से हथेली रख दी, 'प्लीज़, आलोक ! डाण्ट बर्स्ट ! तुम देख रहे हो कि अचला तुमसे मिलने आई है और तुम ये बातें···'

'ओह ! मुझसे भूल हुई । हां, सचमुच ही तो मैं आपकी खुशियों के बीच ये सब बेहूदा बातें ले बैठा । मुझे क्षमा करना भाभी···'

अचला चुप रही। जी हो रहा था कि यहां से भाग जाए। उसकी दशा, टूटता स्वर, सभी कुछ कितना दयनीय और दु:खद है, सहा नहीं जाता।

थोड़ी देर बाद विदा हो गए थे वे। आलोक ने पूछा था, 'आओगे ?'

'हां, शाम को आऊंगा।' अनुराग ने उत्तर दिया था।

रास्ते में अनुराग और अचला के बीच फिर से चुप रहा था। पुरानी बात एकदम उभर आई थी, किन्तु इस बार अचला उतने रूखेपन के साथ नहीं सोच पा रही थी। आलोक की दशा ने उसे हिला दिया था। बार-बार उसका कांपता स्वर, दयनीय स्थिति और लाचारी से भरा घायल चेहरा आंखों के सामने आ जाता।

और अनुराग सोच रहा था—ठीक हुआ। अचला ने स्थिति को समझ लिया होगा। अब अपराध-भावना से सोच रही होगी कि उसने भूल की।

हां, भूल की थी अचला ने। उसे अनुराग के स्पष्टीकरण पर विश्वास करना था, किन्तु सरमा को अनुराग ने जिस तरह छला है, वह तो भूल नहीं है! इस सारी स्थिति के बावजूद अचला वह कैसे भूल जाए ?

नहीं भूल सकेगी। कभी न कभी इसके लिए उसे अनुराग से उत्तर लेना होगा। पर इस समय उत्तर नहीं मांगना है। अनुराग के लिए नहीं, उसके घायल मित्र के लिए! अचला अपने-आपको घोंटे रहेगी। वह अभिनय करेगी कि उसने अनुराग की ओर से मन धो लिया है।

अनुराग ने कहा था, 'अब तो तुम्हें विश्वास हुआ...'

'कैसी बातें कर रहे हैं आप ?' विश्वास मुझे कब नहीं था, मगर मैं नहीं सोच सकती थी कि उनकी यह हालत होगी!' अचला ने एक गहरी सांस ली।

यह सांस और अचला के शब्द जैसे अनुराग की सारी आंच को ठंडा कर गए हैं। यही तो चाहता है वह। एक नार्मल स्थिति। सहज संसार। स्वाभाविक वातावरण।

पांच

'आलोक के पास जाएंगे न आप ?' शाम के खाने पर अचला ने पूछा था।

अनुराग ने प्रेमल नेत्रों से उसकी ओर देखा—बोला नहीं।

'क्या देख रहे हैं ?'

'सोच रहा हूं।' अनुराग ने कहा, 'मुझे जाना चाहिए या नहीं।'

'इसमें सोचने जैसी क्या बात है ?' अचला बोली थी, 'आपने उनसे कह भी तो दिया है कि आएंगे।'

'हां-आ, कहा तो है ; पर जाकर करूंगा भी क्या ?' अनुराग बोला, उसने तय कर लिया था कि आज अचला को शिकायत का मौका नहीं देगा।

'आपको जाना चाहिए।' अचला आदेशपूर्ण स्वर में बोली थी, 'यहां आपके अलावा उनका है ही कौन ? आप ही तो बता रहे थे कि आपके अलावा आलोकजी को और किसीपर विश्वास नहीं है। आप स्वयं भी उन्हें उतना ही स्नेह करते हैं। तबतो आपको जाना ही चाहिए। फिर मैंने देखा है, बहुत भयानक ऐक्सीडेंट हुआ है। काश, मैं पहले उनकी हालत समझ सकी होती !'

अनुराग उसकी ओर देखता रहा था—क्या सच ही अचला दयार्द्र हो उठी है ? हां, निश्चित ! अचला का चेहरा कह रहा है। सहानुभूति और पीड़ा से भरा हुआ। कुछ ही समय में कितनी बदल गई है अचला !

खाना खतम होते हुए अचला फिर से बोली, 'आपको जाना चाहिए।'

'पर यहां तुम...'

'मैं आपकी प्रतीक्षा कर लूंगी। डरिए नहीं, सच कह रही हूं। मैं स्वयं चाहती हूं कि आप जाएं।'

अनुराग खुश हुआ। तैयार होकर बोला था, 'ठीक है। पर तुम सोना नहीं। मैं बहुत जल्दी आ जाऊंगा।'

अचला ने उसे मुसकराकर विदा दी थी।

अनुराग चला गया। अचला देर तक देखती रही थी। तब तक, जब तक कि कार उसकी नज़रों से ओझल नहीं हो गई। फिर

बेड-रूम में आ लेटी। अनुराग का चेहरा उसे इस समय भी याद है। अचला ने कहा तब कैसे विनीत हो उठा था! इच्छा होते हुए भी आलोक के पास जाने से इनकार करने लगा था। क्या इसीलिए कि अचला नाराज़ न हो?

निश्चय ही इसी कारण। तब क्या अनुराग को गलत समझ लिया है उसने?

हो भी सकता है। गलतफहमी ही हो सकती है। अनुराग के चेहरे और बातों से कल्पना भी नहीं की जा सकती कि वह छल करेगा!

अचला ने उपन्यास के पीछे दबे कागज़ खोलकर फिर से सामने रख लिए थे। अविश्वास से उस हैण्डराइटिंग को देखती रही... कभी लगता कि वही राइटिंग है, और कभी लगता कि नहीं है।

पर वह कविता? कविता तो एकदम वही है। इस कविता की पंक्तियां सरमा ने ही उसे सुनाई थीं। बोली थी—जानती है अचला, बहुत अच्छा गला है उनका! पहली-पहली बार जब मैंने गीत सुना तो अपने-आपको भूल गई थी बिलकुल!

अचला हंसी थी—पगली, अपने-आपको तो तू अब भी भूली हुई है।—कविता वही है, हो सकता है कि अनुराग ने अपने किसी मित्र को कविता दी हो। किसी सन्दर्भ में। और उसके मित्र ने उस कविता का इस तरह उपयोग किया हो।

बेशक हो सकता है, बल्कि यही होगा। अचला पूछेगी। बिना पूछे यह स्थिति टलेगी नहीं। फिर अनुराग ने स्वयं ही तो कहा है कि वह बताए। गांठें बनाने से क्या लाभ!

अचला यही करेगी। अचला ने इस निश्चय के साथ ही महसूस किया था जैसे मन हलका हो गया है। और इस हलके मन ने बिस्तरे पर लेटते ही उसे नींद के आगोश में पहुंचा दिया।

डाक्टर मंदान जो बात कह गए हैं, मन पर जमकर रह गई है। आलोक निराश हो चुका है। अनुराग को उससे बातचीत में यही लगा था। समझाने की हर कोशिश पर वह उखड़-उखड़े उत्तर देता रहा था। इन उत्तरों में जीवन के प्रति अविश्वास और चिन्ता साफ झलकती थी।

कितनी कोशिश की थी अनुराग ने ! अपनी ओर से उसे पूरा विश्वास दिलाने के लिए कई-कई बार कहा था, 'तुम्हें गलतफहमी हुई है। डाक्टर मदान ने जो कुछ कहा है, उसका मतलब सिर्फ निगेटिव ही तो नहीं हो सकता। उन्होंने सिर्फ एक अच्छे डाक्टर की तरह तुम्हें सलाह दी है। ऑपरेशन के बाद का परिणाम तो ऑपरेशन के बाद ही मालूम होता है। यही कह रहे थे वह···'

आलोक हंसा था, 'तुम मुझे बहला रहे हो, अनुराग! मैं डाक्टर मदान को जानता हूं। उतना ही, जितना तुम जानते हो। वह स्पष्ट कह गए हैं। मुझे अन्धेपन के लिए तैयार रहना चाहिए।'

अनुराग सकपका गया था। डाक्टर मदान को समझने की बात गलत नहीं कही है आलोक ने। दोनों ही मदान के छात्र रहे हैं। उनकी आदत से अच्छी तरह परिचित हैं।

आलोक बोला था, 'मुझे अब पट्टियां खुलने, न खुलने में बहुत रुचि नहीं रही है। जब अंधेरा ही रहना है, तब पट्टियां बंधे रहने और खुलने से क्या फर्क पड़ेगा ! मेरे लिए दोनों स्थितियां ही बराबर हैं।'

अनुराग चुप था।

आलोक ने सिरहाने से दो लिफाफे निकालकर अनुराग की ओर बढ़ा दिए थे, 'लो ! पढ़कर सुना दो मुझे।'

अनुराग ने कांपते हाथों क्रमशः उन्हें खोला और पढ़कर सुनाया। दोनों ही सरमा के पत्र। हर पत्र में शिकायत। अनुराग यानी आलोक उत्तर क्यों नहीं दे रहा है? इस चुप्पी का क्या अर्थ ले सरमा? सरमा एकांत में अनुराग की कविताएं गुनगुनाती है। क्या सारी जिन्दगी उसे इसी तरह कविताएं गुनगुनाकर काट देनी होगी? सरमा से ऐसी क्या भूल हो गई है? आदि···

आलोक सुनकर कुछ पल चुप रहा था। अनुराग ने पूछा, 'उत्तर क्यों नहीं लिखवा देते?'

आलोक हंसा था। कहा कुछ नहीं।

'इसमें हंसने की क्या बात है? पत्र तुम्हें मिल रहे हैं। इन पत्रों के पीछे तुम्हारे पत्र हैं। तुम्हें उत्तर देना चाहिए। किसीको इस तरह तंग करने का तो अधिकार नहीं है तुम्हें। वह क्या सोचती होगी बेचारी?'

'सोच-सोचकर चुप हो जाएगी। अब इस मामले को यहीं खत्म

हो जाना चाहिए।' आलोक का स्वर रूखा हो गया था।

'अगर इसी तरह खत्म करना था तो शुरू ही क्यों किया?' अनुराग तर्क करने लगा था।

'शुरू में मैंने नहीं सोचा था कि यह...'

पर आलोक की बात अधूरी रह गई थी। अनुराग ने कहा, 'फर्ज करो कि सरमा से शादी के बाद ही तुम्हारा यह एक्सीडेंट होता—क्या तुम सरमा से इस तरह किनारा कर सकते थे?'

'वह एक अलग स्थिति होती।'

'और इस समय क्या हुआ है?' अनुराग ने उसे लगभग झिड़कते हुए कहा था, 'तुम समझते हो कि सरमा के साथ आगे तक हाथ बढ़ाकर इस तरह एकाएक खींच सकोगे? यह मुश्किल है।'

'प्लीज, मुझे तंग मत करो, अनुराग!' आलोक प्रार्थना करने लगा था, 'क्या तुम्हारा खयाल है कि यह मुझे अच्छा लग रहा है?'

'नहीं। जानता हूं कि नहीं लग रहा है, पर यों चोरों की तरह चुप बैठ जाना भी तो ठीक नहीं। तुम्हें उसे खबर देनी चाहिए। खबर न पाकर तो वह ज़्यादा ही परेशान होती होगी।'

'पिछले पत्र में उसने शादी की बात लिखी थी। तुम्हें याद है ना?' आलोक ने पूछा।

'मालूम है।'

'मैं इसीलिए कट जाना चाहता हूं। अच्छा रहे कि वह मेरी चुप्पी से ऊबकर स्वीकार कर ले। मैं नहीं चाहता कि अपना अन्धापन उसके भविष्य पर फैला दूं। तुम मुझे समझने की कोशिश करो।' आलोक बोला था। अनुराग चुप रह गया।

थोड़ी देर बाद अनुराग ने पूछा, 'तब इन पत्रों का क्या करना है?'

'कुछ नहीं!' आलोक ने उत्तर दिया, 'अपने साथ ले जाना। यहां गुमने का डर है। कल आंखों का जुआ खेल लूं, तभी सोचेंगे कि क्या करना ठीक होगा।'

एक गहरी सांस लेकर दोनों पत्र अनुराग ने अपनी जेब के हवाले कर लिए थे। रात काफी हो चुकी थी। थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें करते रहने के बाद अनुराग लौट पड़ा था।

लौटते समय मन विषाद में डूबा हुआ था। आलोक समझ चुका है कि वह अन्धा हो गया। डाक्टर मदान जिस मनोविज्ञान को उसके ऊपर चढ़ा आए हैं, उसकी तह किसी नये मरीज़ के लिए समझना मुमकिन नहीं थी, पर आलोक के लिए सरल है। आलोक उनका छात्र रहा है। उनके स्वभाव की दसियों विशेषताएं खूब अच्छी तरह पहचानता है।

पर सरमा के पत्र पढ़े हैं अनुराग ने। कितने टूटे हुए, दरदीले पत्र! आलोक उत्तर से नहीं, सरमा से कतरा रहा है। एक सही प्रेमी के लिए यह कदम उठाना स्वाभाविक है।

पर आलोक को भ्रम है। सरमा को अपने-आपसे अलग करने का यह बहाना या तरीका बहुत अच्छा नहीं है। सरमा सिर्फ पत्रोत्तर न पाने को ही तो आलोक का इनकार नहीं समझेगी। वह अपने मामा-मामी द्वारा किए जा रहे शादी के प्रयत्नों को झटककर तोड़ देगी! यह भी हो सकता है कि दबाव पड़ने पर विद्रोह कर दे और यहां आ पहुंचे। तब क्या होगा?

लगता है कि सरमा से छुपाव करना अच्छा नहीं हुआ। सारी स्थिति सरमा को लिख देनी थी।

एक बार इच्छा हुई थी कि अनुराग ही अपनी ओर से लिखडाले। लिख दे कि वह आंखें खो चुका है। सरमा से विवाह भी नहीं करना चाहता। आदि।

पर हर सोचा हुआ पूरा तो नहीं किया जा सकता। अनुराग भी नहीं कर सका। यह आलोक से छल होगा। भले सरमा के हित में ही किया जाए, पर छल होगा।

कार गैरेज में पहुंचाकर 'बैल दी। देर तक देनी पड़ी। साफ था कि अचला सो गई है। कलाई-घड़ी देखी। बारह बज चुके थे।

थोड़ी देर के लिए आलोक के विचार उससे दूर हो गए थे। उनकी जगह ले ली थी अचला के विचार ने। आज वह खुश होगी। देर से ही सही, पर अनुराग लौट आया। उसका रुख भी बदल चुका है। अचला सारी स्थिति भी तो खूब समझ-देख चुकी है।

अचला ने द्वार खोला। उनींदा चेहरा, पर कितनी सुन्दर है अचला! अनुराग वहीं खड़ा देखने लगा था। मुग्ध। इस तरह तो अचला को उसने कभी देखा ही नहीं था।

'देख क्या रहे हैं? भीतर आइए ना!' वह बोली।

अनुराग को अहसास हुआ, सचमुच ही विचित्र हो गया था वह। अन्दर पहुंचा। अचला को कोट थमा दिया था उसने।

'कैसी है उनकी तबीयत?' अचला ने पूछा।

'वैसी ही है।' अनुराग बोला।

अचला क्या कहे। बिना टिप्पणी किए चल पड़ी, 'आपके लिए दूध गरम कर लाती हूं।' अनुराग ने उत्तर नहीं दिया।

अचला हैंगर पर कोट टांग रही थी। गिर पड़ा। दोनों लिफाफे जेब से बाहर आ गए। अचला उठाकर उन्हें जेब में रखना चाहती थी, पर रखते-रखते थम गई। यह लिखावट तो सरमा की है!

उसने कोट और हैंगर एक ओर रख दिए। किसीका पत्र पढ़ना अच्छी बात नहीं है। पर आज यह आदर्श निबाह नहीं सकेगी।

पता पढ़ा। अच्छी तरह। अनुराग का ही है। मार्फत किसी मनमोहनशर्मा के। इसका मतलबहै कि सरमाको अनुराग ने 'मार्फत' के पते से पत्र लिखवाए हैं। कितना योजनाबद्ध छल!

पत्र खोला। पहले में तरह-तरह से विनती करते हुए सरमा ने पत्रोत्तर देने की विनय की है। दूसरा पत्र पहले से ज्यादा भावुक और दरदीला···अचला ने शब्द नहीं पढ़े, एक तरह अंगारे अपने सारे शरीर में बिखरा लिए। क्या अब भी कोई सन्देह है?

अब अचला क्या करेगी? क्या अब भी किसी घायल की सहानुभूति में अपने अपराधी पति को क्षमा कर देगी? असम्भव! अचला ने दांत भींचकर निश्चय कर लिया था। वह फिर बदल गई है। बदलने के लिए लाचार कर दी गई है।

और जब वह दूध लेकर बैड-रूम में लौटी, तब एकदम बदली हुई औरत थी।

अनुराग ने कहा था, 'दूध रख दो।'

अचला ने वैसा ही किया। बिना बोले, दूध एक ओर टेबल पर रख दिया और तकिया उठाकर एक ओर जा लेटी। सोफे पर। अनुराग को अजीब लगा, 'यह क्या कर रही हो?'

'सोना चाहती हूं?' अचला ने रूखा-सा उत्तर दिया।

अनुराग हैरान। बोला, 'आज तो ऐसी कोई बात नहीं हुई, जिसपर तुम्हें नाराज़ होना पड़े?'

अचला ने उत्तर नहीं दिया। क्या इस नाटक के लिए भी उत्तर

देना होगा ! जानबूझकर कैसे अनजान बनता है, जैसे कुछ जानता ही नहीं। अचला के जिस्म को बुरी तरह झुलसा डाला है। अनुराग के छल उसके अपने बदन पर अचला को कोढ़ के घिनौने दागों से जैसे उभरे हुए लग रहे हैं और फिर भी अचला को धोखा देना चाहता है। कितना नीच आदमी !

वह उसके पास जा पहुंचा, 'बताओ तो सही, बात क्या है ?'

अचला ने सीधे कुछ नहीं कहा। बोली, 'सिर में दर्द है।'

अनुराग ने उसे बांहों में कस लिया, 'कब से ? तुमने बताया ही नहीं। मेरे पास टेबलेट हैं। देता हूं।'

वह जाने को हुआ तो अचला ने रोका, 'नहीं, रहने दो। आराम कर लूंगी, तो अपने-आप ठीक हो जाएगा।' फिर वह उसी जगह लेट रही। बदन सचमुच बुखार-सा महसूस करने लगा था। अचला को उसने छुआ है। जिस जगह छुआ है, वहीं ज़ख्म हो गए लगते हैं।

अनुराग ड्राअर से कोई गोली निकाल लाया। दूध का गिलास एक हाथ में पकड़े हुए उसने गोली अचला की ओर बढ़ा दी, 'इसे ले लो। पांच-सात मिनट में ही दर्द दूर हो जाएगा।'

अचला ने कभी गोली और कभी अनुराग की ओर देखा। लगा कि वह ज़हर देना चाहता है। ऐसे आदमी का क्या विश्वास ? वह ज़हर भी दे सकता है। नई-नई औरतों के शरीर से खेलने और खून मुंह में लग जाने के शौक में भेद ही क्या है ? ऐसा आदमी किसी भी सीमा तक गिर सकता है। किसी भी स्तर तक जा सकता है। अचला को उसपर विश्वास नहीं है। उसने गोली नहीं ली, कहा, 'मैं नहीं खाऊंगी।'

'क्यों ?'

'मैं दवाओं की आदी नहीं।' अचला ने टालने के लिए कहा।

अनुराग ने दोनों चीज़ें एक ओर रख दीं। पूछा, 'सिर सहला दूं तुम्हारा ?'

अचला ने उत्तर नहीं दिया। अनुराग थोड़ी देर बैठा रहा था, फिर उठकर बिस्तरे में जा समाया। जाने कितनी देर तक सोने की कोशिश करने के बावजूद वह सो नहीं सका था। कैसे सोता ? अचला को समझ पाना इतना सहज है क्या ? और उसे न समझे बग़ैर यह ज़िन्दगी चला पाना असंभव लग रहा है।

लगभग इसी तरह सोचती रही थी अचला। क्या इस नाटकीय आदमी के साथ निभ सकेगी? असंभव लगता था। अचला कल ही उससे मुक्ति ले लेगी।

रात दो पहर बीत गई। वे सो नहीं सके थे। एक बार अनुराग उठकर उसके पास आया था। उसके करीब खड़ा रहा। चुप, देखता हुआ। इस लड़की के चेहरे पर कहीं भी तो विक्षिप्तता के आसार नहीं लगते! तब यह ऐसा क्यों करती है? क्या पुरुष के प्रति भय समाया हुआ है इसके मन में?

ऐसे 'केसेज' भी होते हैं। अनुराग ने अपनी मेडीकल की पढ़ाई के दौरान सुना है। किसी-किसी लड़की के दिमाग पर किसी पुरुष के आक्रामक और हिंसक रूप का ऐसा प्रभाव पड़ जाया करता है कि वह सारे जीवन के लिए किसी मनोवैज्ञानिक ग्रंथि की शिकार हो जाया करती है। हो सकता है कि अचला के दिमाग में भी ऐसी ही कोई ग्रन्थि हो!

पर जब तक अचला के पूर्व-जीवन के बारे में कुछ मालूम न हो, अनुराग किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकता।

और मालूम कैसे होगा पूर्व जीवन?

भाभी के माध्यम से मालूम हो सकता था, पर वह यहां हैं नहीं। अनुराग ने सोचा था। अगर एक पत्र भेजकर उन्हें यहां बुला लिया जाए और सारी स्थिति समझाई जाए, तो हो सकता है कि कोई नतीजा निकले!

पर भाभी को बुलाना ठीक लगेगा क्या? इस तरह नई ज़िन्दगी की शुरूआत के साथ ही अपने को लेकर दूसरों के मन में तनाव पैदा कर डालना कितनी ओछी बात होगी! यह नहीं किया जा सकता।

तब?

तब एक और तरीका हो सकता है। अनुराग को ही पहल करनी होगी। इस सफाई से अचला के भीतर से उसकी पिछली जिन्दगी मालूम करेगा, कि उसे स्वयं ही कुछ न मालूम हो। उसके परिवार, परिवार-जनों के स्वभाव, उनके जीवन के बारे में जानकारी। उससे अचला का मनोविज्ञान समझने में मदद मिलेगी। मालूम हो तब कुछ किया जाए!

मगर अचला तो ठीक मुंह बात नहीं करती। अजीब करवटें

बदलता रहता है उसका स्वभाव। सुबह से अभी, कुछ घण्टे पहले तक एकदम नार्मल थी। अचानक इस तरह बदल गई, जैसे बिलकुल अलग औरत हो। इस स्थिति को कैसे समझ सकता है अनुराग ?

एक तरह का दौरा पड़ता है उसे। अनुराग ने सोचा। बिस्तरे पर लौट आया। पर नींद नहीं आई। आ नहीं सकती।

और क्या अचला को ही नींद आई है ? नहीं। वह उसकी ओर देख रहा था। अचला ने बीच में उसे उठते और अपने पास आते हुए देखा था, पर खामोश पड़ी रही। अपने-आपको तैयार कर चुकी थी। अगर वह उसे छूने की कोशिश करेगा, अचला विद्रोह कर देगी। वह एक बाजारू और सस्ते आदमी को पति-रूप में कैसे स्वीकारे ? मन को तैयार नहीं कर पा रही है।

पर वैसा नहीं हुआ था। अनुराग उसके करीब खड़ा बेचैनी से हथेलियां रगड़ता रहा था।

कायर ! ऐसे आदमी कायर ही तो हो सकते हैं ? यदि सच ही अनुराग के भीतर पति हुआ होता, ईमानदार पुरुष होता, तो अचला इस तरह सूखी पड़ी रही होती ? वह उसे अपने अधिकार के साथ बांहों में कस लेता। मीड़ डालता। पर अनुराग वैसा नहीं कर सका। नहीं कर सका, क्योंकि अनुराग एक कमज़ोर और छली आदमी है। चोर। चोर का मन ही कितना ताकतवर होता है ! एक धमकी सारे साहस को मोम की तरह पिघला डालती है। अनुराग का सारा पौरुष अचला के सामने पिघल गया।

अचला ज़्यादा ही झुलसने लगी थी। इस झुलसन में नींद कैसे आती ?

अनुराग का मन नहीं माना। दोबारा उठा। अचला के करीब पहुंचा। दबे कदम। उसके हाथ किसी जादू में बंधे हुए अचला के शरीर की ओर बढ़े। अचला ने देख लिया था, पर इसके पहले कि कुछ सोच पाती, अनुराग ने उसे बांहों में भर लिया। अपना चेहरा उसके बिछे हुए चेहरे पर झुका दिया···

वह कसमसाई। चेहरा हटाने की कोशिश की। पर लाचार। अनुराग ने उसे किसी इन्द्रजाल में कस लिया है। शरीर और कामनाओं का ताकतवर और नशीला इन्द्रजाल। अनुराग के होंठ उसके माथे को छूते हुए गले तक चले आए हैं···सांसों की गति तीव्र। अनुराग की हथेलियां उसकी बगलों से होती हुई उसके गुदाज़ सीने

में समा जाने को आकुल···

अचला !···किसीने अचला के भीतर से ही उसे चेतावनी दी है। यह···यह क्या कर रही है तू ? यह वही है। वही आदमी, जिसने सरमा को छला है। जिसने तुझे भी छला है। जो तुझे किसी गिज-गिजे कीचड़ में लपेट रहा है। दलदल में डुबो रहा है।

पर चेतावनी उठते-उठते शरीर में ही दब जाती है। उसकी जगह उभरती हैं, आतुर कामनाएं। ताकतवर काम। काम की अवश स्थिति···अचला के होंठों में शब्द बागी हों, इसके पूर्व ही अनुराग के होंठ उन्हें वहीं कैद कर लेते हैं—उनकी जगह एक शक्तिशाली चुम्बन ! चुम्बन, जो बदन में एक लावे की तरह बिखर जाता है ! दोहरा चुम्बन !···

दोहरा लावा !

अचला की कांपती बांहों ने भी सहसा अनुराग को बांध लिया है। बेसुध हो गई है अचला। पलकें बन्द। शरीर किसी फूल की तरह हलका हो गया है। इस फूल को अनुराग ने अपनी आत्मा में समा लिया है।···

अचला को मालूम ही नहीं हुआ था कि कब, किस क्षण उसने अपने-आपको पूरी तरह अनुराग को सौंप दिया।

और अनुराग ही क्या जान सका कि वह अचला को जीत चुका है !

जीत है या हार—कौन जाने ?

पर जानना होगा !···

कुछ ही क्षणों में जान गए थे वे। कम से कम अचला। अस्त-व्यस्त और शिथिल वह अनुराग के बिस्तरे पर थी। कमरे में मद्धिम प्रकाश बिखरा हुआ था। अचला जैसे ठण्डे पानी से भरे किसी तालाब में जा गिरी हो, इसी तरह नशा टूटा था उसका ! छिटककर उठी !

पर छिटकने का क्या अर्थ ? अचला हार चुकी है। अचला का वह निश्चय, बुलन्दी, विद्रोह—सब पराजित !

अनुराग मुसकरा रहा था। अचला ने जबड़े भींचकर उसे देखा, फिर लज्जा से पलकें झुकाने के बजाय बिफर पड़ी थी वह, 'धोखे-बाज !···नीच !···' वह हांफने लगी थी। उसकी आंखें जैसे चारों तरफ से किन्हीं डोरों में बांधकर फैला दी गई हों, 'तुमने मुझे ठग

लिया ! तुमने मेरे साथ धोखा किया ! तुम···तुम···यू ब्रूट !'

अनुराग सकपका गया। अप्रतिभ होकर उसे देखता रह गया था—यह सब किसलिए ? कैसा धोखा ? अनुराग ने उसपर बलात्कार नहीं किया है। वह उसकी पत्नी है। उन्होंने हवन-कुण्ड के गिर्द फेरे लेकर परस्पर समर्पित किया है अपने को। फिर कैसा छल ? कैसी ब्रूटनेस ?

उसने अस्तव्यस्त साड़ी के छोर में मुंह दबा लिया। सिसकने लगी, 'तुमने चोरों की तरह···तुम कितने गिरे हुए हो ! काश मैं पहले जान सकी होती !'

अनुराग चकित होकर उठ बैठा था, 'यह क्या कह रही हो तुम ?'

'ठीक कह रही हूं। तुम धोखेबाज़ हो ! तुमने सोते में···' वह ज़रा ज़ोर से सिसक उठी।

'अचला प्लीज़ !···यह क्या पागलपन है!' वह घबराकर अनुनय करने लगा। माथा घूम गया था। ऐसे जैसे वह स्वयं पागल होनेवाला है। वह उसके करीब पहुंचा था। अचला दूर हो गई। विक्षिप्तों की तरह चीखती हुई, 'मेरे पास मत आओ ! मुझे मत छुओ !···दूर रहो मुझसे !'

वह खड़ा रह गया। आतंकित होकर उसे देखता हुआ। हां, निश्चय ही वह पागल है ! पूरी तरह नहीं, अर्धपागल ! उसे डर लगने लगा था। थोड़ी देर बाद जैसे संयत होने की कोशिश करते हुए उसने कहा था, 'समझने की कोशिश करो, अचला ! तुम मेरी पत्नी हो। हम सारे जीवन के साथी हैं। हमने कुछ गलत नहीं किया !'

'तुमने गलत किया है ! तुमने मुझे लूट लिया !' वह गरजी।

कितना विद्रूप हो उठा है उसका चेहरा ! अनुराग घबरा गया, पर इस तरह घबराकर स्थिति का सामना करने के बजाय भाग खड़े होने से काम नहीं चलेगा। स्वर में कुछ कड़ापन पैदा किया। समझ चुका है कि हर बार विनम्रता से बात नहीं बनेगी। पुरुष को पुरुष की तरह रहना होगा। इसी भाव से कहा, 'मैं तुम्हारा पति हूं। मैंने बलात्कार नहीं किया है तुमपर !'

अचला ने आग्नेय नेत्रों से उसे देखा, फिर उसी कठोरता के साथ उत्तर दिया, 'अनिच्छा को तुम अधिकार से नहीं मार सकते।

यह बलात्कार ही है।'

'शटअप !' अनुराग आपे से बाहर हो गया, 'देख रहा हूं कि तुम ज़रूरत से ज़्यादा ही समझदार बनने की कोशिश कर रही हो। मैं तुम्हारे नखरे सहने के लिए तैयार नहीं हूं।'

वह उत्तर न देकर हिलकती हुई रो पड़ी। ज़्यादा ही ज़्यादा। अनुराग झल्लाता हुआ दूसरे कमरे में चला गया।

•

सोचा था कि सुबह के साथ घटना भी महत्त्व खो चुकेगी, किन्तु जब एकाएक ही अचला ने आकर कहा, 'मैं आज जाना चाहती हूं,' तो अनुराग स्तब्ध हो गया। उत्तर न देकर वह आश्चर्य और अविश्वास के साथ उसका चेहरा देखने लगा था।

अचला खड़ी थी, एक पथरीली पुरानी खुदाई में निकली मूर्ति-सी। उसकी पलकों पर सूजन थी। निश्चित ही वह रात-भर नहीं सो सकी।

और क्या अनुराग ही सो पाया था ?

पर अनुराग की व्यथा कौन समझे ? समझाने की आवश्यकता भी नहीं है। अनुराग ने सोचा। पुरुष का अहं इस तरह कमज़ोर तो नहीं है कि आत्मसमर्पण तक झुक जाए ? उत्तर न देकर वह उपेक्षा से दूसरी ओर देखता हुआ जूतों के फीते कसने लगा था।

अचला भी नहीं झुकेगी। रात बहुत सोच-समझकर निर्णय किया है। इस घर में निर्वाह कठिन। पढ़ी-लिखी है। किसी जगह नौकरी करके काम कर सकती है। पर इस क्रूर और धोखेबाज़ पुरुष के साथ निर्वाह असंभव है।

यह भी सोच लिया है कि कहां जाएगी। माता-पिता के पास न जाकर अपनी सहेली कृष्णा के यहां रहेगी। क्या कृष्णा यह सब जानना चाहेगी ? बेशक ! पर अचला को अपने स्वाभिमान और सम्मान की रक्षा के लिए सब कुछ पी जाना होगा।

अनुराग ने जूतों के फीते कस लिए। डाक्टर मदान ने बताया था कि सुबह पट्टी खोली जाएगी। उस समय अनुराग की उपस्थिति आवश्यक होगी। उठा, कोट पहनने चला गया।

अचला इस उपेक्षा को सह गई। जब तक यहां है, सहना ही होगा। पर यह बेबसी बहुत दिन नहीं रहेगी। इस घर की देहरी

लांघते ही अचला स्वतंत्र हो चुकेगी।

अनुराग लौटा। अचला ने कहा था, 'बेंगलौर जा रही हूं। अपनी सहेली के यहां।'

अनुराग ने कहा था, 'खुशी से। यह सब सूचना देने की जरूरत भी नहीं है।'

अचला ने अटैची उठा ली और दबे कदमों दरवाज़े की ओर बढ़ी। जी हुआ कि मुड़कर एक बार अनुराग को देख ले—पर नहीं देखा। क्यों देखे ?

अनुराग ने उसके दरवाज़े से बाहर कदम बढ़ाते ही चेतावनी दी, 'जा रही हो, जा सकती हो। पर एक बात अच्छी तरह समझ लेना। अब मेरा-तुम्हारा कोई रिश्ता नहीं। अब तुम यहां कभी नहीं लौट सकोगी।'

अचला तिलमिला उठी थी। धमकी दे रहा है! नितान्तपुरुष! समझता है, अचला उसकी आश्रिता है। लाचार। पर नहीं जानता कि अचला अपंग नहीं है। अशिक्षिता भी नहीं है। दमन सहना भी उसके स्वभाव में नहीं है।

पर अचला ने कहा कुछ नहीं, तेज़ी से दरवाज़ा लांघ गई।

थोड़ी देर के लिए अनुराग जैसे कटकर गिर गया। सोफे पर बैठा सोचता रहा था। कितनी जल्दी, क्या कुछ घट गया—विश्वास नहीं होता। एक बार मन हुआ था कि दौड़कर जाए और अचला को मना लाए···पर किसलिए ? अनुराग किसलिए इतना झुके ? उसने कोई अपराध नहीं किया है!

छः

डाक्टर मदान ने मन ही मन ईश्वर को याद किया और टेप हटाई। हौले-हौले पट्टी खोलने लगे। एक फेरा, दूसरा, तीसरा···

अनुराग से कहा था, 'तुम सामने खड़े हो जाओ!'

और अनुराग परदे के सामने था। उसके पीछे परदा। परदे के पार खुली खिड़कियां। खिड़कियों से धूप। यह धूप परदे ने बहुत

काबू कर ली थी।

कुरसी पर बैठे आलोक की धड़कनें तेज हो गई थीं···एक-एक पल, जैसे निर्णय की ओर बढ़ता न्यायाधीश का कलम ! यह कलम क्या लिख देगा, कौन जाने ?

यह स्थिति आलोक की ही हो, ऐसा नहीं है। सभीकी यही स्थिति। स्वयं डाक्टर मदान के जी में धुक्पुक् लगी हुई है। बार-बार ईश्वर को याद कर रहे हैं। हे ईश्वर, रोशनी का दान कर दे ! यह रोशनी बहुत कीमती है ! एक आदमी की जिन्दगी !

अन्तिम फेरा खुला। रुई के फोहे बहुत धीमे-धीमे हटाए गए। आलोक का हृदय गति के शिखर पर आ पहुंचा। जिस्म में कम्पन। विद्युत्-तरंगों की तरह बिखरा हुआ। डाक्टर मदान ने हौले-हौले अंगूठे उसकी पलकों पर फिराए, फिर कहा, 'ईश्वर का नाम लेकर धीमे-धीमे पलकें ऊपर करो !'

पलकें उठीं—उठीं—उठीं—

रोशनी, धुंधलापन, रोशनी, कुछ किरणें और फिर एक आकृति···आलोक बुदबुदाया, "मैं···मैं देख सकता हूं। मैं देख रहा हूं।···मैं बिलकुल देख रहा हूं !' वह कांपता हुआ उठा। खड़ा हो गया, 'अनुराग !···'

अनुराग पर न हंसते बना, न रोते। होंठ दबाए खड़ा रह गया। आनन्द की विचित्र स्थिति थी यह। समझी नहीं जा सकती।

डाक्टर मदान बड़बड़ाए, 'भगवान ! तुम्हारी कृपा !···तुम कितने दयालु हो !'

आलोक लड़खड़ाते कदमों अनुराग से लिपट गया। आनन्दित स्वर में कहा था उसने, 'तुमने मुझे बचा लिया ! तुमने मुझे बचा लिया ! मैं देख सकता हूं ! मैं सब कुछ देख सकता हूं !'

अनुराग ने उसकी पीठ पर हथेलियां इस तरह फिराईं जैसे किसी अबोध बच्चे को दुलरा रहा हो, 'किसीने नहीं, डाक्टर मदान ने तुम्हें बचा लिया ! उनके पैर छुओ, आलोक !'

'हां-हां,' आलोक मुड़ा। डाक्टर मदान भरी-भरी आंखों से उसे देख रहे थे। वह उनके गले लिपट गया, 'सर !··· यू आर ग्रेट !··· मैं जीवन-भर इस कृपा को नहीं भूल सकूंगा ! आपने मुझे रोशनी नहीं, जिन्दगी दी है !···'

मदान साहब ने कहा, 'इस तरह नहीं करते, माई सन !

ज़िन्दगी उस ऊपर वाले की देन है। वह चाहता था कि तुम्हारी आंखों में रोशनी रहे। हम सबको उसका शुक्रगुज़ार होना चाहिए।'

अजीब-सा भावुक क्षण था वह। उन सभीकी आंखें भर आई थीं। थोड़ी देर बाद डाक्टर मदान चले गए थे। यह सूचना देकर कि अभी दो दिनों तक आलोक को अस्पताल में ही रहना होगा।'

आलोक बिस्तरे पर लेट गया था। वह बार-बार अपनी आंखें खोल-मूंद रहा था। बार-बार कह रहा था कि वहदेख सकता है। वह सब कुछ देख पा रहा है। उसे अपने ही आपपर विश्वास नहीं हो रहा था। शायद बड़बड़ाकर वह बार-बार अपने-आपको विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहा था···

कुछ क्षणों यही स्थिति रही थी। फिर आलोक ने पूछा था, 'भाभी नहीं आईं ?'

अनुराग के भीतर जैसे किसीने एक पत्थर मारकर जल की शांत सतह हिला दी। सहसा उत्तर न दे सका। फिर बोला, 'वह तो कल ही अपने मैके चली गई।' इस झूठ के लिए बहुत साहस बटोरना पड़ा था उसे। आलोक घनिष्ठ मित्र है। ज़रूरत नहीं है कि उससे कुछ छिपाया जाए, पर इस समय छिपाना होगा। वह आलोक की खुशी पर अपने किसी दुखी क्षण की छाया भी नहीं पड़ने देना चाहता।

'अजीब बात है! अभी ही चली गईं ?' आलोक कह रहा था।

अनुराग ने इसकी सफाई भी दे दी, 'जाना ज़रूरी था। उनकी मां की तबीयत कुछ···'

'ओह !' आलोक बोला, 'हां, तब तो बहुत ज़रूरी था। अच्छा हुआ। बहुत अच्छा हुआ।'

बात टल गई। पर क्या सचमुच टल गई है? अनुराग जैसे अपने-आपसे ही भटक गया है। अचला चली गई। व्यर्थ की ज़िद अनुराग ने की और व्यर्थ ही अचला ज़िद पकड़ गई। काश, उसने भी कुछ समझने की कोशिश की होती! अनुराग ने ऐसा तो कुछ कह नहीं दिया था, जिसपर इतना क्रोधित हुआ जाए! निश्चय ही अचला बीमार है।

'मनमोहन कल शाम एक और पत्र दे गया था।' आलोक बोला।

अनराग जैसे सुन ही नहीं सका। वह टकटकी बांधे खिड़की से

बाहर देख रहा था। लगता था जैसे एक तसवीर उसकी आंखों के सामने है। अचला अटैची लिए बाहर चली जा रही है। अनुराग हिदायत देता है और वह एक पल थमकर उस हिदायत को अनुराग पर ही उलीच जाती है।

'क्या सोच रहे हो ?' एकाएक आलोक ने पूछा।

'कुछ नहीं।' अनुराग सम्हला, फिर पूछा, 'तुम कुछ कह रहे थे ?'

आलोक मुसकराया, 'अबे, भाभी चली गईं तो तू इस कदर उखड़ गया ?···ऐसा ही होता है, भाई !···यही होता है। यार एक मिनट में बिसर जाते हैं। यह औरत है ही ऐसी चीज।'

अनुराग ने इस ज़िक्र को तोड़ देना ही ठीक समझा, 'छोड़ इन बातों को। तू क्या कह रहा था ?'

आलोक भी सम्हला। असल बात तो इस चुहलबाज़ी में भूल ही गया। सरमा फिर याद हो आई। बोला, 'मैं कह रहा था कि सुबह मनमोहन उसकी एक चिट्ठी और दे गया है।' कहते हुए उसने सिरहाने से पत्र निकाला और अनुराग को दे दिया, 'ज़रा पढ़कर तो सुना।'

अनुराग ने पत्र लिया। खोला और सुना दिया—हमेशा की तरह शिकायतों का एक लम्बा दौर। पर इस बार के पत्र में शिकायतों से कहीं ज़्यादा निराशा है। एक तरह की प्रार्थना भी। क्या सरमा यह समझ ले कि रिश्ता टूट गया ? चेतावनी भी। सरमा समझने की कोशिश करके भी समझ नहीं सकेगी। वह सारे जीवन इसी तरह गलती हुई जिएगी।

पत्र पढ़ने के बाद अनुराग बोला था, 'मैंने कहा न था, तुम बेवकूफ हो ! बेकार ही उसे इतना तंग किया। 'अब भी कहता हूं कि पत्र लिखवा दो। आज, अभी ही। कम से कम उस बेचारी को मालूम तो हो कि तुम ज़िन्दा हो और उसे याद करते हो।'

आलोक ने होंठों पर जीभ फिराई, हां, ठीक कहते हो तुम। अभी ही पत्र लिखवाए देता हूं। और सुनो···किसी पत्र में उसने लिखा था कि फ़ोटो चाहिए···मेरे पास कोई फोटो नहीं है। एक फोटो है, जो तेरे साथ खिचा था। मनमोहन के पास है। सोचता हूं कि वही···'

'हां-हां, भिजवा दो। मैं मनमोहन को फोन कर दूंगा। भेज

देगा।'

'उत्तर अभी लिखोगे?' आलोक ने पूछा।

'लिख दूंगा।' अनुराग ने अलमारी में रखा पैड उठाया और पैन लेकर बैठ गया, 'बोलो…'

आलोक पत्र लिखवाने लगा। बीमार होने की बात साफ टाल गया। लिखवाया कि एक जरूरी काम से कुछ दिनों के लिए बाहर गया हुआ था। लौटकर सरमा के सारे पत्र मिले हैं। यह भी कि एकाध सप्ताह बाद वह बेंगलौर पहुंच रहा है। सरमा से मिलने।

सात

कृष्णा विश्वास नहीं कर सकी। दो बार आंखें मिलीं—अचला? अटैची हाथ में। चेहरा उदास। लगता है जैसे हंस ही नहीं रही।

'मैं ही हूं। देख क्या रही है?' अचला ने आगे बढ़कर अटैची कमरे में एक ओर रख दी। बड़ी कोशिश करके चेहरे पर मुसकराहट पैदा की।

'पर…तू…' कृष्णा अब भी आश्चर्य में थी। कुछ सहज हुई तो बोली, 'तेरे वह भी आए हैं क्या?'

अचला की मुसकान कपूर की तरह उड़ गई। कहा, 'नहीं। उन्हें फुरसत ही कहां है? मैंने तो बहुत कहा था कि चलो, पर बोले, अभी नहीं। कुछ दिनों बाद आऊंगा।'

वे आमने-सामने बैठ गई थीं। कृष्णा को इस बीच विश्वास हो गया था कि सपना नहीं देखा है उसने। अचला ही है और सौ फी सदी है। पर अचला को शादी के तुरन्त बाद इस तरह अकेला देखकर विस्मय ही नहीं हुआ है उसे, कुछ झटका लगा है। लगता है कि कुछ हो गया। न हुआ होता तो अचला इस तरह क्यों आ जाती?

और अचला ने भी कृष्णा की उलझन समझ ली। इसीलिए बहाना खोजा। कहने लगी, 'तू हैरान हो रही होगी कि मैं इस तरह शादी के दो सप्ताह बाद ही कैसे टपकपड़ी हूं। है ना?'

'बिलकुल, हैरानी की बात ही है।' कृष्णा ने कहा, 'अपने उनसे

दो-चार हाथ तो नहीं कर आई ?'

अचला हंसी। बहुत कोशिश करनी पड़ी इस हंसी के लिए। कहा, 'यही समझ ले। मैंने पहली बार ही जो हाथ दिया तो अमरीका उड़ गए।'

'अमरीका ?'

'हां। हायर स्टडीज़ के लिए उन्हें कोई फेलोशिप मिल गई है। इसीलिए रुकना मुमकिन नहीं हुआ। दो दिन हुए फ्लाई कर गए।' अचला ने इतने संयत स्वर में कहा कि कृष्णा मान गई।

'इसका मतलब है कि तू बहुत भाग्यवान साबित हुई उनके लिए! है ना ?' कृष्णा हंसी।

अचला ने कुछ कहा नहीं। भीतर ही भीतर महसूस हुआ जैसे किसीने फोड़े में पिन चुभा दी है। नुकीली पिन।

कृष्णा कह रही थी, 'मैं तो बिलकुल घबरा गई थी। डर लगा कि कहीं तू अपने हसबैण्ड से झगड़ न आई हो। तेरी आदत जानती हूं। बात-बात में तो झगड़ पड़ती थी तू।'

अचला को अनचाहे ही हंसना पड़ा। सारी ज़िन्दगी इसी तरह अपने घावों की टीस पीकर हंसना होगा।

कृष्णा बोली थी, 'अब तू झटपट तैयार हो जा। सरमा के यहां चलेंगे।'

अचला ने इस बार किसी फोड़े के ऑपरेशन की स्थिति महसूस की। दर्द और दर्द! आत्मा को हिलाकर मुंह से चीख निकाल देने-वाला तेज़ दर्द! पर एक गहरी सांस लेकर यह दर्द भी पी लिया। पूछा, 'सरमा कैसी है ?'

'उसका हाल मत पूछ!' कृष्णा उदास हो गई, 'बीमार है। करीब पन्द्रह-बीस दिन से बिस्तर पर पड़ी हुई है।'

'क्या हुआ उसे ?' अचला ने पूछा। जानकर पूछा। अनुराग ने उत्तर नहीं दिए हैं। छल खा चुकी है। बीमार होने की ठहरी।

कृष्णा ने बताया, 'टाइफाइड हुआ था। ठीक भी हो गई थी, पर एक्सपोजर हो गया। कहते हैं इस बार बहुत बिगड़ गया है। खाना बन्द है। चेहरा पीला पड़ गया है...फिर असल बात तो यह है कि उसका 'ए' बहुत गद्दार निकला! ऐसी चुप्पी मारकर बैठ गया है कि छः-छः चिट्ठियां भेजीं, किसीका उत्तर नहीं देता। इधर सरमा के मामाजी एक बजरबट्टू पकड़ लाए हैं। आर्मी का मेजर

है कोई ।'

'बजरबट्टू ?' अचला ने हैरानी से पूछा, 'सो किसलिए ?'

'मामाजी कहते हैं कि सरमा के लिए योग्य वर है। लम्बा-चौड़ा, बढ़िया पर्सनैलिटी, जात-बिरादरी में भी सही। मां-बाप मर चुके हैं। यहां घर भी है, कुछ जायदाद भी। सरमा को कॉलिज फंक्शन में देखकर मामाजी से मिला था वह। अपने-आपको ऑफर कर दिया। मामा-मामी दोनों को ही पसन्द है।'

अचला चुप हो गई। अनुराग याद हो आया। मन में जलती आग जैसे सरमा का हाल सुनकर ज़्यादा ही धधक उठी। पर क्या कर सकती है अचला ? जानती है कि उसके पति ने ही उसकी सहेली को छला है। उसकी मौत का ज़िम्मेदार भी वही होगा।

'क्या सोचने लगी तू ?'

'कुछ नहीं।' अचला चौंकी। बात बदल दी, 'सोच रही हूं कि सरमा के 'लवर' ने कितनी दगा की उसके साथ ! आधी बीमारी तो यही है उसकी।'

'आधी बीमारी नहीं, एक तरह पूरी।' कृष्णा ने कहा, 'मैं तो तुझे कल ही एक चिट्ठी लिखने वाली थी। जिस शहर में तू ब्याही है उसीमें तो है सरमा का 'ए'। सोचा था कि लिख भेजूंगी—तू उससे मिले। मगर....'

कृष्णा आगे कहना चाहती थी, पर कह नहीं सकी। उसके माता-पिता मन्दिर से लौट आए थे। अचला को इस तरह आए देखकर वे भी हैरान हुए। वही जवाबतलबी की थी उन्होंने। पर कृष्णा ने बीच में ही सारी कहानी सुना दी। आश्वस्त हो गए।

कृष्णा अचला को अपने कमरे में ले गई थी। थोड़ी देर बाद दोनों तैयार हुईं। सरमा के घर चल पड़ीं।

सरमा की जितनी हालत कृष्णा ने बयान की थी, उससे कहीं ज़्यादा बदतर हालत अचला ने पाई। ठीक तरह बोल भी नहीं पाती। चेहरा इस तरह सूख गया है, जैसे किसीने रीते इंजेक्शन लगाकर सारा लहू खींच लिया हो। उठना दूभर। सरमा ने अचला को पलकें झपकाकर देखा था। एक उदास मुसकान होंठों पर तिर-कर इस तरह गायब हो गई थी जैसे एकदम कोई परछाईं आ पड़ी

हो। सारी चमक, सफेदी गायब।

'आओ···कब आईं?' कमज़ोर, बहुत कमज़ोर आवाज़। इतनी कमज़ोर जैसे किसीने इस आवाज़ को ताबूत में बन्द कर रखा है और ताबूत भेदकर आवाज़ बाहर आ रही है।

कृष्णा ने उसे उठने से नाहीं कर दी। एक ओर पलंग के पास ही तिपाई पर दवाएं रखी हैं। ग्लूकोज़, फल और न जाने क्या कुछ। अचला बोल नहीं सकी। भयाक्रांत कभी सरमा के मृतवत् चेहरे और कभी कमरे के सूनेपन को देखती रही। कृष्णा उसे बता रही थी कि अचला का आना कैसे हुआ। वही झूठ, फिर से ढाल बन गया था।

पर यह झूठ कब तक ढाल बनाए रखेगी अचला? जी हुआ कि सच-सच कह डाले। सरमा को बता दे कि उसका 'ए' और कोई नहीं, अचला का पति है। वही छली, जिसने एक ओर सरमा को छला, दूसरी ओर अचला को। पर नहीं। यह कहा नहीं जा सकेगा। सरमा की यह हालत! पीले पत्ते की तरह टूट जाएगी। यह झठ अचला को हमेशा पचाए रखना होगा। सिर्फ अपने लिए नहीं, सरमा के लिए भी!

सरमा ने होंठों पर जीभ फिराई। कहा, 'मैं तेरी शादी में आ ही नहीं सकी। और अब लगता है कि जीजाजी के लौटने तक इंतज़ार नहीं कर सकूंगी। कैसी अभागिन हूं मैं!'

'ऐसी कैसी बातें करती है सरमा? तू ठीक हो जाएगी। बहुत जल्दी ठीक हो जाएगी।' अचला का स्वर कांप गया। आंखें भर आईं। दर्द का फोड़ा रह-रहकर टीस देने लगा था। वही तो है, जिसके कारण सरमा की यह दशा हो गई है। छि:!

'झूठ बात है।' सरमा कह रही थी, 'यह दिलासा अब कारगर होती नहीं लगती। सब बेकार बात है।'

कृष्णा ने उसे झिड़क दिया, 'ऐसी बातें करेगी तो हम लोग चले जाएंगे!'

सरमा चुप हो गई। पर अचला को लगा कि झूठ कुछ भी नहीं कहा है। इन आंखों के गिर्द, जो धीरे-धीरे कालापन बढ़ आया है, अचला उसे खूब पहचान रही है। जाने क्यों अचला को भी लग रहा है जैसे सरमा बचेगी नहीं। आदमी बड़े से बड़े रोग से जूझ सकता है, पर अगर यह जूझने की शक्ति ही नष्ट हो चुकी हो

तो काहे से जूझेगा ?

मामी आईं। चिन्तित। एक खुराक दी और चली गईं।

कृष्णा इधर-उधर देखती रही। जिक्र टाल देना ही ठीक लगा। इसीलिए बोला, 'बजरबट्टू नहीं दीखा! कहां गया है ?'

सरमा मुसकराई, 'यहीं कहीं होंगे। तुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए उनसे।'

'क्यों ?' कृष्णा ने कुछ नाराज़ी के साथ कहा, 'देख तो रही हूं कि वह ज़बरदस्ती तुझपर लादा जा रहा है। उससे साफ-साफ क्यों नहीं कह देती तू कि वह होगा नहीं ?'

सरमा चुप रही।

'तो ठीक है, मैं कह दूंगी।' कृष्णा ने कहा, 'बेकार ही इधर से उधर फिरता है। बड़ा हमदर्द बनता है।'

सरमा ने इस बार भी उत्तर नहीं दिया।

'नाम क्या है उनका ?' अचला ने दबे स्वर में पूछा।

'बजरबट्टू!' कृष्णा ने चिढ़कर कहा।

सरमा मुसकराई, यह तो यों ही है, अचला। उनका नाम है—रमेश बाबू।'

'र्अ्-मेएश् बाबू!' कृष्णा ने कुछ कुढ़कर कहा।

सरमा हंस पड़ी।

तभी रेमश ने कमरे में प्रवेश किया। डाक्टर साथ। एक ओर बैठी कृष्णा और अचला उठ खड़ी हुईं।

अचला देखती रही रमेश की ओर। लम्बा-पूरा कद। आकर्षक व्यक्तित्व। चेहरे पर चिन्ता लिखी हुई। पहली नजर में देखने पर ऐसा तो आदमी नहीं लगता, जिसके मन में कोई गांठ लगी हो। पर दूसरे ही क्षण अचला ने विचार छोड़ दिया। बरबस ही उसे अनुराग याद हो आया था। लगता तो वह भी नहीं था, मगर कितना जहर भीतर बटोरे हुए था, बाद में मालूम हुआ। पहली-पहली बार देखने पर आदमी का ऐक्सरे कैसे हो सकता है! उसे समझने में वक्त लगता है।

डाक्टर स्टेथस्कोप लगाए जांच-पड़ताल में व्यस्त। रमेश बैग एक ओर रखकर आज्ञाकारी भाव से खड़ा हुआ था

डाक्टर ने जानकारी मांगी, 'रात को नींद आई थी ठीक तरह ?'

रमेश ने उत्तर दिया, 'मेरा खयाल है नहीं आई। चार-पांच बार तो पानी ही दिया। दवा के लिए भी जगाने की ज़रूरत नहीं हुई। हर बार जागती ही मिलीं।'

कृष्णा ने मुंह सिकोड़ा, 'मुर्गा कहीं का ! बिना वजह बीच में बांग देने लगता है। बता रहा है कि रात-भर सरमा के लिए जागता रहा है। उंह !' पर यह सब इतने धीमे स्वर में कहा गया था कि पास खड़ी अचला ही सुन सकी सिर्फ। घूरकर कृष्णा की ओर देखा। इनकार कर रही थी—इस तरह नहीं कहना चाहिए !

पर रमेश इस सबसे बेखबर। वह डाक्टर के सवालों का उत्तर अधिकारी ढंग से देता रहा। मरीज़ की हर उलझन उसने इस तरह बतलाई, जैसे उसकी अपनी परेशानी हो।

डाक्टर ने इन्जेक्शन दिया। सरमा की ओर एक बार मुसकराया और फिर चल पड़ा। बैग उठाकर उसके पीछे-पीछे रमेश चला गया।

कृष्णा खुली, 'यही है बजरबट्टू ! देखा तूने ?' वह अचला से कह रही थी, 'इस तरह बात करता है जैसे सरमा इसकी जोरू है ! क्या कान्फीडेंस से बयान कर रहा था ! है ना ?'

अचला कुछ कहती, पर सहम गई। उसने देखा, रमेश फिर से कमरे में आ गया था। बिना कुछ कहे एक बार अचला की ओर देखा, फिर चुपचाप दवा की शीशियां उठाकर चला गया।

कृष्णा उसे घूरती रही। उसके जाते ही बोली, 'जाने क्यों मुझे इसपर गुस्सा आता है, अचला !'

'तेरा क्या बिगाड़ा है उसने ?' अचला ने मुसकराकर पूछा।

'बिगाड़ा-बिगाड़ा बेचारे ने कुछ नहीं है। पर गुस्सा आता है।' कृष्णा ने उत्तर दिया, 'कभी-कभी ऐसा होता है ना अचला कि किसीके चेहरे को देखते ही बिना कारण गुस्सा आने लगे ?'

अचला हंस दी। उत्तर भी क्या दिया जा सकता था ?

सरमा करवट बदलने की कोशिश करने लगी थी। अचला ने उसे सहारा दिया। कितना जी हो रहा है कि अचला से बातें करे, पर कमज़ोरी के मारे हर शब्द में माथा दर्द करने लगता है। पलकें मूंद लीं। सोचा, इस तरह कुछ शान्ति मिलेगी।

अचला उठ पड़ी, 'चलो कृष्णा। इसे आराम करने दो।'

'नहीं-नहीं,' सरमा ने कहा, 'तुम बैठो। मैं सो नहीं रही हूं।

सिर्फ आंखें मूंदे रहना चाहती हूं। इस तरह पड़ी रहती हूं तो अच्छा लगता है।'

कृष्णा उठ पड़ी थी। कहा, 'थोड़ी देर बाद फिर आ जाएंगी हम। तू आराम कर ले।'

फिर दोनों चल पड़ीं। रास्ते में रमेश मिल गया। साइकल दौड़ाता हुआ जल्दी-जल्दी सरमा के घर की ओर चला आ रहा था। कृष्णा की ओर देखकर मुसकराया था अब। पर रुका नहीं। चला गया। कृष्णा ने कहा, 'देखा, अचला! है ना बजरबट्टू! बिना कारण ही मुसकरा गया है।'

अचला ने कुछ नहीं कहा।

कृष्णा कहती गई, 'इसको देखती हूं तो लगता है कि इसकी आंख-नाक मीड़कर सब बराबर कर दूं।'

अचला का जी हुआ कि खिलखिलाकर हंस पड़े, पर हंस नहीं सकी। एक बार फिर से अनुराग याद हो आया था।

टेबल पर दवा रखकर रमेश एक ओर कुरसी में जा घुसा। टकटकी बांधे हुए अपनी उदास आंखें सरमा की ओर लगाए रहा। उसकी पलकें मुंदी हुई थीं। सो रही है। उसे सरमा से हुई अपनी भेंट अनायास ही याद हो गई। कालिज-फंक्शन के एक नाटक में रोल किया था सरमा ने। रमेश ने उसे पहली बार वहीं देखा था। नाटक खत्म होने के बाद बधाई देने गया था। सरमा ने आत्मीयता से उसकी बधाई का स्वागत किया था।

'सचमुच आपने बहुत अच्छा अभिनय किया।' वह बोला था, 'समझ में नहीं आ रहा है कि आपको किस तरह बधाई दूं।' वह सरमा की ओर देख रहा था। मेकअप उतार चुकी थी वह। कपड़े भी बदल लिए थे, पर रमेश को उस क्षण भी लग रहा था जैसे वह स्टेज वाली कमनीय शकुन्तला को ही देख रहा है। नाजुक कमर, लचीला बदन, अंग-प्रत्यंग किसी सांचे में ढले हुए, मधुर स्वर। सरमा उस अभिनय के बाद सारे कालिज में 'शकुन्तला' ही कही जाने लगी थी।

'धन्यवाद!' सरमा ने आभार व्यक्त किया था।

रमेश उससे बातें करना चाहता था, पर अवसर नहीं मिला।

सरमा को अन्य लोगों ने घेर लिया था। सभी उसीकी तरह बधाइयां देने पहुंचे थे। रमेश नमस्ते करके विदा हो गया था।

फंक्शन खत्म हुआ। रमेश यहां-वहां उसे खोजता रहा। बात न हो तो भी वह उसे एक बार देखना चाहता था। क्यों ? यह वह स्वयं ही नहीं जानता था। देखने की इच्छा हो रही थी।

पर नहीं मिली थी वह। रमेश ऊबता हुआ चल पड़ा था। बार-बार सरमा उसकी आंखों के सामने आ जाती। रास्ते में सरमा मिल गई। वह तेज चाल में सड़क पर चली जा रही थी।

रमेश ने उसके पास साइकल जा रोकी, 'अरे, आप ? पैदल ?'

'जी हां। कोई कन्वेएंस नहीं मिला। बस भी नहीं है।'

'रहती कहां हैं आप ?' रमेश साइकल से उतर पड़ा।

सरमा ने पता बताया। रमेश जैसे कुछ याद करता हुआ सा बोला था, 'वहीं ना, जहां शिवप्रसादजी रहते हैं ? उसी मकान में ?'

सरमा ने उसकी ओर देखा फिर बताया, 'हां। शिवप्रसादजी मेरे मामा हैं।'

'शिवप्रसादजी की भानजी हैं आप ?' रमेश चकित होता हुआ सा बोला, 'कमाल है ! उनसे मिलने तो मैं कई बार घर गया हूं। कभी आपसे भेंट नहीं हुई।'

'इत्तफाक है।' सरमा ने कहा।

रमेश एकदम बेतकल्लुफ हो गया था, 'आइए, बैठिए। पीछे। आपको घर छोड़ दूं।'

'नहीं-नहीं।' सरमा ने संकोच किया, 'मैं चली जाऊंगी।'

'इतनी दूर पैदल जाएंगी !' रमेश ने कुछ नाराज़ी के साथ कहा, 'ऐसा कैसे हो सकता है ! आप नहीं जानतीं, शिव बाबू मेरे बहुत पुराने परिचित हैं। मतलब हमारे पारिवारिक परिचित। मेरे पिता और शिव बाबू एक ही साथ इस शहर में आए थे। मेरे पिता की मृत्यु के बाद से सम्बन्ध थोड़ा कट-सा गया। पर मैं उन्हें खूब जानता हूं। वह भी। बैठिए, तकल्लुफ मत कीजिए।'

रमेश ने जिस अधिकार और आत्मीयता के साथ कहा था, सरमा इनकार नहीं कर सकी। वह साइकल पर बैठ गई थी और रमेश तेज़ी से चल पड़ा था। बड़बड़ाता हुआ, 'हद हो गई। मुझे पहले मालूम होता तो···' वह कहते-कहते रुक गया।

सरमा ने पूछना भी चाहा था—तो क्या होता ?

पर पूछा नहीं। इतने साधारण-से परिचय में बहुत खुला तो नहीं जा सकता। यही क्या कम है कि सरमा उसके साथ साइकल पर सवार होकर जा रही है।

घर पहुंचे थे वे। सरमा उसे दरवाज़े से ही रवाना कर देना चाहती थी, पर रमेश बड़ा बेतकल्लुफ हो गया था। 'घर में छोड़ूंगा आपको।' हंसते हुए उसने कहा था, 'बिलकुल शिवप्रसादजी तक। इस बहाने उनसे मिल भी लूंगा। बहुत अर्से से नहीं मिला हूं।'

शिवप्रसाद आए। सरमा के मामा। रमेश को देखकर बड़े हैरान हुए, 'तुम ? सरमा कहां मिली ?'

रमेश ने सारी घटना कह सुनाई। शिव बाबू बहुत हंसे। बोले, 'सरमा को तुम्हारे बारे में पता नहीं है। होता भी कैसे ? कभी अवसर ही नहीं आया। खैर, अच्छा ही हुआ इस बहाने भेंट हो गई।'

सरमा भीतर चली गई थी। रमेश शिव बाबू के साथ बैठा रहा था। जाने लगा तो उन्होंने रोक लिया। बोले, 'नहीं। अब खाना खाकर जाओ तुम।'

'पर...'

'पर क्या ? होटल के खाने से तो यह खाना अच्छा ही होगा।' शिवप्रसाद ने सरमा की मामी से कहा था, 'खाने की तैयारी करो।' फिर रमेश को विदा करके दोबारा आने के लिए कहा था।

उसके जाने के बाद सरमा को उसके बारे में बताया था, 'बहुत होनहार लड़का है। कालिज में फर्स्ट आता रहा। इसके पिता से बहुत पुराने सम्बन्ध रहे हैं हमारे। अपनी बिरादरी का है। पर इस शहर में असहाय हो गया है।'

सो कैसे ? सरमा ने पूछना चाहा था, किन्तु शिवप्रसाद स्वयं ही बताते गए, 'माता-पिता का निधन हो गया। अकेला है। मकान है। कुछ दुकानें हैं। उनका किराया आता है। स्वयं नौकरी ढूंढ़ रहा है।'

सरमा ने ज़्यादा रुचि नहीं ली थी। पर शिवप्रसाद को जैसे मुंह मांगी मुराद मिल गई। रमेश अब गाहे-बगाहे इस घर में आने लगा था। शिवप्रसाद और उनकी पत्नी उसका आत्मीयता और आदर से स्वागत करते। उस दिन तो यह स्वागत श्रद्धा में बदल

गया था, जिस दिन रमेश ने दबे-मुंदे शब्दों में सरमा के लिए अपने-आपको प्रस्तुत किया। बोला था, 'मुझे विश्वास है कि आप इनकार नहीं करेंगे।'

शिवप्रसाद खुश। खुशी ही थी, जिसके कारण मुंह से एकदम बोल नहीं निकल सका। कल्पनातीत सुख मिला था उन्हें। सरमा बिन मां-बाप की बेटी, शिवप्रसाद के कोई संतति थी नहीं। आर्थिक स्थिति भी ऐसी नहीं कि योग्य वर ढूंढ़ पाते। वैसे में रमेश का अपने-आपको प्रस्तावित करना ऐसे ही था जैसे घर बैठे भगवान आ गए हों। उस सारे दिन हवा में तिरे-तिरे घूमते रहे थे। तरह-तरह से भगवान और पूर्वजों का स्मरण करते हुए, 'कितनी अच्छी बात है! मैं तो अपने जीवन में यह चमत्कार सोच भी नहीं सकता था। सरमा इस लड़के के साथ राज करेगी। पांच सौ रुपये माहवार से ज्यादा तो किराया ही आ जाता है। फिर दो ढाई लाख की जायदाद खड़ी है सो अलग।...'

मामी भी खुश थीं। उन्होंने रमेश से कहा था कि होटल का खाना छोड़ दें, यहीं खा लिया करें।

थोड़ी ना-नुच के बाद रमेश वहीं खाने लगा था। कभी-कभी एकांत मिल जाता, रमेश किसी न किसी बहाने सरमा से बात करने की कोशिश करता, पर सरमा बहुत संक्षिप्त-सी बातचीत करती।

सरमा के रुख ने रमेश को निराश किया था, पर अपने-आपसे तर्क करता और कोई कारण न ढूंढ़ पाता। जब-जब सरमा से बात करता, सरमा उसे पत्ते से काट देती।

ऐसा क्यों करती है सरमा? रमेश सोचता, पर कोई कारण नहीं। एक दिन निश्चय कर लिया था उसने। सरमा से पूछ लेगा, क्या उसे वह पसन्द नहीं है?

वह दिन...रमेश को अच्छी तरह याद है।

सरमा अकेली थी घर पर। कालिज बन्द। शिवप्रसाद पत्नी के साथ बाजार गए थे। रमेश खाना खाने के लिए नियमानुसार ठीक ग्यारह बजे पहुंच गया था। अपने साथ थोड़ी-सी सब्जी और बाजार से फल खरीद लाया था। रोज यही करता। शिवप्रसादजी खाने के बदले कैश तो स्वीकार नहीं सकते थे। इसी तरह उनका खर्च पूरा किया जाए। रमेश ने तरीका ढूंढ़ निकाला था।

उसने थैला सरमा की ओर बढ़ा दिया, 'लो। और फटाफट

खाना खिलाओ। बहुत भूख लगी है।'

सरमा बहुत खुल गई थी। रमेश अपरिचित नहीं रह गया था। महीने-भर से ऊपर हो चुका है इस घर में। एक तरह से घर का सदस्य ही बन गया है। बोलने में अधिकार और अपनत्व का भाव होता है। होने का ठहरा। शिवप्रसादजी कह चुके हैं, सरमा का रिश्ता पक्का। पर सरमा से मिलता है तो लगता है, बात बनेगी नहीं। पूछा, 'बाबू कहीं गए हैं?'

बाबू ही कहता है शिवप्रसाद को। सरमा रसोई में खाना परोस रही थी। वहीं पहुंच गया था रमेश। सरमा ने उत्तर दिया था, 'हां। बाज़ार गए हैं। उनके किन्हीं मित्र के यहां पोते का मुंडन है। उसी समारोह में।'

'यानी दो-चार घंटे लग जाएंगे?'

'हां, इतना तो सहज है।' सरमा ने उत्तर दिया। थाली परोस दी। रमेश थाली ले आया। खाने लगा। सरमा से पूछा था, 'तुम नहीं खाओगी?'

'नहीं।' सरमा ने कहा, 'देर में खाती हूं। आप तो जानते ही हैं।'

रमेश कुछ नहीं बोला। दो-चार ग्रास मुंह में डाले, पर स्वाद गुम। आज घर से चलते समय सोच आया है—सरमा से स्पष्ट पूछेगा। ज़ोर-ज़बरदस्ती की बात तो है नहीं। इन मामलों में संकोच नहीं होना चाहिए। इसीलिए पूछना चाहता है, किन्तु किस तरह पूछे, यही सोचने लगा है।

सामने सरमा खड़ी थी—सरमा नहीं शकुन्तला। देखता है तो वही लगती है। उतनी ही सौन्दर्यमयी, उतनी ही आकर्षक, उतनी ही सरल। एक बार देखा और देखता रह गया है।

सरमा ने चुटकी ली, 'खाना खा रहे हैं या फिल्म देख रहे हैं?' वह हंसी।

रमेश सकपका गया। 'हां-हां।' जल्दी-जल्दी दो ग्रास तोड़े, खा लिए। फिर एकाएक बोला था, 'सरमा!'

'कहिए?'

कठिनाई से अपने-आपको बटोरा था उसने, 'बहुत दिनों से एक बात पूछना चाहता हूं। अगर बुरा न मानो तो पूछ लूं?'

'पूछिए।' सरमा सहजता से बोली थी।

'बात यह है कि···' वह कहते-कहते रुक गया। वही भटकाव। फिर से भूल गया है कि किस तरह पूछा जाए।

'कहिए ना ?'

'हां-हां।' उसने एक ग्रास मुंह में डाल लिया। एक घूंट पानी को लेकर ग्रास मुंह के भीतर धकेला, फिर कहा, 'तुम्हें मालूम है ना कि बाबू से मैंने तुम्हें मांगा है ?'

सरमा को शायद इस बात की आशंका नहीं थी। यह भी नहीं सोचा था कि रमेश उससे ज़िक्र चलाएगा। इसीलिए सिटपिटा गई।

'मालूम है ना ?' वह दोबारा पूछ रहा था।

'हां, मालूम है।' सरमा ने कहा। उसकी आवाज़ बहुत ढीली हो गई थी। ऐसे जैसे कोई झींगुर बोला हो। कमज़ोर आवाज़।

रमेश ने कहा, 'तुम्हारी अपनी क्या राय है ?'

सरमा ने उसकी ओर देखा, पलकें झुका लीं।

'संकोच की बात नहीं, सरमा। साफ-साफ कहो।' रमेश एकाएक बुलन्द हो गया, 'हो सकता है कि तुम मुझे पसन्द न करती हो। केवल संकोच के कारण 'हां' कर दो और फिर तुम्हें मानसिक कष्ट हो। कम से कम मैं कभी नहीं चाहूंगा।'

सरमा चुप।

रमेश ने खाना बन्द कर दिया था। सरमा के झुके हुए चेहरे की ओर देखता रहा। इस निर्णायक क्षण में उसे भी कम साहस बटोरकर अपने-आपको नहीं संभालना पड़ रहा है। डर लगता है अगर सरमा ने कह दिया कि वह नहीं चाहती, तब रमेश का क्या होगा? टूट जाएगा बिलकुल! पर···शायद सरमा यह कहेगी नहीं।

और सरमा सोचने लगी थी कि क्या कह डाले—यह हो नहीं पाएगा। रमेश पूछेगा—क्यों ? तब सरमा क्या उत्तर देगी ? यह तो कहा नहीं जा सकता कि सरमा किसी और को चाहती है। तब उत्तर क्या होगा ? रमेश में कोई दोष नहीं है। पढ़ा-लिखा है, योग्य हैं, सच्चरित्र है, विनम्र है, सभ्य है। वह कारण अवश्य ही पूछेगा और सरमा के पास कोई कारण नहीं होगा।

'बोलो, सरमा !' रमेश कह रहा था, 'मैंने हर बार महसूस किया है, जैसे हमारे बीच ऐसा कुछ है, जो एक-दूसरे में दूरियां पैदा

करता है । यह ठीक है कि मुझे दुःख होगा अगर तुमने कोई निगेटिव उत्तर दिया । फिर भी यह जान लेना जरूरी है । मैं कभी नहीं चाहूंगा कि हम लोग एक-दूसरे के प्रति बाध्य होकर जुड़ें । मैं साफ-साफ सु नना चाहता हूं ।'

सरमा उसकी ईमानदारी से इतनी प्रभावित है कि चाहकर भी यह साहस नहीं कर पा रही कि इनकार कर दे ।

पर आज रमेश नहीं मानेगा । उत्तर लेकर ही जाएगा । 'हां' या 'ना' । इस दुविधा की स्थिति को बहुत दिनों नहीं चलाए रखा जा सकता । उसने सरमा के करीब आकर कहा था, 'तुम्हें बताना ही होगा, सरमा ! क्या बात है ? क्या मुझमें कोई दोष लगता है तुम्हें ?'

'नहीं-नहीं, यह क्या कहते हैं रमेश बाबू !' सरमा बोल पड़ी । ऐसा दुस्साहस नहीं कर सकती । रमेश को वह प्रेम नहीं करती, किन्तु आदर देती है । आज यह आदर दो गुना हो गया है । रमेश के प्रति उसकी श्रद्धा बढ़ गई है । वह सरमा से उसकी इच्छा जानना चाहता है ।

रमेश कह रहा है, 'यकीन करो, सरमा । तुम्हारी स्वीकृति के बिना मैं एक कदम भी आगे नहीं बढ़ूंगा । यदि मुझे तुम्हारा इन-कार सुनने को मिला, तो मैं अपने-आपको तुम्हारे जीवन से हटा लूंगा ।···पर आज इतना अवश्य ही कह देना चाहता हूं कि मैं तुम्हें चाहता हूं । तुम्हें प्यार करता हूं । तुम्हारे साथ अपनी जिन्दगी को ज्यादा खुश और सुखी पा सकता हूं ।'

सरमा ने होंठ दबा लिए ।

'बोलो, सरमा !' वह अनुनय करने लगा था । 'मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि अपनी ओर से तनिक भी शिकायत नहीं होने दूंगा । मैं तुम्हारी खुशी के लिए···'

सरमा उठ खड़ी हुई थी, 'नहीं-नहीं, रमेश बाबू । यह···यह नहीं हो सकता । मेरी परीक्षा मत लीजिए ।'

'क्यों ?' रमेश उसके सामने खड़ा हुआ । उसकी ठोढ़ी अपनी अंगुलियों से उठाकर पूछने लगा था, 'क्यों नहीं हो सकता ? क्या मैं तुम्हें पसन्द नहीं हूं ?'

'नहीं, सो बात नहीं है···पर···' सरमा हकला उठी ।

'पर क्या ? कुछ मालूम तो हो ।' रमेश ने उसे कुरेदा ।

'मैं···मैं किसी और को प्यार करती हूं रमेश बाबू।' सरमा कैसे कह गई थी, उसे स्वयं ही मालूम नहीं हुआ था।

रमेश ने फिर कुछ नहीं कहा। सरमा की बांह को छोड़कर अपना हाथ अलग कर लिया। चुपचाप खाने की टेबल पर जा बैठा। सरमा खड़ी रही थी। उसकी ओर से पीठ किए हुए। वह थोड़ी देर के लिए अस्तव्यस्त होकर टेबल पर रखी थाली की ओर देखता रहा।

कमरे में चुप्पी थी।

अचानक रमेश ने पूछा था, 'कौन है वह?'

सरमा ने उत्तर नहीं दिया।

रमेश भावुक हो उठा था, 'यकीन करो, सरमा। मेरी ओर से तुम्हें सहायता ही मिलेगी, अवरोध नहीं। पर जानना चाहता हूं कि वह भाग्यशाली है कौन?'

सरमा ने अनुराग का नाम बता दिया था। यह भी कि किस शहर में है। यह भी कि किस तरह मुलाकात हुई थी और यह भी कि उसके पत्र सरमा के पास आते रहते हैं।

रमेश ने सब कुछ सुना था। इस तरह जैसे हर शब्द उसकी सांसों को छीन रहा हो। अन्त में बोला था, 'ठीक है। मैं कोशिश करूंगा कि तुम्हें भूल जाऊं। पर क्या मैं यह जान सकता हूं कि बाबू को यह सारी बात मालूम है?'

'नहीं।'

'तुम्हें उनसे साफ-साफ कह देना चाहिए।' रमेश ने कहा।

सरमा पर कुछ कहते नहीं बना।

रमेश बोला था, 'मेरा खयाल है कि उन्हें एतराज़ नहीं होगा। अगर वैसा कुछ हुआ तो तुम मुझे हमेशा अपने साथ पाओगी। मुझे यही खुशी होगी कि मैं तुम्हारे लिए कुछ कर पाया।' वह खड़ा हो गया था।

सरमा ने मुड़कर देखा—वह कुछ खा नहीं सका था। एक ग्रास टूटा हुआ थाली में ही था।

वह जाने लगा। एक मरीज़ की तरह। सरमा बोली थी, 'मुझे क्षमा कर दीजिएगा रमेश बाबू!'

रमेश मुड़ा। चेहरे पर ज़बरदस्ती हंसी उंड़ेली। सरमा के पास पहुंचा। दोनों हाथों में सरमा का मुंह उठाकर अपनी ओर किया,

'पगली ! इसमें क्षमा की क्या बात है ? क्षमा तो मुझे तुमसे मांगनी चाहिए। अनजाने ही मैं बाबू से तुम्हें मांग बैठा। काश, पहले मालूम होता तो इतनी गुत्थी ही क्यों पड़ती !'

सरमा उसकी ओर देखती ही रह गई थी—अविश्वसनीय ! पर कैसा सच था वह ?

सरमा जानती है कि वह उससे दिल की गहराइयों तक प्यार करता है। पर सरमा कैसी अवश है, उसके प्यार को केवल श्रद्धा दे सकती है। शेष सरमा के पास कुछ है ही नहीं।

और वह भी जानता है कि सरमा कितनी अवश है। वह अपनी ओर से सरमा के लिए बहुत कुछ करना चाहता है। बहुत कुछ··· पर करने के लिए भी ईश्वर ने कैसा अशुभ दिया है। सरमा बीमार है। रमेश उसके लिए इस तरह दौड़-धूप कर रहा है जैसे उसका सगा हो। क्यों कर रहा है, वह नहीं जानता। अभी-अभी डाक्टर कह गया था, 'इन्हें किसी तरह की चोट न लगे। कभी-कभी लगता है जैसे इनकी जिस्मी बीमारी से ज़्यादा बड़ी बीमारी मन की है।'

रमेश निरुत्तर हो गया था। जानता है कि क्या बीमारी है।

डाक्टर ने पूछा था, 'रमेश बाबू, क्या आपकी जानकारी में ऐसी कोई बात है, जिससे मरीज़ को सदमा पहुंचा हो ?'

रमेश उसका चेहरा देखने लगा। जी हुआ कह दे कि जानता है।

डाक्टर जाते-जाते कह गया था, 'ज़रा टटोलकर देखिएगा। कई बार इलाज उस समय बेकार हो जाता है, जब मरीज़ भीतर से ही बीमार हो !'

और रमेश इसी इरादे में बैठा है। सरमा की झपकी खुले और उससे पूछे—क्या बात है ?'

सरमा ने करवट ली। रमेश तत्परता से उठकर उसके पास आया, 'कुछ चाहिए ?'

सरमा ने इनकार में सिर हिला दिया। उसकी ओर देखती रही। सब कुछ सुन चुका है। टूट भी चुका है, फिर किसलिए सरमा की इस तरह सेवा कर रहा है ? सरमा जानती है कि वह रात-रात-भर उसके लिए जागा है। कभी दवा, कभी फल और कभी पानी···

सरमा का हर क्षण, हर कष्ट जैसे उसने बांट लिया है। सरमा की श्रद्धा बढ़ती ही जा रही है। कभी-कभी पछतावा भी होता है कि सरमा उसके लिए कुछ नहीं कर सकी।

वह खड़ा हुआ था, 'जूस पियोगी ?'

सरमा ने इनकार में सिर हिला दिया।

रमेश सोचता रहा कि किस तरह पूछे सरमा के मन की पीड़ा। वह उसके पास ही बैठ रहा, 'सरमा !'

'हूं !'

'अनुराग का कोई पत्र आया इस बीच ?'

'नहीं :'

'तुमने पत्र भेजा ?'

'हां।'

'तुमने उसे अपनी बीमारी की बात लिखी है ?'

'नहीं।'

'क्यों नहीं लिखी ?'

सरमा का उत्तर नहीं।

'टेलीग्राम दूं ?'

'नहीं।'

'ऐसा क्यों ?'

सरमा चुप।

रमेश ने देखा कि सरमा का चेहरा पहले से ज़्यादा बीमार लगने लगा है। यही रोग है। अनुराग का उत्तर न आना। निराशा सरमा के चेहरे पर लिखी हुई है। बोला, 'उसका पता है तुम्हारे पास ?'

सरमा ने कुछ न कहकर सिर्फ उसकी ओर देखा।

'मुझे पता दो उसका।' रमेश ने कहा।

'क्या करेंगे ?'

'यह न पूछो। पता दो।' रमेश ने साधिकार कहा।

इस अधिकार को अस्वीकारने का साहस सरमा में नहीं है। बोली थी, 'मेरे पास नहीं है। कृष्णा से ले लीजिए।'

रमेश ने कुछ नहीं कहा। चल पड़ा।

कृष्णा ने देखा। बहुत हैरान हुई। अकेली ही थी। अचला कहीं गई हुई थी। जब से आई है, इसी तरह सहेलियों के घर जाकर वक्त काटा करती है। रमेश उसके सामने जा खड़ा हुआ था।

उसे सामने पाकर सकपका गई थी कृष्था। बोली, 'क्यों? क्या बात है?' कृष्णा को लगा था कि रमेश सरमा के बारे में कोई बुरी खबर ले आया है।

पर उस समय ज्यादा ही हैरान हुई, जब रमेश ने कहा, 'मुझे अनुराग का पता चाहिए।'

कृष्णा घबरा गई। यह इसे किसने बताया? खुद सरमा ही गुप्त रखती रही है। डर लगा कि कहीं रमेश और शिवप्रसादजी मिलकर अनुराग का कुछ अहित न कर दें। इसीलिए साफ मुकर गई, 'कौन अनुराग? मैं समझी नहीं, आप क्या कह रहे हैं?'

रमेश जानता था कि यह होगा। कृष्णा चौंकेगी और मुकर जाएगी। बोला, 'डरो मत। सरमा से बात करके ही आया हूं। उसे बुलाना होगा। यह तुम लोगों की भूल है कि अब तक अनुराग को सरमा की हालत की खबर भी नहीं दी।'

कृष्णा अब भी उसपर विश्वास नहीं कर सकी। कैसे कर सकती थी? उसे मालूम है कि अनुराग का एक तरह का प्रतिद्वन्द्वी ही है रमेश। बोली नहीं।

'जल्दी करो। अनुराग को टेलीग्राम देना होगा।' रमेश ने कहा।

'मैं तो समझ ही नहीं पा रही हूं, रमेश बाबू, आप कह क्या रहे हैं?' कृष्णा साफ बन गई, 'यह अनुराग कौन है? उसका पता मेरे पास क्यों होने लगा?'

'सरमा ने मुझे सब कुछ बता दिया था। आज नहीं, कई दिन पहले।' रमेश ने कहा, 'तुम्हें अब छिपाव की जरूरत नहीं है। अपनी सहेली पर रहम करो। उसकी आधी बीमारी तो यही है कि अनुराग का कोई उत्तर नहीं मिला है।'

कृष्णा सोच रही थी—यह आदमी है या देवता? समझना कठिन। इसके बारे में कृष्णा क्या कुछ गलत-सलत समझती रही अब तक। जबकि उसका सच उसके सामने है। एक ईमानदार प्रेमी के रूप में। जो अपनी प्रेमिका के जीवन के लिए सब कुछ करने तैयार है।

'मुझपर विश्वास करो, कृष्णा। मैं तुम्हें या सरमा को धोखा देने नहीं आया हूं।' रमेश का स्वर गंभीर था, 'मैं बहुत पहले जान चुका था कि मैं गलत हूं। सरमा किसी और से प्यार करती है। यह ठीक है कि मैं सरमा को चाहता हूं, पर इस एकतरफा चाह से ही तो बात बन नहीं जाती। सोचता हूं, किसी तरह सरमा को खुश देख सका तो उसीमें खुश रह लूंगा।'

कृष्णा ने फिर कुछ नहीं कहा था। अनुराग का पता उसे दे दिया। वह पता लेकर सीधा टेलीग्राफ आफिस गया था। खबर भेजी और शिवप्रसादजी के घर लौट पड़ा।

आठ

अचला घर लौटी, तो कृष्णा ने सारी कहानी कह सुनाई। बोली, 'मैं उसके लिए क्या कुछ सोचती रही, पर वह क्या निकला! शर्म से मैं तो गरदन झुकाए रह गई।'

'तूने पता दे दिया उसे?'

'हां।'

अचला का जी हुआ हंसे। कहे—कितनी मूर्ख है तू? और कितने मूर्ख हैं सरमा और रमेश? समझते हैं कि अनुराग आ जाएगा! जबकि सच यह है कि वह अपना काला मुंह कभी नहीं दिखाएगा! चोर के पैर ही कितने होते हैं?

'मुझे लगता है कि वह भागा आएगा।' कृष्णा कह रही थी, 'मोहब्बत चीज ही ऐसी होती है। देखा नहीं, रमेश प्यार में क्या-क्या कर रहा है बेचारा।'

अचला चुप रही।

कृष्णा उठ पड़ी, 'मुझे ग्यारह बजे यूनिवर्सिटी पहुंचना है। जाती हूं। तू यहीं रहना। लौटकर सरमा के यहां चलेंगे।'

अचला ने कुछ नहीं कहा। कृष्णा उसकी चुप्पी को स्वीकृति मानकर चली गई।

अचला निरुद्देश्य ही कमरे की छत की ओर ताकती हुई बिस्तरे

पर जा लेटी। बीच में सोचा था कि सरमा से सब कुछ कह डाले। उसकी आंखें खोल दे कि जिसके नाम पर वह इस तरह बावरी हुई है, वह कितना बड़ा फ्राड है। पर इरादा छोड़ दिया था। संभव नहीं है। इस समय सरमा को ज़रा-सा भी सदमा जानलेवा हो सकता है।

पर यह सारी स्थिति भी तो सही नहीं जा रही है। अचला बेचैन है। एकसाथ कितने लोग धोखे में हैं? जबकि सच कितना क्रूर और भयावह है, कोई नहीं जानता। एक अचला जानती है, पर मुंह पर ताला पड़कर रह गया है।

कृष्णा के माता-पिता बाहर हैं। दोनों ही नौकरी करते हैं। कृष्णा अक्सर यूनिवर्सिटी या यहां-वहां चली जाती है। दोपहर-भर अचला को घर में अकेली ही काटना होता है। और यह अकेलापन पूर्व-स्मृतियों को ज्यादा उभार देता है। रह-रहकर अनुराग का छल अचला को जलाता है। उसकी बातें, उसका स्पर्श, उसकी स्मृति···सभी कुछ। कितनी कटु है!

घर से पत्र आया है मां का। लिखा है, इस तरह अचानक पति को छोड़कर अचला को बाहर नहीं जाना था। अचला ने उत्तर नहीं दिया। जी हुआ था कि सारा कुछ लिख भेजे। मालूम हो जाए उन्हें भी, कि जिस आदमी को बहुत योग्य समझकर अचला के माथे मढ़ दिया, वह कितना अयोग्य और कुपात्र निकला! पर ऐसी बातें केवल सोची जाती हैं, की नहीं जा सकतीं। अचला को लगता है कि अनुराग को उधेड़ते-उधेड़ते अचला स्वयं भी कहीं नग्न हो जाती है!

झूठ लिख भेजा था घर। कह दिया था कि अनुराग बहुत व्यस्त हैं। उनका घर में रहना न रहना बराबर-सा होता है, इसीलिए कुछ दिनों के लिए अपनी सहेली के यहां चली आई है। फिर एक और कारण सरमा की तबीयत भी थी। उसीको बहाना बना लिया है।

पर कब तक चलेंगे ये बहाने? किसी न किसी दिन इनमें से कोई टूट जाएगा और तब सबके सामने सच आ जाएगा। ऐसा सच छिपा रहता है भला?

फिलहाल छिपा हुआ है। पर अचला को लगता है कि स्वयं को ही छिपाना कठिन हो गया है। जब-जब सरमा या कृष्णा के मुंह से 'ए' की बात सुनती है, तब-तब अपने-आपको संभालना

कठिन हो जाता है। बर्स्ट हो जाना चाहती है। यह कहते हुए कि तुम मूर्ख हो! सब धोखे में हो! अनराग और कोई नहीं, अचला का पति है! अब वह कभी नहीं आएगा। उसका पत्र भी नहीं आएगा!...

दरवाज़े पर आहट हुई। अचला बरामदे में पहुंची। पोस्टमैन लौटा जा रहा है। पत्र एक ओर पड़ा हुआ था। अचला ने उठा लिया। हैण्डराइटिंग!...अनुराग की 'हैण्डराइटिंग!'

कांपते हाथों पत्र खोला। सरमा को सम्बोधित किया हुआ है। लिखा है कि वह बाहर गया था। बहुत दिनों बाद लौटकर उत्तर दे पा रहा है। अपनी तबीयत के बारे में कुछ नासाज़ी बताई है। लिखा है कि जल्दी ही आएगा। और भी बहुत-सी प्रेमल बातें!

अचला पढ़ते-पढ़ते उत्तेजित हो उठी थी। हर पंक्ति पर दस-बीस गालियां अनुराग के नाम निकल पड़तीं। नीच...कमीना और न जाने क्या-क्या!

सबसे ज़्यादा आग लगी थी फोटो देखकर। अनुराग की फोटो! अब भी कुछ प्रमाणित होना शेष रहा है क्या? किसी मित्र के साथ बैठा हुआ है। मित्र, शायद वही आलोक!

अचला देर तक उखड़ी हुई कमरे में चहलकदमी करती रही थी। क्या इस पत्र को सरमा के पास पहुंचा दे?

नहीं। ऐसी भूल नहीं करेगी अचला। छल को ज़्यादा लम्बा खींचना होगा। बचकानापन!

पर यह पत्र सरमा को नई ज़िन्दगी दे सकता है। दे देना चाहिए।

हां, दे सकता है, किन्तु क्या इसलिए कि वह ज़्यादा धोखे खाती जाए? कभी न कभी सरमा को मालूम हो जाएगा कि सच क्या है। उस दिन कितनी चोट लगेगी उसे! किसी झूठी आशा पर उसे भटकाए जाना भी तो ठीक नहीं है।

अचला ने पत्र और फोटो अटैची में रख लिए थे। नहीं देगी। वह इस छल को अपनी स्थिति-उपस्थिति में नहीं पनपने देगी।

शाम को कृष्णा लौटी। वे साथ-साथ सरमा के पास गई थीं। रमेश मौजूद था वहां। कृष्णा को उसे देखकर क्रोध नहीं आया। इसके बजाय सम्मान से उसने कहा था, 'नमस्ते!'

'नमस्ते!'

कृष्णा और अचला उसके करीब बैठ गईं। इधर-उधर की बातें करने लगी थीं। कृष्णा रमेश के जाने के बाद बोली थी, 'सचमुच कमाल का आदमी है यह! मैंने इस तरह के लोग नहीं देखे।

सरमा ने उत्तर नहीं दिया। क्या मुंह से कहना ही जरूरी होता है? सरमा बहुत पहले उसे समझ चुकी है। अविश्वसनीय रूप से रमेश एक देवता की तरह उदय हुआ है उसके जीवन में।

कृष्णा कह रही थी, 'इसका मतलब है कि तूने बहुत पहले ही रमेश बाबू से सब कुछ कह दिया था?'

'हां।' सरमा ने उत्तर दिया।

'मुझे तो विश्वास ही नहीं हुआ, जब वह मेरे पास आए।' कृष्णा बड़बड़ा रही थी, 'इसे कहते हैं प्यार करना!'

अचला ने सुना। माथे में जैसे जोर की चोट लगी। सच ही तो है। सचमुच प्यार करनेवाले ऐसे ही होते हैं। अनुराग याद हो आया। अचला को महसूस हुआ जैसे जलते हुए ज्वालामुखी को पचाए रखने की कोशिश कर रही है।

'तार मिल चुका होगा।' कृष्णा कह रही थी। कल तक उन्हें आ जाना चाहिए। क्यों अचला?'

अचला चौंकी। बोल नहीं सकी।

पर कृष्णा ने ध्यान नहीं दिया उसकी ओर। उसी तरह कहा, 'सुबह तक आ सकते हैं।'

सरमा और अचला चुप रहीं। सरमा अचला की ओर देख रही थी। बोली, 'इन दिनों तू भी कुछ बीमार-सी रहने लगी है?'

'नहीं तो।' अचला ने उत्तर दिया।

'फिर इस तरह चिन्तित क्यों लगती है?'

'इसकी न पूछ, सरमा!' कृष्णा ने उलाहना दिया, 'यह तो हमेशा अपने से हजारों-हजार मील दूर रहती है। अमरीका में। वहीं तो इसके वो हैं।'

सरमा मुस्कराई।

अचला ने कुछ कहा नहीं। कृष्णा ने फिर से चुटकी ली, 'हमेशा उन्हींके बारे में सोचती रहती है। है ना अचला?' उसने अचला की बांह पकड़कर हिला दी।

अचला हंसी—फीकी हंसी। सोचा, ठीक ही कह रही है कृष्णा, अचला उसीके बारे में सोचती रहती है, पर भल सिर्फ यही करती है

कृष्णा कि अचला प्रेमवश उसे याद नहीं करती, बल्कि उससे घृणा करती है।

इधर-उधर की बातें करके उठ आई थीं दोनों। रास्ते-भर कृष्णा यहां-वहां की बातें करती आई, किन्तु अचला किसी भी बात में मन नहीं रमा सकी।

वह दूसरे दिन की शाम भी नहीं आया। न कोई उत्तर। कृष्णा ने कहा था, 'ज़रूर कोई बात है। मेरा खयाल है कि टेलीग्राम मिला ही नहीं। हो सकता है कि वह घर पर न हो।'

अचला चुप रही। मन ज्यादा ही व्याकुल हो उठा। किस झूठ से लिपटे हुए हैं ये लोग !

रमेश कह रहा था, 'समझ में नहीं आता। मैंने तो रिप्लाई पेड वायर किया था...'

'भई आदमी होगा, तभी न जवाब देगा !' कृष्णा बोली।

रमेश चुप हो गया। डाक्टर की बात याद आ रही थी। आज सुबह ही कह गया था—समझ में नहीं आता कि पेशेण्ट पर बढ़िया से बढ़िया दवाइयों का असर भी क्यों नहीं हो रहा है ! अगर यही हालत रही तो केस काबू से बाहर हो जाएगा !

सरमा चुप पड़ी है। आंखें मूंद ली हैं। रमेश ने देखा, पलकों के कोनों पर आंसुओं की बूंदें ढुलक पड़ीं।

रमेश चला गया था। थोड़ी देर बाद शिवप्रसादजी ने खबर दी, 'रमेश कल ही दिल्ली चला जाएगा। फ्लाई करके ही लौटेगा। पता नहीं, ऐसा क्या अर्जेण्ट काम आ पड़ा !'

तीनों समझ गई थीं कि रमेश किसलिए जा रहा है। कुछ कहा नहीं। शिवप्रसाद चले गए थे और कृष्णा सरमा को दिलासा देते हुए किसी बच्चे की तरह समझाने लगी थी, 'तू तो बिलकुल ही पगली है सरमा ! वायर उन्हें मिला ही नहीं होगा। वरना आदमी ऐसी खबर सुने और न आए, इम्पॉसिबल ! यह भी हो सकता है कि कहीं गए हुए हों। क्यों अचला ?' वह अचला की ओर देखने लगी थी। समर्थन की गर्ज से।

पर अचला खामोश।

कृष्णा को अच्छा नहीं लगा। इस मौके पर भी आदमी इस

तरह सुध-बुध खोकर बैठा रहता है ! दो शब्द सान्त्वना के नहीं बोल सकती ! ऐसी कैसी दीवानगी ? पर पी गई। सरमा से कहा था, 'धीरज से काम ले, मेरा खयाल है कि कल तक ज़रूर आ जाएंगे। और फिर रमेश भी तो गए हैं। मुझे लगता है कि साथ ही ले आएंगे।'

सरमा के आंसू थम नहीं रहे थे। अचला पर सहा नहीं गया। उठ पड़ी।

कृष्णा ने पूछा, 'तू कहां जा रही है ?'

'घर।' अचला बोली और इससे पहले कि कृष्णा कुछ कहे, वह दरवाज़े के बाहर निकल गई।

कृष्णा हतप्रभ होकर देखती ही रह गई थी।

रमेश फ्लाई नहीं कर सका। सुबह-सुबह अचला आ गई। सरमा के पास वाले कमरे में ही रमेश से भेंट की थी उसने। बड़ी तेज़ी से सरमा के कमरे का द्वार पार करके चली गई थी वह। सरमा ने देखा था। आश्चर्य हुआ। अचला और इतने सुबह ? वह भी सरमा से नहीं रमेश से मिलने आई है ? आवाज़ भी देना चाहती थी, किन्तु अचला इतनी जल्दी में थी कि सरमा के होंठ खोलते-खोलते गैलरी से निकल गई।

रमेश तैयारी कर रहा था, 'आप ?'

'जी।' अचला बोली थी।

सरमा ने पास के कमरे से साफ-साफ सुना। शायद बहुत गौर भी न करती, किन्तु उनकी अगली बातों ने सरमा का ध्यान खींच लिया। वह चौंक गई थी।

रमेश पूछ रहा था, 'किसलिए तकलीफ की ?'

अचला ने उत्तर दिया, 'आप मत जाइए !'

'मत जाइए ?' रमेश परेशान हुआ, 'यह'''यह आप क्या कह रही हैं ?'

अचला का उत्तर नहीं आया। सरमा को विश्वास नहीं हुआ था उनकी बातचीत पर। रमेश, सरमा के लिए जा रहा है ! और अचला क्यों रोकना चाहती है उसे ? कांपती हुई उठी। दीवार के पास सटकर सुनेगी। दरवाज़ा बन्द है, पर उसमें सांसें भी हैं। भीतर

का दृश्य देख-सुन सकती है।

अचला कह रही थी, 'वही बताने आई हूं। सुनकर आपको आश्चर्य भी होगा, दुःख भी। पर लगता है कि अब छिपाए रखना व्यर्थ है!'

सरमा ने दरार में आंख लगा दी। कमजोरी और थकान के बावजूद इस पल उसके शरीर में उत्तेजना और उतावली ने विचित्र-सी शक्ति पैदा कर दी थी। अच्छी तरह देख-सुन पा रही है।

रमेश हाथ में कोट थामे खड़ा रह गया है। सामने खुली हुई अटैची। सामान बिखरा हुआ। सरमा की तबीयत खराब होने के कारण थोड़ा-बहुत सामान लेकर कुछ दिनों से इसी घर में आ गया था।

अचला गरदन झुकाए हुए जैसे कुछ सोच रही थी। रमेश ने पूछा था, 'मैं समझ नहीं पा रहा हूं अचलाजी। आप···आप कहना क्या चाहती हैं?'

'नहीं चाहती थी कि यह कहूं, पर अब रहा नहीं जाता।' अचला ने किसी ज़ख्म की पीड़ा सहते हुए कहा, 'आप जिन्हें तार दे चुके हैं और लेने जा रहे हैं, वह आएंगे नहीं।'

'क्यों?'

'इसलिए कि उन्होंने सरमा को धोखा दिया है। उन्होंने मुझे भी धोखा दिया है!'

'यह आप क्या कह रही हैं?' रमेश ने घबराकर पूछा।

'हां, रमेशजी। सरमा भोली है। आज तक नहीं जानती कि जिस आदमी से उसका पत्र-व्यवहार होता रहा, वह अनुराग और कोई नहीं मेरे पति हैं। वह किस हद तक गिरे हुए हैं, मैं बयान नहीं कर सकती। सोचती हूं तो मेरा सिर लज्जा से झुक जाता है। मैं सरमा को सब कुछ बता देने की गर्ज़ से ही आई थी, किन्तु यहां आकर देखा कि वह बीमार पड़ी है। इसीलिए कहने का साहस नहीं कर सकी।···पर अब इस झूठ को तोड़ना ही होगा। सरमा के बारे में सोचती हूं तो मन कांप जाता है···'

'ऐसा कैसे हो सकता है, अचलाजी?' रमेश ने चकित होकर पूछा, 'आपके हसबैण्ड तो अमरीका···'

'नहीं, झूठ कहा था मैंने। जानबूझकर झूठ कहा था। इसलिए कि एक झूठ को छिपाने के लिए हज़ार झूठ बोलने पड़ते हैं। पर

लगता है कि झूठ का खेल बहुत दिनों चल नहीं पाता।' अचला कहे गई···

'पर यह हुआ कैसे ?'

अचला बताने लगी थी—आदि से अंत तक सब कुछ सुना डाला था उसने। कविता, हैण्डराईटिंग, सुहागरात की कहानी, पत्रों का जेब से बरामद होना, अभी-अभी कृष्णा के पते पर अनुराग का फोटो आना···सब कुछ !

रमेश सुनता रहा। सुनते-सुनते वहीं, पलंग पर बैठ रहा था। इस तरह जैसे अविश्वसनीय परीकथा सुन रहा हो। दुःखद और रोमांचकारी !

अचला ने आंसू पोंछते हुए कहा था, 'मैं नहीं जानती थी कि उन्होंने मेरी सहेली के साथ इतना क्रूर मजाक किया है ! आज भी विश्वास नहीं कर पाती हूं, पर जो सच है वह बिसराया भी तो नहीं जा सकता !···'

रमेश बैठा है। स्थिर। मूर्तिवत्।

अचला कह रही है, 'सरमा की सांसें किसी धोखे में बंधी हैं। डर लगता है यह धोखा टूट न जाए ! पर बात जहां तक आ पहुंची है, वहां धोखे को ज्यादा टिकाए रहना भी तो कठिन हो गया है।

रमेश चुपचाप बैठा रह गया था। अचला ने कहा, 'आप जाना चाहते हों, तो जाएं। पर जो सच है, वह मैंने आपको बता दिया है। इसलिए कि मुझे यह बहुत जरूरी लगा था।'

रमेश ने कुछ नहीं कहा। अचला लौट पड़ी थी। गैलरी से निकलने को हुई तो सरमा ने बुलाया। बहुत कमज़ोर आवाज़ में—'अ···अचला !'

अचला मुड़ी। घबराई हुई। उसने देखा कि रमेश के कमरे की दीवार से सटी हुई सरमा बैठी है। उसका चेहरा उत्तेजना से भरा हुआ था। उसपर अजीब-सी चमक।

अचला समझ गई थी—शायद सुन लिया है सरमा ने। पर सोच-विचार का अवसर ही नहीं दिया था सरमा ने। बोली, 'मैंने सुन लिया है सब कुछ। अच्छा ही हुआ तुमने रमेश बाबू को रोक लिया। व्यर्थ ही···'

'पर···तुम···' अचला की समझ में नहीं आया कि क्या कहे। सरमा उठने की कोशिश कर रही थी। अचला ने लपककर उसे

सहारा दिया। लड़खड़ाती हुई सरमा को जैसे-तैसे अचला बिस्तरे तक ले आई थी। अज्ञात अनिष्ट की आशंका से अचला की हृदय-गति बढ़ गई थी। मुंह से बोल नहीं फूट रहा था। सरमा लेट गई। गहरी सांस लेकर उसने कहा, 'अच्छा ही हुआ, तुमने सच कह डाला। वरना यह छल कब तक मुझे इस जीवन-मरण के अधर में लटकाए रखता, कौन जानता है! अब मैं शान्ति से मर सकूंगी।'

'ऐसा नहीं कहते, सरमा!' अचला घबरा उठी थी। सरमा के चेहरे की तमतमाहट वह सहन नहीं कर पा रही थी। लग रहा था जैसे सरमा एकदम बदल गई है। उसे कोई रोग नहीं है। उसकी आंखों में लालिमा बढ़ आई है। यह अस्वाभाविक मुद्रा अचला सह नहीं पा रही है···

पर अचला क्या करे, समझ ही नहीं आता।

'घबराओ मत, अचला!' सरमा बोली, 'अब मैं किसीको परेशान नहीं करूंगी। तनिक भी नहीं।····बल्कि मुझे तो दुःख इसी बात का है सखी, मैंने तुम्हें अनजाने ही बहुत कष्ट दिया···'

अचला जल्दी से उसे वहीं छोड़कर दरवाज़े तक दौड़ी गई, 'रमेश बाबू!···मामाजी!···' उसने चीख-चीखकर आवाज़ें दीं। उसे लगा था जैसे सरमा बेकाबू हो जाएगी···

रमेश, शिवप्रसादजी और उनकी पत्नी दौड़े हुए आए।

अचला बौखला गई थी, 'देखिए तो सरमा···'

वे सब घबराए हुए सरमा के पास पहुंचे। उन्होंने देखा, सरमा आंखें मूंदे पड़ी थी। रमेश ने घबराहट में उसका शरीर यहां-वहां टटोला। बोला, 'यह बेहोश हो गई है!'

और किसीके कुछ कहने से पहले दौड़ा हुआ डाक्टर को बुलाने चला गया था। शिवप्रसाद और उनकी पत्नी हक्के-बक्के होकर बैठे हुए थे। अचला खड़ी रही। जी हो रहा था कि ज़ोर-ज़ोर से रो पड़े, पर वह भी भूल गई है।

डाक्टर आया। देखा-भाला। बोला, 'अस्पताल ले जाना होगा। मैं ऐम्बुलेंस मंगवाता हूं।'

घर में भाग-दौड़ शुरू हो गई। अचला जल्दी से कृष्णा को खबर देने चल पड़ी थी।

ड्राइंग-रूम के करीब पहुंचकर कदम रुक गए। अचला तेजी से ओट में हो गई। दो अटैचियां बरामदे में रखी थीं। अचला ने अनुमान कर लिया था कि कोई आया है। पर यह कोई अनुराग और आलोक होंगे—सोचा भी नहीं जा सकता था।

सफर की थकान उन दोनों के चेहरे पर लिखी हुई थी। वे बातें कर रहे थे।

'एक-दो दिन पहले आ सकते तो ज्यादा ठीक था।' आलोक कह रहा था।

'मुमकिन कैसे था!' अनुराग बोला, 'डाक्टर मदान ने हिदायत दे दी थी, दो सप्ताह तुम ज्यादा घूम-फिर नहीं सकते।'

आलोक चुप हो गया।

अचला का जी हुआ कि तेजी से कमरे में पहुंचे और अनुराग के चेहरे पर दो थप्पड़ जड़े, गालियां दे···शायद यह कर भी देती, किन्तु तभी आलोक कहने लगा था, 'मेरी समझ में नहीं आता कि वह पत्र और फोटो कहां रह गया। कृष्णाजी कह रही हैं कि नहीं मिला। तुमने ठीक तरह पोस्ट तो कर दिए थे ना?'

अनुराग ने कुछ नाराज होकर कहा, 'तुम्हें विश्वास नहीं है?'

'सो बात नहीं है यार!' आलोक बोला, 'मैं यूं ही पूछ रहा हूं। कई बार पते में गड़बड़ हो जाती है।···'

'ऐसे कैसे गड़बड़ हो जाती?' अनुराग बोला, 'तुमने मुझसे इतनी बार सरमा के लिए पत्र और पते लिखवाए हैं कि मुझे उनका एक-एक शब्द याद हो गया है। गड़बड़ का सवाल ही नहीं उठता।'

आलोक चुप हो गया। अचला स्तब्ध! कुछ समझ नहीं सकी। आलोक जिस तरह सरमा के मामले में रुचि ले रहा है, बोल रहा है, वह अजीब-सा है। फिर अनुराग का यह कहना कि आलोक ने पत्र लिखवाए···क्या गुत्थी है?

पर गुत्थी कृष्णा ने हल कर दी। वह कॉफी ला रही थी। बोली, 'अनुरागजी, अगर आज आप न आ जाते तो···'

अनुराग ने बात काट दी, 'मेरा नाम न लीजिए, कृष्णाजी। आलोक कहिए। मैं तो सरमा को जानता तक नहीं। इस कम्बख्त ने अपने प्रेमपत्र मुझसे लिखवा-लिखवाकर और मेरे नाम का उपयोग कर-करके हमेशा के लिए अपनी और सबकी जबान बदल दी है।'

आलोक हंस पड़ा। कृष्णा भी।

इसका मतलब है कि 'ए' आलोक है, अनुराग नहीं! ओह! कितनी भयानक गलतफहमी! अचला का सिर घूमने लगा। जैसे-तैसे अपने-आपको संयत रख सकी। अब समझने के लिए बहुत कुछ शेष नहीं था।

वे कॉफी पी चुके। कृष्णा बोली थी, अब आप लोग जा सकते हैं। मुझे दुःख है कि मैंने आप लोगों को सरमा तक पहुंचने में थोड़ी देर रोक लिया...'

आलोक उठ खड़ा हुआ यह कहते हुए कि वह भी कम अपराधी नहीं है। बोला, 'सच तो यह है कृष्णाजी कि यह देर मैंने ही की है। एकदम सरमा के घर पहुंचने की हिम्मत नहीं हो रही थी। सोचा, पहले आपसे हाल मालूम करता चलूं। आपको कष्ट हुआ...'

कृष्णा हंस दी, 'कष्ट कैसा? मैं भी थोड़ी देर में वहीं आती हूं।'

वे दरवाज़े की ओर आए। अचला तेज़ी से दूसरे कमरे में चली गई। अब अनुराग का सामना करने का भी साहस नहीं रहा था उसमें। वे अटैचियां वहीं छोड़कर चले गए थे।

अचला की समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करे? क्या वह उनसे सब कुछ कह डाले? किन्तु कैसे कह सकेगी? इतना आत्मबल कहां से आएगा उसमें? अचला ने अनजाने ही अपनी सहेली को मौत के मुंह में धकेल दिया है। अचला ने अपने पति को बिना समझे ही अपमानित किया है! अचला ने इस सारे मामले में कितना घिनौना रोल अदा किया है, इसकी कल्पना करके वह खुद ही कांप उठी है!

वे पहुंचेंगे। सरमा को लेकर एम्बुलेंस जा चुकी होगी। सरमा नहीं जी सकेगी! काश, सरमा एक बार होश में आकर सचाई को जान सके! अचला उसके पैरों में सिर रखकर क्षमा-याचना करेगी! अचला इस पाप का प्रायश्चित्त करेगी!...

'अरे, तू यहां है?' कृष्णा ने आकर पूछा।

अचला पर कुछ कहते न बन पड़ा।

कृष्णा बोली, 'सरमा का वह आ गया है। पर अजीब मज़ेदार बात रही है अचला। उसका नाम अनुराग नहीं, आलोक है। पत्र

लिखनेवाला भी वह नहीं है। अपने पत्र अपने दोस्त अनुराग से लिखवाया करता था। वही नाम मुहब्बत में चला दिया !···देखो तो क्या मजाक रहा है···' कृष्णा ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी थी।

और अचला चुप।

कृष्णा ने उसे झकझोर दिया था, 'तुझे हुआ क्या है !···मेरी समझ में नहीं आता तू इतनी ड्राई कैसे हो गई है?'

अचला फिर भी चुप ही रही थी। कृष्णा उसे ज़ोर-ज़ोर से हिलाने लगी, 'बोल ना ! क्या बात है? क्या हुआ तुझे?···बोल !'

और अचला उत्तर न देकर ज़ोर-ज़ोर से रो पड़ी। उसने मुंह ढांपते हुए कहा था, 'सरमा को अस्पताल ले जाया गया है !···शी···इज़ सीरियस !'

'क्या?' कृष्णा के मुंह से इतना ही निकला। जल्दी से चप्पल पहनी थी उसने, 'आ, मेरे साथ !'

···और वे अस्पताल की ओर चल पड़ी थीं ! पर अस्पताल पर पहुंचना, न पहुंचना बराबर हो गया। मालूम हुआ कि सरमा ने एम्बुलेंस में ही प्राण छोड़ दिए !

अचला उसकी लाश पर बिलख-बिलखकर सिर पटकती रही थी। बड़बड़ाती हुई, 'मुझे क्षमा कर देना, मेरी बहिन !···मैंने तेरे साथ बहुत अन्याय किया !···पर मैं निरपराध थी ! मुझे पता नहीं था कि···' हिलकियों में उसके शब्द दब गए थे···

कृष्णा और मामी हतप्रभ होकर एक-दूसरे को देखती रहीं। समझ नहीं आ रहा था कि क्या बात है।

और किसीकी समझ में कुछ नहीं आया था। आया था सिर्फ रमेश की समझ में !

तभी सबका ध्यान एक ओर बैठे आलोक पर गया था—वह चुप था। उसकी आंखें विस्मय और अविश्वास से सरमा की लाश पर टिकी हुई थीं। उसकी पलकों के भीतर किसी तरह की चमक नहीं थी। लगता था जैसे एक रेगिस्तान उसकी आंखों में फैल गया है···

सरमा की लाश ले जाए जाते समय भी वह रोया नहीं था। उसी तरह रेगिस्तान में भटकता-सा रहा। सरमा का शरीर लपटों ने निगल लिया था···आलोक देखता रहा था···सरमा की विलीन होती काया···सरमा जिसने सब कुछ सहा, पर शिकायत नहीं की।

सब चले गए थे। पर आलोक नहीं गया। राख बुझ चुकी थी, पर

आलोक नहीं गया···यह दशा कितने ही दिनों तक चलती रही थी ; अनुराग उसे रमेश के सिपुर्द करके घर चला गया था···अचला भी ;

नौ

डाक्टर घोष का चेहरा दुःख से उदास हो गया था और यह उदासी रात के खातमे के साथ ज्यादा ही बढ़ती जा रही थी···

रात लगभग दम तोड़ चुकी थी। डाक्टर घोष ने चेहरा घुमाया। खिड़की से बाहर श्मशान में वह झुका हुआ आदमी अब भी वैसे ही बैठा था। मोमबत्ती शायद बुझ चुकी होगी। पर वह बैठा हुआ था। भोर उसे नहला रही थी। उसके सफेद बाल इस भोर में चमक रहे थे और श्मशानी सन्नाटे में उसका इस तरह बैठा रहना अजीब-सा लगता था···

मेजर उठ खड़ा हुआ, "थैंक यू, डाक्टर! मैं चलता हूं। आपका शुक्रिया।"

डाक्टर ने उसे रोका—भर्राए हुए कण्ठ से वह बोले, "ओह! आप रमेश ही हैं···"

सहसा डाक्टर की आंखों से आंसू बह चले—उसी तरह एक गहरी उदासी से टूटे हुए शब्द उसके मुंह से निकले, "मेजर! वह अभागा अनुराग मैं ही हूं···सरमा की मृत्यु के बाद ही मुझे डाक्टरी मिशन के साथ वियतनाम जाना पड़ा···आप देख रहे हैं···मेरी एक आंख वहीं युद्ध-मैदान में जाती रही—नाक भी प्लास्टिक सर्जरी से ठीक हुई है···"

"ओह! अनुराग!" मेजर ने एक ठण्डी सांस ली, "इसीलिए मैं तुम्हें पहचान नहीं सका—सरमा की कहानी मेरे जीवन की भी करुणकथा है—आलोक के जीवन की ही नहीं···कहने से दुःख जरा हलका होता है—और मैंने देखा तुम सहानुभूति से मेरी बात सुन रहे हो···इसीलिए···"

"नहीं रमेश! तुम्हारा दुःख मेरा है—मैं ही तो सारे जीवन पश्चात्ताप की आग में जलता रहा हूं···आलोक की यह स्थिति क्या

मेरे कारण ही नहीं हुई—और मैं भी कैसा अभागा हूं कि मैं इन तमाम वर्षों में उसकी कोई खबर न तो ले सका, न अपनी दे सका··· और जानते हो मेजर···वियतनाम की युद्ध-विभीषिका में ये लम्बे वर्ष मैंने अकेले ही काटे हैं···अचला···अचला भी सरमा के कुछ दिनों बाद ही संसार छोड़ गई थी···" इतना कहते-कहते अनुराग का गला अवरुद्ध हो गया और उसके आंसू तेजी से बह चले ।

मेजर ने नजदीक आकर उसे गले से लगाकर सांत्वना दी । सहमे हुए स्वर में वह कह रहा था, "अनुराग ! मैं सारे उपाय कर बैठा, पर आलोक को एक मुसकान भी नहीं दे सका । अब मैं अगले सप्ताह ही उसे स्विट्ज़रलैण्ड ले जा रहा हूं—उसके उपचार की मैं पूरी व्यवस्था कर चुका हूं ।···**सच अनुराग** ! आलोक एक हीरा है और मैं उसे यों न मिटने दूंगा···"

इससे पूर्व कि अनुराग कुछ और कह पाता, रमेश कमरे से बाहर निकल गया । तभी डाक्टर ने सुना एक प्रश्न—"तुम कब के जाग चुके हो ?"

डाक्टर ने चौंककर देखा, मिसेज़ घोष खड़ी थीं । उत्तर नहीं दे सका । उनकी ओर निरंतर देखता रहा । उसने अपनी खिचड़ी दाढ़ी के बाल सहलाए ।

"क्या सोच रहे हो ?" मिसेज़ घोष पूछ रही थीं ।

"कुछ नहीं, अचला !···" डाक्टर बोलते-बोलते रुक गया ।

"अचला ?" मिसेज़ घोष हंसीं, "पहली पत्नी को अब भी नहीं भूल सके हो तुम ?"

डाक्टर का चेहरा दुःख से भारी हो गया । बोला, "हां, उसकी मौत नहीं भूल सका हूं । नीला थोथा खाने के बाद उसे कितनी तकलीफ हुई होगी···"

"छोड़ो इन बातों को !" मिसेज़ घोष जैसे नाराज़ हुईं, "मैं कॉफी बनाती हूं । चलकर पियो ।" और फिर वह तेज़ी से रसोई की ओर चली गईं ।

OOO

मुद्रक : प्रिंट आर्ट, दिल्ली-११००३२

ये सारी सुविधाएं और लाभ 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' के सदस्यों के लिए हैं—

- हर महीने के पहले सप्ताह में सदस्यों को 9 रु० मूल्य की उनकी मनपसन्द पुस्तकें केवल 8 रु० की वी० पी० से भेजी जाती हैं। इस प्रकार प्रति मास 1 रु० का लाभ।
- हर पांचवें महीने दो रुपये मूल्य की उपहार पुस्तकें बिल्कुल मुफ्त। इस प्रकार वर्ष भर में छः रुपये मूल्य की पुस्तकों का उपहार।
- प्रति मास पैकिंग तथा डाक-खर्च 2 रु० 25 पैसे आता है। यह खर्च हम करेंगे। इस प्रकार एक वर्ष में 27 रुपये डाक-खर्च की आपको बचत होगी।
- पहले महीने पुस्तकों की रक्षा के लिए प्लास्टिक का बना 1 रु० मूल्य का पारदर्शक कवर बिना मूल्य।
- नई पुस्तकों की सूचना हर महीने के प्रथम सप्ताह में ही प्रत्येक सदस्य को नियमित रूप से दे दी जाती है।

अब आप स्वयं देखिए कि 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' आपके लिए कितनी लाभप्रद है।

यह उचित ही है कि जनसाधारण को सुन्दर और कम मूल्य की पुस्तकों के द्वारा साहित्यकारों और विद्वानों के विचारों की जानकारी मिले। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि आपकी संस्था दस वर्षों से यह उपयोगी काम करती रही है।

—इन्दिरा गांधी

सदस्य कैसे बनें ?

इस पुस्तक के अंत में लगे कार्ड पर अपना नाम, पूरा पता और अपनी पसन्द की 9 रुपये मूल्य की पुस्तकों के नाम लिखकर हमें भेज दें। पुस्तकों का चुनाव अगले पृष्ठों पर दी हुई सूची में से कीजिए। यह कार्ड हमारे यहां पहुंचते ही आप 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' के सदस्य बन जाएंगे। और हम आपको तुरन्त पहले पैकेट में 9 रुपये मूल्य की पुस्तकें, 1 रुपया मूल्य प्लास्टिक का पारदर्शक पुस्तक-रक्षक कवर, बड़ी पुस्तक-सूची सदस्यता-प्रमाण-पत्र आदि सभी कुछ 8 रुपये में भेज देंगे। केवल पहली वी० पी० में सदस्यता-शुल्क के 2 रुपये जोड़े जाएंगे (ये 2 रुपये आपकी अमानत के रूप में हमारे पास जमा रहेंगे)। इस प्रकार पहला पैकेट आपको 10 रुपये देकर छुड़ाना होगा। उसके बाद, हर मास 9 रुपये की पुस्तकें केवल 8 रुपये की वी० पी० से भेजी जाएंगी।

केवल इस बार निम्नलिखित पुस्तकों में से अपनी पसन्द की 9 रुपये मूल्य की पुस्तकें चुनिए। नीचे आपके प्रिय लेखकों की पुस्तकें विषयवार दी गई हैं। प्रत्येक लेखक के न के नीचे उनकी लिखी प्राप्य पुस्तकों के नाम दि गए हैं ता आपको चुनाव में सुविधा रहे।

उपन्यास-कहानी

गुरुदत्त

[प्रत्येक का मूल्य : 4·00]
दासता के नये रूप, गिरते महल, धूप-छांव, वाममार्ग।

[प्रत्येक का मूल्य : 3·00]
जग एक सपना, तब और अब, परिमल, प्रवंचना, मृगतृष्णा, विक्रमादित्य, तबेला, मधु।

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]
मैं न मानूं, ममता, वनवासी, भूल।

मुंशी प्रेमचन्द

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]
प्रेमचन्द की श्रेष्ठ कहानियां, निर्मला।

आचार्य चतुरसेन

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

यादें, मोती, निमन्त्रण, पत्थर युग के दो बुत, दादा, हृदय की परख, हृदय की प्यास, ईदो, नीलमणि, आभा।

वृन्दावनलाल वर्मा

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

झांसी की रानी, संकल्प, संगम।

फणीश्वरनाथ रेणु

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

मैला आंचल, तीसरी कसम।

मन्मथनाथ गुप्त

शरीफ़ों का कटरा 2·00

उपेन्द्रनाथ अश्क

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

प्रीत न जाने रीत, अनाड़ी, सोने का पिंजरा।

यशपाल

दादा कामरेड 2·00

अमृतलाल नागर

शतरंज के मोहरे 3·00

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

सुखदा **जैनेन्द्रकुमार**

मुक्ति-पथ **इलाचन्द्र जोशी**

भंवर **भैरवप्रसाद गुप्त**

न आने वाला कल **मोहन राकेश**

रांगेय राघव

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

आखिरी आवाज़, बन्दूक और बीन, घरौंदा, राई और पर्वत।

सं० महेन्द्र कुलश्रेष्ठ

हिन्दी की श्रेष्ठ नई कहानियां 1·00

शिवानी

[प्रत्येक का मूल्य : 3·00]

मायापुरी, विषकन्या, चौदह फेरे, श्मशान चम्पा।

शेखर

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

लांछन, कुंवारी सुहागिन, बदचलन, एक घटा प्यासी, जन्म-कैद के बाद, बिन बरसा बादल, आंधियां, वायदा, नीलम, कसम।

सुदर्शन चोपड़ा

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

आत्महत्या, संगीन जुर्म रंगीन मुजरिम, सुन्दरी और सिंहासन।

शम्सुद्दीन

बेगमों के रोमांस 2·00

अमृता प्रीतम

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

जेबकतरे, एक लड़की एक शाप, पिंजर, नीना, डाक्टर देव, नागमणि, जलावतन, हीरे की कनी, पांच बरस लम्बी सड़क, धरती, सागर और सीपियां, दिल्ली की गलियां।

कृश्न चन्दर

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

जब खेत जागे, तूफान की कलियां,

बोरबन क्लब, कार्निवाल, प्यार एक खुशबू है, गंगा बहे न रात, पहलगाम का बदनाम, दादर पुल के बच्चे, दूसरा पुरुष दूसरी नारी, पराजय, कागज़ की नाव, एक वायलिन समन्दर के किनारे, सितारों से आगे, आंख की चोरी, गूंगे देवता ।

[प्रत्येक का मूल्य:2·00]
दो बूंद पानी
ख्वाजा अहमद अब्बास

रात अंधेरी है **महेन्द्रनाथ**
कोशिश **गुलज़ार**

ए० हमीद

[प्रत्येक का मूल्य:2·00]
डाक बंगला, पतझड़ के बाद, तूफान की रात, प्यार और पूजा, गुमराह, मैं फिर आऊंगी, फूल उदास हैं ।

भवानी भट्टाचार्य

लद्दाख की छाया 3·00

नानक सिंह

संघर्ष 2·00

राजेन्द्रसिंह बेदी

दस्तक 2·00

गुलशन नन्दा

[प्रत्येक का मूल्य:3·00]
कटी पतंग, झील के उस पार, मैली चांदनी 2·00

दत्त भारती

[प्रत्येक का मूल्य : 3·00]
कोई शिकायत नहीं, कलंक, श्रो मेरे अपने ।

[प्रत्येक का मूल्य:2·00]
बासठ दिन, सपने टूट गए, सज़ा ।

हृषीकेश मुकर्जी

आशीर्वाद 2·00

आदिल रशीद

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]
दीप और दिल, चांदी की दीवार, प्रायश्चित्त ।

बलवंतसिंह

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]
काले कोस, सपने सुहाने, सूना आसमान ।

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]
आनन्द मठ, पाप की छाया, चन्द्रशेखर, दुर्गेशनन्दिनी ।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

दो बहनें 2·00

शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय

[प्रत्येक का मूल्य:2·00]
शरत् की श्रेष्ठ कहानियां, चरित्रहीन ।

ताराशंकर बन्द्योपाध्याय

[प्रत्येक का मूल्य:3·00]

दुनिया एक बाज़ार, गुलबदन मन का मीत।

जीवनोपयोगी

मानस हंस

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

अमर वाणी, महापुरुषों की सूक्तियां, अनमोल मोती।

जेम्स ऐलन

[प्रत्येक का मूल्य:2·00]

सफलता के सोपान, सफलता के ८ साधन।

स्वेट मार्डेन

[प्रत्येक का मूल्य:2·00]

प्रभावशाली व्यक्तित्व, सफल कैसे हों, निराशा से बचिए।

आचार्य विष्णु शर्मा

पंचतंत्र (बड़ा संस्करण) 2·00

जीवनी-संस्मरण

जवाहरलाल नेहरू

[प्रत्येक का मूल्य : 3·00]

मेरी कहानी, हिन्दुस्तान की कहानी।

मन्मथनाथ गुप्त

चन्द्रशेखर आज़ाद 2·00

जासूसी : रोमांचकारी

कर्नल रंजीत

[प्रत्येक का मूल्य:2·00]

दुल्हन की चीख़, मेजर बलवंत बंगला देश में, मौत की भून, सात पर्दे, हत्या का रहस्य, टेढ़ी उंगलियां, नीले निशान, पीले बिच्छू, रहस्यमयी रमणी, भयंकर मूर्ति, खून के छींटे, अंधेरा बंगला, खूनी कंगन, शैतान की आंखें, उड़ती मौत, मौत का जाल, छः लाशें, हत्यारे का हत्यारा, अनोखी रात, वीरान बस्ती, अंधा हत्यारा, संसार के प्रसिद्ध जासूस और उनके कारनामे, सांप की बेटी, ज़िन्दा लाशें, चिड़िया का गुलाम, भयानक बौने, तीसरा खून, वह कौन था, मौत के व्यापारी, विचित्र हत्यारा, भयानक बदला, ज़हरीले तीर, ज़हर के घूंट, षड्यंत्र

चन्दर

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

तरंगों के प्रेत, मौत की घाटी में, चीनी सुन्दरी।

रमेश वर्मा

दूसरे विश्वयुद्ध के प्रसिद्ध जासूस 2·00

दीवान जरमनी दास

महारानी 3·00

हरिमोहन शर्मा

राजनैतिक हत्याएं 2·00

प्रकाश पंडित

प्रेम और हत्या के रहस्यमय मुकदमे 2·00

रामकुमार भ्रमर

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

चम्बल के हत्यारे, तीसरा पत्थर, कांचघर।

सेक्स-स्वास्थ्य

डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

संयम और सेक्स, बर्थ-कंट्रोल, पति-पत्नी, विवाह के बाद, सेक्स और यौवन, योगासन और स्वास्थ्य, भावनाओं के चमत्कार, स्त्री-पुरुष, सरल प्राकृतिक चिकित्सा, सेक्स की समस्याएं, यौवन और स्वास्थ्य।

ज्ञान-विज्ञान

प्रकाश दीक्षित

[प्रत्येक का मूल्य : 2·50]

भाग्य-रेखाएं, हस्त-रेखाएं।

काव्य-शायरी

बच्चन

मधुशाला 2·00

बच्चन के लोकप्रिय गीत 1·00

नीरज

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

फिर दीप जलेगा, तुम्हारे लिए।

सं० क्षेमचन्द्र सुमन

हिन्दी कवयित्रियों के प्रेमगीत 1·00

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

गीतांजलि 2·00

फिराक गोरखपुरी

फूल और अंगारे 1·00

सं० प्रकाश पंडित

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

सोज़ - ओ - साज़, मयखाना, दीवान-ए-ग़ालिब।

नागार्जुन

विद्यापति के गीत 2·00

सं० गुलज़ार

मीनाकुमारी की शायरी 2·00

हास्य-व्यंग्य

काका हाथरसी

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

हँसगुल्ले, काका के धड़ाके, काका के प्रहसन, काका की कचहरी, काका के कारतूस, काका की फुलझड़ियाँ।

जी० पी० श्रीवास्तव

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

दिल जले की आह, श्रीमान गप्पीलाल।

ससुराल **शौकत थानवी** 2·00

कन्हैयालाल कपूर

कामरेड शेखचिल्ली 2·00

फिक्र तौंसवी

[प्रत्येक का मूल्य : 2·00]

माडर्न अलादीन, डार्लिंग।

●

संलग्न कार्ड भर कर आज ही भेज दीजिए। इस कार्ड पर डाक टिकट लगाने की आवश्यकता नहीं

शिकायत

शेखर

अनुराग नहीं चाहता था कि वैसा हो, पर क्या वही हो पाता है जो आदमी चाहे? जीवन तो यही है कि वह सब हो जो आदमी चाहता नहीं, पसन्द नहीं करता, पर करता है।...और अचला थी कोमल भावनाओं की नारी—अविश्वास के विष से बुझी, जो सोचती थी कि केंचुली बदलने से सांप नहीं बदलता।...सांप जिसने सरमा को डस लिया और फिर अचला के गले से लिपट गया।

विश्वास और अविश्वास की तहों में लिपटी 'शिकायत' की कहानी दो युवतियों की रोमांटिक ज़िन्दगी की एक अविस्मरणीय कथा है। सर्वथा रोचक और मार्मिक। लोकप्रिय उपन्यासकार शेखर की एक और सशक्त प्रणय-कहानी।

भारत की सर्वप्रथम पॉकेट बुक्स

हिन्द पॉकेट बुक्स

H-09

शिकायत शेखर

2/